Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाराणा कुम्भा

राजेश शर्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ

धर्मीबाल हकीकतराय पुस्तकालय

GH 14/333, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110087

पुस्तक क्रमांक :

कृपया यह पुस्तक निम्न तिथि तक वापस करें

विलम्ब शुल्क - 50 पैसे प्रतिदिन

पुस्तकालय
ग्रंथ सं०
तिथि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजस्थान के वीर सेनानी

राजेश शर्मा

महाराणा कुम्भा

आर्य बुक डिपो, करौल बाग़,
नई दिल्ली-५.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुस्तकालय
ग्रंथ सं०
तिथि

प्रकाशक :

सुखपाल गुप्त

आर्य बुक डिपो

30, नाईवाला, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005

ISBN—81-7063-025-8

दूरभाष : 5721221, 5720363

चतुर्थ संस्करण : 1993

सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

मूल्य : रु० 15.00

मुद्रक : जी. प्रिन्ट प्रोसेस, 308/2, शहजादा बाग, दया बस्ती, दिल्ली

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किशोरों से

पुराना राजपूताना, आज का राजस्थान अपने-आप में वीरता, शौर्य, त्याग, वलिदान और राष्ट्रप्रेम की एक अमर गाथा है। वहाँ के जंगल, वहाँ के रेतीले मैदान, वहाँ के खण्डहर, ऊँचा मस्तक उठाए खड़े वीरता के प्रतीक-स्तम्भ और अनेकों सुदृढ़ किले—इस वात की गवाही दे रहे हैं कि मातृभूमि की रक्षा के पावन कर्त्तव्य का पालन करने की कितनी अदम्य प्रेरणा वहाँ के निवासियों के मन में विद्यमान थी। वहाँ की धरती के कण-कण में बिखरा हुआ वैभव और वीरता-भरा अतीत आज भी मानो कह रहा है—यदि देश-रक्षा के लिए मर-मिटने का भाव सीखना हो तो हमसे सीखो। हमसे पूछो कि मातृभूमि की सुरक्षा का, स्वतन्त्रता का क्या महत्व होता है! हमसे पूछो कि एक हाथ में तेज धार वाली तलवार लेकर युद्ध का भैरव राग कैसे गाया जाता है, और दूसरे हाथ में मेहराब लेकर वीणा के तारों पर जीवन-संगीत का स्वर-सन्धान कैसे किया जाता है! जीवन-वीणा के तारों पर विरोधी स्वरों का एक साथ सन्धान करने वाला देश कितना विचित्र है और प्रेरणादायक भी!

राजस्थान का एक राज्य—मेवाड़! मेवाड़, जिसका नाम सुनकर आज भी स्वतन्त्रता और मातृभूमि के प्रेमियों का मस्तक झुक जाता है। मेवाड़ राज्य, जिसकी स्थापना एक निर्वासित राजकुमार वाप्पा रावल ने की, जिसकी आन और स्वाधीनता को महाराणा हम्मीर, कुम्भा, साँगा और बलिदानी वीर प्रताप ने अपने रक्त से सींचा, सजाया और सँवारा! उसने कभी भी विदेशी आक्रमण-कारियों को अपनी पवित्र भूमि पर कदम नहीं टिकाने दिए। वह सदा अजेय रहा, अमर रहा, अमिट रहा। उसे पराधीन बनाने की कल्पनाएँ अकबर जैसा समर्थ शासक भी पूरी न कर सका, वह मेवाड़! वास्तव में भारतभूमि का गौरव है वह मेवाड़! धन्य मेवाड़!!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'राजस्थान के वीर सेनानी' शृंखला के अन्तर्गत इस बाल किशोर उपन्यास में इसी मेवाड़ राज्य के महाराणा कुम्भा की अमर गाथा चित्रित की गई है। महाराणा कुम्भा ! उनके एक हाथ से तलवार द्वारा युद्ध का अमर संगीत गूंजा करता था, दूसरे हाथ से विभिन्न कलाओं की अमर, मधुर और संगीत भरी रागिनियाँ मुखरित हुआ करती थीं। महाराणा कुम्भा एक अमर सेनानी तो थे ही, एक अच्छे वीणा-वादक, संगीतज्ञ, कवि और नाटककार भी थे। उन्हें काव्य-शास्त्र का भी अच्छा ज्ञान था। इन सब पर उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की थी। मृत्यु और जीवन का अमर संगीत उन्होंने एक साथ गाया था। वे वास्तुकला (भवन निर्माण कला) के भी एक कुशल जानकार थे। राष्ट्र-रक्षा के उपायों से भी अपने समय की परिस्थितियों के अनुसार भली प्रकार परिचित थे। मेवाड़ राज्य में आज जितने भी बड़े-बड़े किले दिखाई देते हैं, उनमें से अधिकांश का निर्माण महाराणा कुम्भा ने ही कराया था। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही इस छोटे-से किशोर उपन्यास की रचना की गई है। यहाँ पाठकों को युद्ध के नगाड़े भी सुनाई देंगे और वीणा की मधुर रागिनी भी। जीवन का प्रेरणादायक नाटक भी मिलेगा और कला तथा शास्त्र की सर्जना भी। अतः हमें विश्वास है कि यह उपन्यास किशोर पाठकों के लिए अनेक प्रकार से मनोरंजक, शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

रचना में हमने राणा कुम्भा के भावों के अनुरूप कई गीत भी दिये हैं, नाटक की योजना भी और वीणा की झंकार भी। यथास्थान घटना और कहानी के अनुरूप चित्र भी दिये गये हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि इसे पढ़ने पर बाल-किशोर पाठकों के मन में जहाँ राष्ट्र-प्रेम का भाव जागेगा, वहाँ उन्हें राष्ट्र-निर्माण की प्रेरणा भी मिलेगी। उनका मनोरंजन तो निश्चयपूर्वक होगा ही। वे अपनी प्रतिक्रिया से हमें सूचित भी करेंगे।

—लेखक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक

"फिर ?"

नन्हे बालक कुम्भ (कुम्भाजी) ने अपने चाचा चण्डजी से प्रश्न किया—"हमारे दादा श्रीलाखाजी ने बूंदी का नकली किला बनाकर उस पर आक्रमण करना चाहा, ताकि उनके प्रण की रक्षा हो सके। उसके बाद, काकाजी ?"

"उसके बाद !" चाचा चण्ड ने कहना शुरू किया—"जब राणा ने उस नकली किले पर आक्रमण किया, तो यह देखकर हैरान रह गये, कि किला तो नकली था, पर उसकी रक्षा करने वाले असली थे। वीरसिंह नामक राजपूत अपने साथियों को लेकर उस नकली किले की सच्ची रक्षा कर रहा था। राणा लाखा हैरान रह गये। उस वीर पुरुष वीरसिंह के साहस के सामने उसका मस्तक झुक गया। उन्होंने अपने साथियों को शस्त्र फेंक देने की आज्ञा दी। आगे बढ़कर वीरसिंह को गले लगा लिया। इस प्रकार दो राज्यों में हमेशा के लिए मित्रता हो गई। साहस वीरता और गुण-ग्राहकता ने सारे झगड़े सदा के लिए समाप्त कर दिये।"

"अच्छा !" हैरान होते हुए बालक कुम्भ ने फिर कहा—"पर दादाजी ने बूंदी को जीता तो नहीं, फिर उनके व्रत का क्या हुआ ?"

"शस्त्र की जीत ही सब कुछ नहीं होती, बेटे !" चण्डजी ने समझाते हुए कहा—"हमारे पिता राणा लाखा वीर थे। उधर बूंदी के राजपूत भी वीर। एक वीर ही दूसरे वीर के साहस और कार्य की परख कर सकता है। फिर क्षमा, दया, मित्रता आदि गुण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भी सच्चे वीरों में ही हुआ करते हैं। हमारे पिताश्री और तुम्हारे दादा राणा लाखाजी ने वीरता का मान करने के लिए अपना व्रत तोड़ दिया। तभी बूंदी के राजपूत आज भी हमें अपना बड़ा भाई मानते हैं।"

"ठीक है, काकाजी !" बालक कुम्भ ने गर्व से कहा—"मैं भी ऐसा ही वीर बनूंगा— हाँ !"

"क्यों नहीं, बेटे !" चण्डजी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा।

चाचा-भतीजा दोनों चित्तौड़गढ़ के शाही बगीचे में सुबह की सैर कर रहे थे। बालक कुम्भ प्रतिदिन उनके साथ आता, उनसे वीरता-भरी कहानियाँ सुनता, अनेक प्रकार के प्रश्न करता।

एक खिले हुए फूल को तोड़ते हुए बालक कुम्भ ने एकाएक रुक-कर चाचा चण्ड की तरफ देखा, फिर कुछ सोचते हुए बोला :

"पर, पर काकाजी, एक बात समझ में नहीं आई।" कुछ गंभीर होते हुए कुम्भ फिर बोला—"आपने बताया न, वह बूंदी का किला तो नकली था। यह समझ नहीं आया कि उस नकली किले को बचाने के लिए बूंदी राज्य का राजपूत सरदार वीरसिंह सचमुच मरने-मारने के लिए तैयार क्यों हो गया ? अरे नकली किला ही तो था, टूट जाने देता उसे ! क्या बिगड़ जाता उसका ?"

"हूँ-ऊँ !" मुस्कराते हुए, अपनी 'हूँ' को कुछ लम्बी कर चण्डजी ने उत्तर दिया—"बेटे ! किला तो नकली ही था, पर उसे जीतने की भावना असली थी। कोई भी सच्चा देशभक्त और वीर असली या नकली, किसी भी रूप में अपनी मातृभूमि का अपमान नहीं सह सकता। सवाल मान-अपमान का था, बेटे ! असली या नकली का नहीं। अब तो समझ गये न !"

"बिल्कुल समझ गया, काकाजी, बिल्कुल !" जैसे किसी विशेष भाव में डूबते हुए बालक कुम्भ ने कहा—"बूंदी के राजपूत, मातृ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक खिले फूल को तोड़ते हुए बालक कुम्भ ने एकाएक रुककर
चाचा चण्ड की तरफ देखा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्त सरदार वीरसिंह की वीरता मुझे वीर रस से भरी कविता के समान प्रिय लगती है। उस दिन मुझे शिक्षा-गुरु ने इसी प्रकार का एक वीर काव्य (कविता) पढ़ाया था।"

"अच्छा!" वापिस मुड़ते हुए चण्डजी ने कहा।

"मैं जब वीर और भक्ति-काव्य पढ़ता हूँ न काकाजी, तो पता नहीं मुझे क्या होने लगता है! मन पर बस नहीं रह जाता। जी चाहता है, बस पढ़ता ही जाऊँ!"

"यह बात है!" चण्डजी मुस्कराकर बोले।

"उस दिन गुरुजी कवि जयदेव का 'गीत-गोबिन्द पढ़ा रहे थे। उसकी पदावली बड़ी सरस है, है न काकाजी?" कुम्भ ने काका चण्ड का अंचल पकड़कर, उन्हें ठहराते हुए फिर कहा—शृंगार रस के भक्ति-भाव का उसमें कितना अच्छा विकास हुआ है! जी चाहता है, बस उसे पढ़ता ही जाऊं।"

"इतना अच्छा लगता है, तुझे?"

"बहुत अच्छा, काकाजी!" कुम्भ ने कहा—"मुझे तो दो ही चीज़ें अच्छी लगती हैं। एक तो तलवार चलाने का अभ्यास करना, दूसरे कविता पढ़ना! ये दो चीज़ें और ये ही दो काम मुझे मिल जायें, तो और कुछ भी नहीं चाहिए।"

"ये दो चीज़ें तुम्हें अवश्य प्राप्त होंगी, बेटे!" चण्डजी ने प्रसन्नता से कहा—"तलवार तो राजपूतों का खिलौना है ही, लगता है, तुझ पर सरस्वती की कृपा भी अवश्य होगी। ओह! बेटे कुम्भ! मेरा वंश, मेवाड़ का यह राज्य, सारी राजपूत जाति और देश तेरे एक हाथ में तलवार और दूसरे में कलम देखकर गर्व से फूला न समायेगा!"

बालक कुम्भ उत्सुकता से अपने चाचा की ओर देखता रहा।

"भैया!"

तभी पास से सुनाई दिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवाज़ को पहचानकर कुँवर चण्डजी ने मुड़कर देखा, सामने से मेवाड़ के राणा मुकुलजी उन्हीं की तरफ चले आ रहे थे। उन्हीं ने चण्डजी को भैया कह कर पुकारा था। जब वे पास आ गये, तो कुँवर चण्डजी ने आगे बढ़कर तनिक झुकते हुए कहा :

"मैं राणा भैया का अभिवादन करता हूँ।"

"पिताश्री, प्रणाम !" बालक कुम्भ ने भी आगे बढ़कर अपने पिता राणा मुकुलजी को प्रणाम किया।

"भैया !" कुछ व्याकुल स्वरों में राणा मुकुलजी ने कहा—"मैंने तो आप पर कभी अविश्वास नहीं किया, फिर क्यों आप मुझे राणा-राणा कहकर अपने स्नेह से वंचित करने का प्रयत्न करते रहते हैं ?"

"राणा भैया !" चण्डजी ने आगे बढ़कर मुकुलजी को गले से लगाते हुए कहा—"यह बात नहीं, भैया ! पर पद और मर्यादा का तो ध्यान रखना ही पड़ता है न !"

"पद और मर्यादा दूसरों के सामने हो सकती है, राज-दरबार में हो सकती है, घर की चारदीवारी तथा इस प्रकार के स्वतन्त्र वातावरण में पद और मर्यादा कैसी भैया !"

चण्डजी कुछ कह न सके। उनकी आँखें स्नेह के आँसुओं से गीली हो गईं।

"मैं जानता हूँ कि हमारा जन्म एक ही माँ के गर्भ से नहीं हुआ। यह भी जानता हूँ कि आपके तप-त्याग का महत्त्व न समझ मेरो माँ ने आपको राज्य से, फिर राज्य से ही नहीं समूचे देश से निर्वासित करवा दिया था। पर मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि मेरा राणापन अपने वीर और त्यागी बड़े भाई चण्ड के कारण ही है। नहीं भैया, अगर मुझे भाई नहीं समझ सकते, तो अपने हाथों से दिया मेवाड़ का यह राणापन आज ही वापस ले लो, पर आपके स्नेह से वंचित होकर मैं जीने की कल्पना तक नहीं कर सकता।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ओह मुकुल···मुकुल मेरे भाई !" राणा मुकुल को अपने हृदय से भींचते हुए चण्डजी ने कहा—"मैंने कभी भी तुमको पराया नहीं समझा। भाई तो बस भाई ही होता है। मुझे अगर राज्य ही लेना होता, तो उसी दिन ले लेता। मैंने हमेशा अपने को तुम्हीं में देखा है, मुकुल···मुकुल मेरे भाई !"

"भैया ! भैया ! आज मेरा जीवन सफल हो गया।" राणा मुकुल ने कहा। अलग होते हुए वह फिर बोले—"अन्तिम क्षण तक पिताश्री यही कहते रहे, कि मैंने चण्ड का अधिकार छीनकर अच्छा नहीं किया। उन्हें आप पर बड़ा गर्व था। वे कहा करते थे, मेरा चण्ड बेटा मुझसे रूठकर चला गया है। पर अपनी मातृभूमि से कभी नहीं रूठ सकता। मातृभूमि जब भी उसे पुकारेगी, वह स्वयमेय भागा चला आयेगा। सचमुच, पिताश्री का विचार कितना सत्य था: आपने आकर मेवाड़ को अपने ही घर के शत्रुओं के हाथों जाने से बचा लिया।"

"वह मेरा कर्त्तव्य था, मुकुल !" कुँवर चण्डजी ने कहा—"मातृभूमि की पुकार सुनकर कोई भी सच्चा व्यक्ति भला पीछे कैसे रह सकता है ?" कुछ क्षण रुककर चण्डजी ने फिर कहा—"पर मैं कितना अभागा हूँ, मुकुल भैया ! मातृभूमि का विश्वास तो मैंने पा लिया, पर अपनी जीती-जागती माँ श्री का विश्वास नहीं पा सका।"

"यह देश और माँ के सपूत का दोष नहीं, उस जीती-जागती होने पर भी आँखें बन्द करके चलने वाली माँ का ही दोष है !" सहसा कहते हुए राजमाता विमलकुमारी ने प्रवेश किया—"अपने कार्यों से वास्तव में सौतेली माता की दुष्टता प्रमाणित कर देने वाली माँ आज सचमुच लज्जित है, चण्ड बेटे !"

"माँ ! माँ ! मेरी माँ !" और कुँवर चण्डजी अपनी सौतेली माँ, रानी विमलकुमारी के चरणों में लोट-पोट होने लगे।

"मैं लोगों के बहकावे में आ गई थी, चण्ड बेटे।" आँखों में आँसू

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भरकर, कुंवर चण्डजी को उठाकर गले से लगाते हुए राजमाता ने फिर कहा—"कान भरने वालों की झूठी बातों में आने वाला व्यक्ति चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसे लज्जित होना ही पड़ता है। अपनी सौतेली माँ के उस अपराध को क्षमा कर सकोगे, चण्ड बेटे !"

"ओह, माँ ! माँ तो माँ ही होती है, उसमें सौतेलापन कैसा ! आज का यह दिन मेरे लिए कितना शुभ है ! मैंने मातृभूमि और माता श्री का स्नेह तथा विश्वास आज ही पा लिया ! माँ और मातृभूमि मेरे लिए हमेशा स्वर्ग से भी बढ़कर रहेंगी।"

बालक कुम्भ आश्चर्य से यह सब देख रहा था। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उसने अपने पिता राणा मुकुलजी का आँचल थामते हुए भोले भाव से पूछा :

"आप लोग रो क्यों रहे हैं, पिताश्री ?"

"रो नहीं रहे, बेटे !" राणा मुकुलजी ने कहा—"ये तो खुशी के आँसू हैं। तुम्हारे काका चण्डजी हम सबसे रूठकर चले गये थे न ! अब वे लौट आये हैं। उसी खुशी में ये आँसू आ गये हैं।"

"आपने ठीक कहा है पिताश्री !" बालक कुम्भ ने जैसे कुछ समझते हुए कहा—"उस दिन शिक्षा-गुरु 'रस' का अर्थ समझा रहे थे। उन्होंने 'गीत-गोविन्द' का एक उदाहरण दिया था। उस पदावली का अर्थ समझाते हुए उनकी आँखों में भी आँसू आ गये थे। मेरे कारण पूछने पर उन्होंने बताया था—आँसू या तो अधिक दुःख में आते हैं, या फिर अधिक सुख और खुशी में।"

"ओह ! तो यहाँ तक पढ़ लिया है मेरे बेटे ने !" राजमाता विमलकुमारी ने कहा—"बड़ा होशियार हो गया है, तू तो !"

"और नहीं तो क्या, दादी माँ, !" बालक कुम्भ ने कहा। वह फिर बोला—"इतने दिन हो गये हैं काकाजी को आये हुए, मुझसे तो यह एक बार भी नहीं रूठे। मुझे तो यह पहले दिन ही बड़े अच्छे लगे ! मैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तो कहता हूँ, कि काका चण्डजी किसी से कभी रूठ ही नहीं सकते। नहीं तो दिखायें मुझसे रूठकर—हाँ !"

"पगला !"

राजमाता ने कहा और फिर सभी हँस दिये।

"भला अपने बेटे से भी कभी रूठा जाता है !" कुँवर चण्डजी ने एक हल्की-सी चपत कुम्भ के मुँह पर लगाते हुए कहा।

तारे मद्धिम पड़कर अस्त हो गये थे।

उषा की लाली ने सारे आकाश को लाल कर दिया था। पेड़ों की डालियों पर पक्षी चहचहाने लगे थे। वे चारों कुछ देर तक प्रातःकाल के भ्रमण का आनन्द लेते रहे।

कुँवर चण्डजी और बालक कुम्भ का प्रतिदिन इसी प्रकार कार्य-क्रम चलता। आज भी जब वे लोग आये थे, तो उन्हें आशा नहीं थी, कि पीछे राणा मुकुल और राजमाता विमलकुमारी भी आ जायेंगी। पर अब सभी का मन खुश था; प्रातःकाल के उस सुहावने वातावरण के समान ही निर्मल था।

"स्नान और फिर पूजा का समय हो गया।" राणा मुकुल ने कहा—"तो अब चला जाए !"

"आप जाइये, पिताश्री !" बालक कुम्भ ने कहा—"दादी माँ, आप भी जाइये। मैं तो अभी काकाजो से बहुत सारी बातें सुनूँगा। सच्ची पूजा तो सच्चाई को समझने में है। क्यों, यही कहा था न आपने काकाजी ?"

सभी मुस्करा दिये।

राणा और राजमाता चले गये।

कुँवर चण्डजी और बालक कुम्भ एक तरफ बढ़ गये। चलते-चलते चण्डजी ने पूछा :

"तुम गीता भी पढ़ते हो न, बेटे !"

"क्यों नहीं, काकाजी !" बालक ने गीता का एक श्लोक ज़बानी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुनाते हुए फिर कहा—"काकाजी, मुझे तो बस गीता की एक ही बात बहुत अच्छी लगती है—वह यह कि कर्म करना ही मनुष्य का धर्म है। जिससे बहुतों का भला हो वही अच्छा कर्म है, बाकी सब पाप!"

"बिल्कुल, बेटे! इसे हमेशा याद रखना!"

और अपने वीर तथा योग्य काका चण्डजी की देख-रेख में बालक कुम्भकर्ण (कुम्भ या कुम्भाजी) पलने लगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दो

झन् ! झन् ! झन न न न न !

तम्बूरे के तार झनझना उठे। उसके साथ ही बालक कुम्भ का मधुर स्वर गूंजने लगा :

"सुन लो विनती हमारी—प्रभु जी !
ओ जगतों के पालनकर्त्ता, जगत-विनायक हरता-धरता,
बीच भँवर मोरी नाव फँसी है, पार लगाये खेवनहारी !
सुन लो विनती हमारी...प्रभु जी !
तेरी छाया जीवन का क्रम, तेरी माया जीवन-विभ्रम,
तू हँस दे तो फूल उठे, प्रभु ! मेरी जीवन-क्यारी !
सुन लो विनती हमारी—प्रभु जी !"

बालक कुम्भ मग्न होकर गाता जा रहा था। सामने बैठे उसके संगीत-शिक्षक मुग्ध भाव से देखते झूम रहे थे। उनके मुख से निकला—"वाह ! वाह ! बेटे कुम्भ !"

पर बालक अपनी धुन में मग्न होकर गाता रहा।

तभी राणा मुकुलजी और कुम्भ के काका चण्डजी भी वहाँ आकर एक तरफ खड़ हो गये। वे भी मग्न-भाव से गीत सुनते रहे।

"कहिये, गुरुदेव !" थोड़ी देर बाद कुम्भ ने गाना बन्द करते हुए पूछा—"कैसा रहा मेरा गीत ?"

"बहुत-बहुत अच्छे, बेटे !" कुँवर चण्डजी ने आगे बढ़ते हुए कहा—"मेरा बेटा तो गीत-संगीत का आचार्य हो गया है।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तभी राणा मुकुलजी और कुम्भ के काका चण्डजी भी वहां आकर एक तरफ खड़े हो गये। वे भी मग्न-भाव से गीत सुनते रहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ओह, काकाजी !" कुम्भ ने तम्बूरा एक तरफ रखकर उठते हुए कहा—"आप कब आये ?" फिर उसकी दृष्टि अपने पिता राणा मुकुल की तरफ गई—"ओह, पिताश्री भी हैं। आज तो मेरी संगीत-साधना धन्य हो गई।"

उठकर कुम्भ ने दोनों को प्रणाम किया।

"आचार्य, कैसी शिक्षा चल रही है, कुम्भ की ?" राणा ने संगीत-शिक्षक से पूछा।

"शिक्षा ?" आचार्य ने प्रसन्नता से कहा—"राजकुमार को शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं, राणा ! उसके भीतर तो कला और विद्या को देवी सरस्वती का साक्षात् निवास है। अभी-अभी आपने देख-सुन लिया है।" एक क्षण रुककर वह फिर बोले—"अभी-अभी कुमार जो गीत गा रहा था, उसकी रचना भी उसने स्वयं की है। हमने तो उसका स्वर साधने में थोड़ी सहायता मात्र कर दी है।"

"अच्छा !" राणा और कुँवर चण्डजी ने एक साथ कहा।

कुम्भ के चेहरे पर शान्ति और सन्तोष का भाव विद्यमान था।

कुछ क्षणों तक सभी चुप रहे।

"चलिये, काकाजी !" आखिर कुम्भ ने ही कुंवर चण्डजी का हाथ थामते हुए कहा—"अब मुझे तलवार के वह हाथ सिखाइये, जिनसे आपने देश के शत्रुओं को नष्ट किया है।"

और वह उन्हें खींचकर ले चला।

राणा और आचार्य देखते ही रह गये।

"काकाजी !" कुम्भ ने चलते-चलते कहा—"तम्बूरे और वीणा की झंकार में मुझे जितना आनन्द आता है, तलवार की झंकार भी इतना ही आनन्द देती है। दोनों के स्वरों में जैसे एक-सी ही ताल और लय है- ऐसा क्यों होता है, काकाजी ?"

"गीत और संगीत का सम्बन्ध हमारे हृदय से है, बेटे ! ये कलाएँ जीवन को उदारता और आनन्द प्रदान करती हैं। जीवन में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आनन्द आवश्यक है। पर आनन्द की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब मन में किसी प्रकार का डर न हो। निडर होने के लिए तलवार बहुत आवश्यक है। संगीत में भी शक्ति है, तलवार में भी शक्ति है। पर इनसे शक्ति का अनुभव वही कर सकते हैं, जिनके मन में भी शक्ति हो। तुममें ये दोनों गुण मौजूद हैं, बेटे!"

"हूँ!" कुम्भ ने कहा और वे चलते रहे। चलते-चलते एकाएक रुककर कुम्भ ने फिर पूछा—"कल जब आचार्य नाट्यशास्त्र (नाटक से सम्बन्धित विद्या) पढ़ाते हुए 'रस' की व्याख्या कर रहे थे, तो उन्होंने भी कुछ ऐसी ही बातें कही थीं, काकाजी! उन्होंने बतलाया था, कोई भी काम करते हुए जब हम उसमें मग्न हो जाते हैं, तो एक विशेष प्रकार का भाव मन में जाग उठता है, उसका अनुभव ही रस है।"

"बिल्कुल ठीक कहा उन्होंने।" कुंवर चण्डजी ने समर्थन किया।

"और सच्चा वीर ही किसी रस का सच्चा अनुभव कर सकता है—ऐसा क्यों होता है, काकाजी?" कुंवर कुम्भ ने पूछा।

"क्योंकि बेटे, किसी भी प्रकार के अच्छे उत्साह का भाव ही वीरता है। जब उत्साह नहीं होगा, तो हमें किसी भी काम में आनन्द नहीं मिल सकता, समझे!" चण्डजी ने बताया।

"हाँ-आँ!" स्वर को तानते हुए कुम्भ ने कहा—"तभी तो आचार्य कह रहे थे—संगीत को सुनकर संगीत विद्या जानने वाले के मन में जो भाव उमड़ते हैं, उसी प्रकार के भाव तलवार की झंकार सुनकर वीर के मन में भी उमड़ते हैं। जानते हैं, काकाजी, वह भाव कौन-सा होता है?"

"वह होता है—आनन्द!" बालक कुम्भ और कुंवर चण्डजी ने एक साथ कहा। फिर दोनों खिलखिलाकर हंस दिये।

तलवार-शिक्षा का स्थान आ गया था।

"संगीत का अभ्यास तो हो गया।" कुंवर चण्डजी ने एक तलवार की तरफ इशारा करते हुए कहा—"अब जरा उठाओ तलवार!"

बालक कुम्भ ने उछलकर एक तलवार उठा ली। वह उसे बड़ी ते[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

से घुमाता हुआ वीरता का पद गाने लगा :

"श्यामा निज रौरव-रव-रंजित,
इक राग भयंकर गाना तो !
नादित कर के निज तम्बूरा,
तूफाँ प्रलयङ्कर लाना तो !
भर दे मन में वह वीर भाव,
जो बिजली बन कर चमक उठें !
अखण्ड खण्ड कर खण्डे से,
लहू बूँद-बूँद टपकाना तो !
श्यामा···गाना तो ।"

—"वाह ! वाह ! कुम्भ बेटे !" कुँवर चण्डजी ने एकाएक कहा —"कविता और वह भी तलवार की झंकार के साथ ! ओह ! कितना उज्ज्वल है मेरे देश का भविष्य !"

"बचिये, काकाजी !" तभी बालक कुम्भ ने आक्रमण करने की तरह तलवार तानते हुए कहा।

कुँवर चण्डजी ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये। बोले—"क्या मुझी पर आक्रमण करोगे ?"

"हाँ-आँ !" आवाज़ तानते हुए कुम्भ ने कहा। फिर खिलखिलाकर हँसते हुए बोला—"यह भी कभी हो सकता है, काकाजी। मैंने पढ़ा है—पिता स्वर्ग से भी ऊँचा होता है, माँ धरती से भी महान् होती है। यह तलवार तो इन दोनों पर छाया करने के लिए ही उठ सकती है, काकाजी ! आक्रमण तो यह देश के शत्रुओं पर करेगी—हाँ !"

तभी वहाँ बच्चा और मैरा नामक दो व्यक्तियों ने प्रवेश किया। उन दोनों को देखते ही बालक कुम्भ ने ललकारते हुए कहा :

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"आओ काका ! आज आप लोगों से भी दो-दो हाथ हो जायें !"

"अच्छा !" बच्चा और मैरा दोनों एक साथ बोले—"इतना दम है, तुममें ? अरे, अभी खेलो-खाओ, बेटे !"

बच्चा और मैरा दोनों मुकुलजी के सौतेले भाई थे। इनकी माँ एक दासी थी, जिसे राणा लाखाजी ने पत्नी के समान ही रखा था। ये दोनों मन ही मन अपने-आपको मेवाड़ का राणा बनने का अधिकारी मानते थे।

"बच्चा हूँ, तो क्या हुआ, काका !" कुम्भ ने बड़े गर्व से कहा। वह फिर बोला—"वीरता कोई बड़ों की ही तो धरोहर नहीं ! आज परीक्षा कर देखिये। आप दोनों मुझ पर आक्रमण कीजिये, मैं अकेला उसे रोकूँगा।"

"ठीक है !" बच्चासिंह ने कहा—"पर भैया चण्डजी क्या ऐसा करने की आज्ञा देंगे ?"

"क्यों नहीं !" कुँवर चण्डजी ने बड़ी उदारता से कहा—"युद्ध का खेल हो जाए। बच्चे कुम्भ का मन भी बहल जायेगा, उसकी शस्त्र-विद्या की परीक्षा भी हो जायेगी। क्यों, कुम्भ बेटे।"

"हाँ, काकाजी !" कुम्भ ने तलवार तानते हुए कहा।

बच्चासिंह और मैरा ने भी तलवारें निकाल लीं। वे दोनों दो तरफ से कुम्भ पर आक्रमण करने लगे। कुम्भ बड़ी सफाई और फुर्ती से उनका आक्रमण रोकने लगा। कुँवर चण्ड ध्यान से सब देखने लगे। वे वार-बार कुम्भ को उत्साहित कर रहे थे। सहसा उन्होंने देखा, बच्चा और मैरा आपस में कुछ इशारा कर रहे हैं। चण्ड को समझते देर न लगी, कि ये दोनों युद्ध के खेल को वास्तविक बना देना चाहते हैं। वे बालक कुम्भ पर सचमुच आक्रमण कर उसकी हत्या कर डालना चाहते हैं।

"सँभलना, कुम्भ !" मैरा ने पैंतरा बदलते हुए कहा।

कुम्भ का ध्यान उधर बँट गया। इससे लाभ उठाकर बच्चा ने जैसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ही उस पर सचमुच घातक प्रहार करना चाहा, कुँवर चण्डजी ने आगे बढ़कर उसका हाथ थाम लिया। वे गरजे :

"खबरदार, बच्चासिंह ! तुम लोग इतने नीच हो, पता नहीं था।" अपनी कमर में लटकी तलवार निकालते हुए कुँवर चण्डजी ने फिर कहा—"मैंने तुम लोगों की नीयत पहले ही भाँप ली थी। तुम लोगों के इशारे समझ लिये थे। तुम लोग एक खिलती कली पर वार करना चाहते हो ! नीच !"

"चण्ड भैया !" बच्चा और मैरा एक साथ बोले—"आप नाहक हम पर शक कर रहे हैं। हमारा अपमान कर रहे हैं।"

"अपमान और तुम्हारा !" चण्डजी ने क्रोध से कहा—"मैं शक कर रहा हूँ तुम लोगों पर ? ज़रा दर्पण में अपनी सूरत देखो जाकर ! क्या लिखा है, उस पर ! अपमान उनका होता है, जिनको अपने मान-सम्मान का कुछ ध्यान हो !"

"चण्ड भैया !" बच्चा ने चिल्लाते हुए कहा—"आप एक बालक के सामने हमारा अपमान कर रहे। हम भी राणा लाखाजी की ही सन्तान हैं। हमारा भी उतना ही अधिकार है…!"

"चुप रहो !" चण्ड ने भी गरजते हुए कहा—"अधिकार ! अधिकार की बात तुम लोगों के मुख से शोभा नहीं देती। अधिकार पाने के लिए बड़ा विशाल और उदार हृदय चाहिए। देश के उभरते भविष्य से ईर्ष्या करने वाले मान-सम्मान या अधिकार के अधिकारी नहीं हो सकते। इसी क्षण यहाँ से, इस देश से बाहर निकल जाओ !"

"क्यों ?" मैरा ने कहा—"किसकी आज्ञा से ?"

"मेरी आज्ञा से ! कुँवर चण्ड की आज्ञा से !" कुँवर चण्डजी ने क्रोध से कहा—"मैं पिछले कई दिनों से देख रहा हूँ कि तुम लोगों की नीयत और हरकतें इस परिवार के लिए ही नहीं, पूरे देश के लिए घातक और अपमानजनक हैं…मैं कहता हूँ निकल जाओ-ओ-ओ !"

"हम केवल राणा मुकुल की आज्ञा का ही पालन कर सकते हैं।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बच्चा और मेरा ने एक साथ कहा—"हमारे शरीर में भी राणा वंश का खून है। कुंवर चण्ड और कुंवर बच्चा या मैरा में अन्तर ही क्या है ?"

"बहुत अन्तर है !" कहते हुए राणा मुकुलजी ने प्रवेश किया—"प्रकाश और अन्धकार में जितना अन्तर है।" एक क्षण रुककर वह फिर बोले—"चण्ड भैया ने जो भी आदेश दिया है, वह देश की सबसे सम्मानित और उच्च सत्ता का आदेश है। उसका पालन किया जाए !"

"राणा भैया !" बच्चा और मैरा एक साथ बोले।

"देश किसी की बपौती नहीं। अधिकार पर भी किसी एक का हक नहीं।" राणा मुकुलजी ने कहा—"जो देश की आन पर मर-मिटना जानता है, देश उसी की सम्पत्ति है। जो देश के सम्मान को अपना सम्मान मानता है, देश पर उसी का अधिकार होता है, तुम जैसे षड्यंत्र-कारी लोगों का नहीं !"

बालक कुम्भ आश्चर्य से सब देख-सुन रहा था। उसकी समझ में कुछ भी न आ रहा था।

"तुम लोग पिछले दिनों से मेवाड़ का राज्य पाने का जो षड्यंत्र कर रहे हो, उसका पूरा समाचार मुझे मिल चुका है। भाई हो या कोई अन्य, देश से, मातृभूमि के मान से बड़ी कोई वस्तु नहीं !"

"आप ठीक कहते हैं, पिताश्री !" बालक कुम्भ ने कहा—"मुझे मेरे आचार्यजी ने भी यही बताया है—देश ही पिता है, देश की धरती ही सच्ची माँ है। उससे बढ़कर किसी का महत्त्व नहीं !"

"ठीक है, बेटे !" राणा ने कहा। फिर वे बच्चा और मैरा की तरफ देखते हुए बोले—"अभी तक मातृभूमि का आदेश पालन नहीं किया गया ?"

"आप हम लोगों के साथ अन्याय कर रहे हैं, राणा भैया !" मैरा ने कहा—"इस राज्य पर कुछ हमारा भी अधिकार है।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ठीक है।" राणा बोले—"पर अधिकार षड्यंत्र करने से नहीं मिला करते, उचित कार्य करने से मिला करते हैं।"

"तो यह आपका अन्तिम आदेश है?" बच्चा ने पूछा।

"मेरा नहीं, मातृभूमि का। मातृभूमि की सबसे ऊँची सत्ता का आदेश है। चण्ड भैया का आदेश है। उस आदेश के सामने हमारा मस्तक भी नत है।" एक क्षण रुककर राणा फिर बोले—"तुम दोनों को देश से निर्वासित करने का निर्णय मेवाड़ के सभी बच्चे सामन्त और सरदार पहले ही कर चुके हैं। तुम दोनों ने मालवा और गुजरात के सुल्तानों के साथ समझौता करने का प्रयत्न किया। तुम लोग देशद्रोही हो। फिर देश तुम लोगों को कैसे सहन कर सकता है?"

बच्चा और मैरा के चेहरे मुरझा गये।

"चण्ड भैया कहीं बुरा न मान जाएँ, इसी कारण तुम लोगों को अभी तक सहन किया गया।" राणा ने फिर कहा—"पर आज उन्होंने अपनी आँखों से तुम लोगों की करतूत देख ली।"

"हाँ, मुकुल!" कुँवर चण्डजी ने कहा—"ये दोनों राजकुँवर कुम्भ की हत्या कर डालना चाहते थे। इसी कारण मैंने यह आदेश दिया।"

"कुँवर कुम्भ की ही नहीं, ये लोग मेरी और आपकी हत्या भी कर डालना चाहते हैं, भैया!" राणा मुकुल ने कहा—"उसके बाद मातृभूमि को शत्रुओं के हाथ में दे देना चाहते हैं।"

"नहीं! नहीं।" कुँवर कुम्भ अपनी तलवार झनझनाता हुआ चिल्ला उठा—"यह कभी नहीं हो सकता! इस तलवार के रहते शत्रु देश की तरफ आँख उठाकर देख भी नहीं सकते। उनकी आँखें नोच ली जायेंगी।"

"सुन रहे हो देश के भविष्य की चुनौती!" राणा मुकुल ने कहा—"और एक तुम लोग हो…छीः! देश को शत्रुओं के हवाले कर देने की योजना बनाने वालो। तुम लोगों को तो मृत्युदण्ड चाहिए था। पर तुम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोग भी पिताश्री राणा लाखा की सन्तान हो। जाओ! देशद्रोहियों के लिए देश में कोई स्थान नहीं।"

"देखा जायेगा!"

बच्चा और मैरा ने मुड़ते हुए कहा। वे धम्-धम् पैर पटकते हुए चल दिये। और भी पता नहीं क्या बड़बड़ाये।

"क्या कहा? देखा जायेगा?" तलवार तानते हुए कुम्भ उनके पीछे भागा।

"रहने दो कुम्भ!" कुँवर चण्ड ने उसे रोकते हुए कहा।

कुम्भ के कदम वहीं थम गये।

तीनों चुपचाप खड़े रहे।

"भैया!" मुकुल ने चण्ड से कहा—"स्वर्गीय पिताश्री की आत्मा हमारे इस कार्य से असन्तुष्ट तो न होगी! आखिर वे दोनों हमारे भाई हैं।"

"भाई!" चण्ड ने गम्भीरता से कहा—"भाई शब्द बड़ा पवित्र और उच्च है, मुकुल! पर देश और उसका सम्मान उससे भी कहीं बढ़कर है। तुम चलो भीतर!"

राणा मुकुलजी चुपचाप चल दिये।

बालक कुम्भ अपने महान् वीर और महामानव चाचा के मुँह की तरफ आश्चर्य से देखता रहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तीन

समिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर का आंगन !

दिन का पहला पहर ही अभी व्यतीत हुआ था। भक्तगण मन्दिर के आंगन से जा चुके थे। अब वहाँ बालकों की भीड़ जमा थी। उस बाल-भीड़ का मुखिया था—किशोर कुमार कुम्भ !

बालक हो-हल्ला मचा रहे थे। किशोर कुम्भ ने हाथ के संकेत से सबको चुप कराते हुए कहा :

"तो यह निश्चय रहा कि शिवरात्रि के महापर्व पर यह नाटक खेला जायेगा।"

"अवश्य खेला जायेगा।" सभी किशोरों ने हाथ ऊपर उठाकर समर्थन किया।

"तो फिर आज से ही, बल्कि अभी से इसके अभिनय का अभ्यास आरम्भ कर दिया जाये !" कुम्भ ने फिर कहा।

"हाँ-हाँ, अभी से !" एक बालक ने कहा—"शिवरात्रि में अब दिन ही कितने बाकी रह गये हैं ! वसन्त का आरम्भ तो हो ही गया है।"

"ठीक है !" कुम्भ ने कहा। फिर वह हाथ में पकड़ी पुस्तक खोलकर उसे ध्यान से देखने लगा। देखने के बाद अपने साथियों को समझाते हुए बोला—"पहले हम सब मिलकर भगवान समिद्धेश्वर महादेव की स्तुति का गीत गायेंगे। उसके बाद नाटक का आरम्भ होगा।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सारे बालक मन्दिर की ओर मुंह कर, हाथ जोड़कर खड़े हो गये। किशोर कुम्भ अपने ही रचे स्तुति-गीत का अभ्यास उन्हें कराता रहा। जब उसे सन्तोष हो गया तो बोला :

"यह तो हो गया। अब कल फिर इस स्तुति-गीत का अभ्यास किया जायेगा। अब नाटक का आरम्भ होगा!" कहकर वह फिर कुछ सोचने लगा। दो-चार क्षण बाद बोला—"मैं तो तुम लोगों को अभ्यास कराऊँगा। मैं खुद तो भाग लूंगा नहीं।" फिर एक बालक की ओर संकेत करते हुए बोला—"तुम्हें वीर बालक के पिता का अभिनय करना होगा।" फिर दूसरे से कहा—"तुम वीर बालक बनोगे और तुम उसके साथी…।" इस प्रकार उसने सभी को निश्चित पाठ याद करने के लिए कहा और उनका भाग बाँट दिया।

"ठीक है।" पिता बनने वाले बालक ने कहा—"अब अभ्यास शुरू किया जाए।"

"सबसे पहले एक सम्मिलित गीत होगा।" कुम्भ ने फिर अपनी हाथ वाली पुस्तक को देखते हुए कहा—"दृश्य एक पहाड़ी का रहेगा। सभी लोग गीत गाते हुए, उस पर चढ़ते हुए दिखाई देंगे।"

इतना कहकर कुम्भ ने बालकों को मन्दिर के आँगन की सीढ़ियों पर इधर-उधर खड़ा कर दिया। उनके खड़े होने का आकार भारत के नक्शे जैसा बन गया। उसके बाद उसने गीत की पंक्तियाँ स्वयं गाकर बालकों को सुनाईं। उन्हें गाना गाते हुए हाथ या शरीर हिलाने आदि की प्रक्रिया समझाई।

'क्या हो रहा है, कुम्भ बेटे?" सहसा प्रवेश करते हुए कुंवर चण्डजी ने कहा—"कैसी तैयारी हो रही है?"

"ओह काकाजी!" कुम्भ ने तथा उसके साथियों ने चण्डजी को प्रणाम किया। उन्होंने सभी को आशीर्वाद दिया।

"हम लोग महा शिवरात्रि के पर्व पर एक नाटक का अभिनय करने जा रहे हैं, काकाजी!" कुम्भ ने कहा—"उसी का अभ्यास कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रहे हैं। आप भी देखिये !" फिर वालकों की ओर मुड़कर उसने कहा—"अच्छा तो सबने मिलकर गाना है।"

फिर तालो बजाते हुए कुम्भ बोला—"एक—दो—तीन।" और तीन कहकर उसने अभिनय के ढंग से दोनों हाथ ऊपर उठा दिये। सभी बालक अभिनय के ढंग से गाने लगे :—

"गली-गली में, गाँव-गाँव में, जागा नवल प्रभात रे !
हँसे फूल, मुस्काई कलियाँ, शोभा नाहीं समात रे !
हरी पुआलों के होंठों पर मचल रही मुस्कान रे !
अब न रुकेंगे तूफान के सर्जक मम अभियान रे !
कदम मिला ! साथी आ !
नव आशा के गाने गा !
देख सामने बांह पसारे मुस्काये सुविहान रे !
अभी किरण के नवल स्पर्श से विकसेगा जलजात रे !
गली-गली में, गाँव-गाँव में, जागा नवल प्रभात रे !

हम कनरे मिट्टी के समझो हमें नहीं प्रिय प्राण रे !
हम में ही वे बीज निहित, जो करते नव निर्माण रे !
हाथ बढ़ा साथी आ !
इस मिट्टो के गीत सुना !
देख, क्षितिज की मिट्टी-तेरे, उतर रहा आसमान रे !
अभी सुखों के हँसते फूलों की होगी बरसात रे !
गली-गली में, गाँव-गाँव में, जागा नवल प्रभात रे !
हम मानव, सृष्टिकर्त्ता के दाएँ-बाएँ हाथ रे !
इसी लिए हिम्मत वालों के रहे सफलता साथ रे !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मत घबरा! पथ पर आ!
मानवता के गीत सुना!
यदि प्यार, विश्वास साथ हैं, तब तू अपना नाथ रे!
सभी दीवारें ढह जायेंगी, जैसे सूखे पात रे!
गली-गली में, गाँव-गाँव में, जागा नवल प्रभात रे!"

"वाह! वाह!" गीत की समाप्ति पर कुँवर चण्डजी ने प्रसन्नता से ताली बजाते हुए कहा।

कुम्भ तथा अन्य बालक मुस्कराने लगे।

"इसके बाद अगले दृश्य का अभ्यास होगा!" बालक कुम्भ ने बालकों में घिरते हुए कहा। जिसे वीर-बालक का अभिनय करना था, उसका हाथ थाम, उसे कुछ समझाते हुए वह फिर बोला—"तुमको कहनां है, तलवार का संगीत मुझे सबसे अच्छा लगता है, पिताश्री!"

"तलवार का संगीत मुझे सबसे अच्छा लगता है, पिताश्री!" वह बालक बताये हुए ढंग से बोला।

"ठीक है।" कुम्भ ने प्रसन्नता से कहा—"इसके बाद बोलना है—क्योंकि तलवार की नोंक से लिखी गई कहानियाँ ही जीवन को अमर संगीत प्रदान कर सकती हैं।"

"क्योंकि तलवार की नोंक से लिखी गई कहानियाँ···।" वह बालक कहने लगा।

"नहीं-नहीं।" कुम्भ ने बीच में ही टोकते हुए कहा—"ऐसा कहते समय तुम्हें अपना दायाँ हाथ कमर में लटक रही तलवार पर ले जाना है। फिर झन से तलवार खींच लेनी है।" अपनी कमर में लटक रही तलवार को खींचते हुए कुम्भ फिर बोला—"ऐसे!"

तभी राजमहलों की तरफ से शोर सुनाई दिया:

"हत्या! हत्या!" स्वर किसी स्त्री के कण्ठ के थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"किसकी ह्त्या ?" तलवार ताने हुए बालक कुम्भ ने कहा। उसका चेहरा क्रोध और जोश से तमतमा उठा।

कुँवर चण्डजी के हाथ भी तलवार पर चले गये। मुंह से निकला :

"क्या—आ ?"

"हत्या ! हत्या !" शोर बढ़ता ही गया—"हत्यारे भागे जा रहे हैं···महाराणा की हत्या···राणा मुकुलजी की हत्या···हाय राणा···ह···त्या !"

"पिताश्री की हत्या ! ओह !" बालक कुम्भ गरजते हुए बोला। वह महल की तरफ नंगी तलवार लिये भागा—"कौन है वह पापी ! किसने पिताश्री की हत्या का साहस किया !"

"मुकुल भैया की हत्या !" कुँवर चण्डजी के तेवर चढ़ गये। उनकी तलवार भी खिंच गई। वह भी किशोर के पीछे-पीछे राज महलों की तरफ भागे।

अन्य बालक चुपचाप सहमे-से खड़े रहे।

राजमहलों में चारों तरफ कुहराम मच गया। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वास्तव में क्या हो गया है। कुछ ही देर में सारे चित्तौड़गढ़ के दुर्ग में शोर मच गया। सभी लोग राणा मुकुल के भवन की ओर भागे।

इस भगदड़ और आपाधापी में हत्यारे चुपचाप खिसक गये।

कुम्भ और कुँवर चण्डजी भागते हुए महल में पहुंचे। वहाँ काफी भीड़ एकत्रित हो गई थी। एक भयभीत-सी सेविका एक तरफ खड़ी थी। डर से सहमकर उसकी आँखें बाहर को निकल रही थीं !

"पिताश्री !" बालक कुम्भ बिलखता हुआ अपने घायल और दम तोड़ रहे पिता राणा मुकुल पर गिर पड़ा।

"मुकुल भैया !" कुंवर चण्डजी जैसे दहाड़कर पास बैठ गये।

घायल राणा की आँखें खुलीं। उन्होंने कराहते हुए एक बार बालक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बालक कुम्भ बिलखता हुआ अपने घायल और दम तोड़ रहे पिता राणा मुकुल पर गिर पड़ा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुम्भ की तरफ देखा, फिर कुंवर चण्डसिंह की तरफ देखा। उनके हाथ खून से तर थे ! मुँह से शब्द नहीं निकल पा रहे थे। चण्ड जी की तरफ देखकर केवल इतना ही कहा :

"चण्ड भैया !" और फिर उनकी आँखें कुम्भ की तरफ घूम गईं। उनका खून से रंगा हाथ उठा, कुम्भ के मस्तक की ओर बढ़ा, मस्तक को छूकर नीचे गिर पड़ा।

"मुकुल भैया !" कुँवर चण्डजी की चीख निकल गई।

कुम्भ "पिताश्री" कहकर दहाड़ उठा।

सब शोक में डूब गये।

"किसने···किसने यह कुकर्म किया ?" हिचकियाँ लेते हुए चिल्ला-कर कुम्भ ने पूछा।

सन्नाटा ! कोई कुछ न बोला।

"कोई बोलता क्यों नहीं ? किशोर कुम्भ की फिर कड़कती आवाज़ सुनाई दी—"कौन पापी आया था यहाँ ? कौन सेविका और पहरेदार था यहाँ ?"

"मैं—मैं थी, कुँवरजी !" सहमी खड़ी दासी ने बड़ी कठिनाई से कहा—"राणाजी पूजागृह में चले गये थे। मैं भी उधर अपना काम करने लगी। उस समय कुंवर बच्चा और मैरा को यहाँ घूमते देखा था—बस !"

"बच्चा और मैरा !" कुँवर चण्ड और किशोर कुम्भ—दोनों के मुख से एक साथ निकला।

"फिर मैंने राणाजी की चीख सुनी। काम छोड़कर भागी। यहाँ आकर देखा, राणाजी खून से लथपथ पड़े थे। मैं सहमकर चिल्लाने लगी।" दासी ने फिर कहा।

दो क्षण सन्नाटा रहा।

"वे हत्यारे अभी यहीं कहीं होंगे !" सहसा खड़े होते हुए कुम्भ ने कहा। नंगी तलवार उसके हाथ में अभी भी थी। वह फिर बोला—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"मैं उनका पीछा करता हूँ।" पिता के शरीर से रक्त का टीका अपने माथे पर लगाते हुए बालक कुम्भ ने फिर कहा—"जब तक इन नीच हत्यारों को उचित दण्ड न दे लूंगा, चैन से नहीं बठूंगा !"

"शान्त कुमार !" कुँवर चण्डजी ने कहा—"अब तक हत्यारे जानें कहाँ चले गये होंगे। उन्हें उचित दण्ड दिया जायेगा। इस समय तो जो कर्त्तव्य सामने है, उसे पूरा किया जाये। हम हत्यारों की खोज की अभी व्यवस्था किये देते हैं।" फिर उन्होंने पास खड़े एक सैनिक सरदार को पुकारकर कहा—"वीरसिंह ! तुम अपने सैनिकों के साथ अभी जाओ ! बच्चा और मेरा जहाँ कहीं भी हों, उनका पता लगाओ। उन्हें पकड़ने का प्रयत्न करो।"

"जो आज्ञा कुँवरजी !"

और वीरसिंह चला गया।

उसके बाद राणा मुकुल का उचित ढंग से संस्कार किया गया।

कई दिन बीत गये।

मेवाड़ का राज्य-सिंहासन खाली नहीं रह सकता था। अतः बारह-तेरह वर्षीय कुमार कुम्भकर्ण (कुम्भ) के राज्य-अभिषेक की तैयारियाँ होने लगीं।

कुम्भ अब उदास रहने लगा। अपनी उदासी और निराशा मिटाने के लिए वह संगीत में मन रमाये रहता या फिर कविता करता। कुछ दिनों तक लगता था, जैसे उसके जीवन का सारा उत्साह ही नष्ट हो गया हो।

"कुम्भ बेटे !" एक दिन कुंवर चण्डजी ने उसके पास आकर कहा—"यों बैठे रहने से तो काम न चलेगा ! तुम्हें देश की बागडोर सँभालनी है।"

"मेरा मन किसी भी काम में नहीं लगता, काकाजी !" कुम्भ ने उदासी से कहा—"तलवार के खेल—ओह ! कितनी बुरी है यह ? इसके द्वारा एक भाई दूसरे भाई के प्राण ले सकता है ! बाप बेटे का सीना चाक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर सकता है ! क्या हम इसे सदा के लिए कहीं दूर नहीं फेंक सकते ?"

"यही तो नहीं हो सकता, बेटे !" कुँवर चण्डजी ने समझाते हुए कहा—"कानून, न्याय और व्यवस्था बनाये रखने के लिए शक्ति को प्रतीक तलवार का रहना आवश्यक है। कुछ लोग इसका दुरुपयोग भी ज़रूर करते हैं, पर उनकी दुष्टता का दण्ड भी तो इसी के द्वारा दिया जा सकता है, बेटे !"

कुम्भ उनके मुख की तरफ देखता रहा। फिर बोला :

मुझे गीत, संगीत और काव्य (कविता) में जो शान्ति और आनन्द मिलने लगा है, अब उसे छोड़ फिर से तलवार उठाने को जी नहीं चाहता, काकाजी !"

"इन चीज़ों का वास्तविक और स्वतन्त्र आनन्द उठाने के लिए भी तो तलवार की शक्ति आवश्यक है, बेटे !" कुँवर चण्डजी ने एक क्षण रुककर फिर कहा—"देश के भीतर और सीमाओं पर जब अनेक प्रकार के शत्रु दनदना रहे हों, तब सितार के तारों की नहीं, तलवार की झंकारों की ही आवश्यकता होती है। सुना नहीं तुमने ! देश की सीमाओं पर शत्रुओं ने गड़बड़ आरम्भ कर दी है। वे समझने लगे हैं कि इस देश का शासक तो कोई है नहीं, फिर क्यों न उसकी सीमाओं को तोड़कर विस्तार कर लिया जाए !"

"नहीं !" तरुण कुम्भ एकाएक जैसे चिहुंक उठा—"मेरे देश की सीमाओं की तरफ आँख उठाकर कोई नहीं देख सकता। वे आँखें नोच ली जायेंगी।"

"यही तो, बेटे !" कँवर चण्डजी ने कहा—"हम तुम्हारे राज्याभिषेक की तैयारी कर रहे हैं। तुम्हारे मामा रणमल भी अपनी सैनिक टुकड़ी लेकर आ रहे हैं। हम चाहते हैं, उनकी उपस्थिति में ही राज्याभिषेक हो जाये।"

"आपके रहते मैं राणा बनने की ढिठाई कैसे कर सकता हूँ, काकाजी ?" तरुण कुम्भ ने कहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"वह सँभव नहीं है, बेटे !" चण्डजी बोले—"तुम तो जानते ही हो, मैंने राजसिंहासन पर कभी न बैठने की पिताश्री राणा लाखा के सामने प्रतिज्ञा की थी। उसी को पूरा करने के लिए मुझे कुछ दिनों तक अपनी प्यारी मातृभूमि का भी परित्याग करना पड़ा था। फिर यह कैसे सम्भव हो सकता है !"

"आप धन्य हैं, काकाजी !" चण्डजी के चरणों में झुकते हुए कुम्भ ने कहा—"पर मैंने भी तो प्रतिज्ञा कर रखी है न ! अपने पिताश्री के हत्यारों को प्राणदण्ड दिए बिना चैन से न बैठूंगा।"

"तो वह प्रतिज्ञा सितार बजाने या गीत गाते रहने से तो पूरी न होगी, बेटे ! उसके लिए तुम्हें राजदण्ड ग्रहण करना होगा। देश की बिखरी शक्तियों को इकट्ठा करना होगा !" कुछ रुककर फिर कहा—"वीरसिंह बच्चा और मैरा का पता लगा रहा है। उसे कुछ पता चला भी है। पहले वे लोग भादेरिया में किसी भाट ब्राह्मण (चारण कवि) के यहाँ छिपे थे। पर अब कहीं किसी पहाड़ी दुर्ग में जा छिपे हैं।"

"तब ठीक है, काकाजी !" कुम्भ ने उठते हुए कहा—"पहले उन्हें दण्ड दे लूँ, फिर राजतिलक हो। हम सारे पहाड़ी प्रदेश का चप्पा-चप्पा छान मारेंगे। इस प्रकार परीक्षा भी हो जाएगी, कि आपका बेटा कुम्भ राणा बनने के योग्य है भी या नहीं।" और वह उनके चरणों में झुक गया।

"कुम्भ !" आश्चर्य से चण्डजी ने उसकी तरफ देखा। फिर अपना हाथ उसके सिर पर रख दिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चार

"बच्चा और मैरा को देशद्रोह और पिताश्री की हत्या का दण्ड दिये बिना मेरे लिए राजसिंहासन पर बैठना असम्भव है।" कुंवर कुम्भ ने कहा।

उसकी बात सुनकर राठौर रणमल सोच में पड़ गये। वे मारवाड़ राज्य के अधिकारी थे। कुम्भ उनका भानजा था। कुछ देर सोचते रहने के बाद रणमल ने सिर हिलाते हुए कहा :

"वह तो ठीक है। पर इस समय मेवाड़ की सारी शक्तियाँ बिखरी हुई हैं। कोई शासक न होने के कारण लोग और भी लापरवाह होते जा रहे हैं। उधर दिल्ली का लोदी शासन भी कमज़ोर हो चुका है। उसके अधीन सूबों के शासक भी स्वतन्त्र हो गये हैं। गुजरात और मालवा आदि प्रदेश मेवाड़ की सीमाओं से लगते हैं। वहाँ के शासक मेवाड़ को असुरक्षित समझकर युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में मेवाड़ का राजसिंहासन खाली रहना उचित नहीं।"

"मुझे निश्चय ही देश की बिखरी शक्तियों को संगठित करना है।" कुम्भ ने कहा—"पर पहले बच्चा और मैरा का काँटा तो निकलना ही चाहिए।" एक क्षण रुककर कुम्भ ने कहा—"ऐसे देशद्रोहियों के रहते हुए तो देश कभी सुरक्षित नहीं रह सकता।"

कुंवर कुम्भ और राठौर रणमल दोनों मन्त्रणागार में बैठे थे। तभी कुंवर चण्डजी ने प्रवेश किया। दोनों ने उठकर उनका स्वागत किया। स्वागत और नमस्कार का उत्तर देने के बाद तीनों बैठ गये।

"बच्चा और मैरा का पता चल गया है, कुंवर बेटे!" बैठते ही चण्डजी ने कहा—"वे इन दिनों अरावली पर्वतमाला की एक गढ़ी में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रह रहे हैं।"

"किस तरफ ?" कुम्भ ने उछलते हुए पूछा।

"भादेरिया से उत्तर-पश्चिम की ओर।" चण्डजी ने कहा—"बच्चा के दोनों बेटे एका और महपा भी उनके साथ हैं। आज ही वीरसिंह ने समाचार दिया है।"

"तो मैं आज ही वहाँ चला जाना चाहता हूं।" कुम्भ ने उठते हुए कहा—"इसी समय! आप कुछ सैनिकों को तैयार होने की आज्ञा दीजिये।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा, बेटे!" चण्डजी ने कहा—"सुना है, उन्होंने एक सैनिक टुकड़ी भी तैयार कर ली है। फिर माण्डू के सुल्तान मुहम्मद खिलजी की सहायता भी उन्हें प्राप्त है। वृद्ध हो जाने पर भी अभी इन हड्डियों में ऐसे देश और कुल-द्रोहियों को दण्ड देने की शक्ति इन भुजाओं में है।"

"नहीं, काकाजी!" कुम्भ ने दृढ़ता से कहा—"आपको कष्ट नहीं करना होगा। आपके भी चले जाने से पीछे सारी व्यवस्थाएं कौन देखेगा! मुझे ही आज्ञा और अवसर दीजिये, ताकि मैं अपनी शस्त्र-विद्या की परीक्षा दे सकूं।"

"कुँवरजी ठीक कहते हैं।" राठौर रणमल ने कहा—"फिर मैं तो कुम्भ के साथ रहूँगा ही। आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, कुँवरजी। मेरे साथ मारवाड़ की सबसे बहादुर सैनिक टुकड़ी भी है। हम उनको अवश्य ही उचित दण्ड दे सकेंगे!"

कुँवर चण्डजी कुछ क्षण मौन सोचते रहे। फिर बोले :

"तो ठीक है। हम अभी सारी व्यवस्था किये देते हैं।" कहकर कुछ सोचते हुए वे चले गये।

अगले ही दिन कुम्भ अपने मामा राठौर रणमल की सैनिक टुकड़ी लेकर अरावली पर्वतमाला की तरफ चल दिया।

वे लोग दिनभर चलते रहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घना जंगल !

पश्चिमी आकाश पर धीरे-धीरे सन्ध्या के बाद धुँधलका उतरने लगा। जंगल और भी घना होता गया। घना जंगल ! रात्रि के आने से पहले ही अँधेरा होने लगा। सामने एक पहाड़ी टीला था। उसकी ओर संकेत करते हुए राठौर रणमल ने कहा :

"यहीं पड़ाव डाल देना चाहिए, कुँवर। अँधेरा बढ़ जाने के कारण जंगल में रास्ता खोज पाना कठिन होगा। फिर भटक जाने का भी डर है। इस समय हम कहीं भादेरिया के आसपास हैं। उधर जंगलों में भीलों की बस्तियाँ हैं। हमारी सेना के चलने से वे कुछ और ही न समझ बैठे—क्यों ?"

"आप ठीक कहते हैं।"

कुम्भ ने उनकी बात का समर्थन किया।

पहाड़ी के ठीक नीचे पड़ाव डाल दिया गया। सेवकों ने कुँवर कुम्भ तथा राठौर रणमल के घोड़े सँभाल लिये। कुछ सेवक खाने-पीने की व्यवस्था में लग गये।

कृष्ण-पक्ष का चांद अभी तक उदय नहीं हुआ था। हाँ, उसकी पूर्व सूचना अवश्य पश्चिमी आकाश पर मिलने लगी थी। वातावरण बिल्कुल शान्त था। पहाड़ी के उस ओर वाले झरने का स्वर अवश्य सुनाई दे रहा था। या कभी-कभी झींगुरों की झाँ-झाँ ध्वनि भी गूँज उठती थी। राठौर रणमल अपने सायंकालीन कार्यों में लग गये।

कुँवर कुम्भ को जंगल का वह वातावरण बड़ा सुहावना लगा। पता नहीं क्या सोचते हुए उसने एक भाला उठाया, धीरे से अपने शिविर से बाहर निकला और एक तरफ चल दिया।

वृक्षों के पत्तों की जाली से कृष्ण-पक्ष का चाँद झाँकने लगा था, जिस कारण अँधेरा धुंधलके में बदल गया था। इधर-उधर बिखरे पत्ते सूख जाने के कारण पत्थरों जैसे प्रतीत होने लगे। कुम्भ का कवि हृदय गनगुना उठा। रात के धुंधलके में प्रकृति की धुंधली सुन्दरता को देखते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुए, गुनगुनाते हुए कुम्भ झरने की तरफ बढ़ चला।

सहसा जंगल में कुछ हलचल-सी होने लगी। दो-चार हिरण सहमे-से वहाँ से भागकर एक तरफ चले गये। कुम्भ ने कुछ गीदड़ों और खरगोशों को भी भागते हुए देखा। वह समझ नहीं पाया कि रात को ये पशु क्यों भाग रहे हैं। अतः निडर गुनगुनाते हुए झरने की तरफ बढ़ चला। उसके जी में आया कि ऊंचे स्वरों में कोई गीत गाने लगे।

तभी एक भयानक गर्जना सुनाई दी।

सारा जंगल काँप गया।

कुम्भ ने अपना भाला ज़ोर से एक पत्थर पर दे मारा। एक क्षण के लिए उसे भी रोमांच हो आया। पर फिर भी वह झरने की तरफ बढ़ता गया। झरने का स्वर अब स्पष्ट सुनाई देने लगा था।

सहसा सामने कुछ चमक देखकर कुम्भ रुक गया।

सामने अँधेरे को चीरती हुई सी चमक उसकी ओर बढ़ी आ रही थी। कुम्भ ने ध्यान से देखा। कोई जंगली जानवर था। शायद बाघ था, जिसकी आँखें उस अँधेरे में भी बिल्ली की आँखों के समान चमक रही थीं।

बाघ एक बार फिर गरजा।

जंगल के समान ही कुम्भ का रोयाँ-रोयाँ काँप उठा।

बाघ झपटा! बड़ी तेज़ी से कुम्भ ने हाथ वाले भाले को सँभाल, दोनों हाथ में पकड़, झपटते हुए बाघ को दे मारा। भाला बाघ के खुले मुँह में धँसकर पेट से बाहर निकल गया। बाघ गुर्राया, एक-दो बार तड़पा और फिर ठण्डा हो गया।

दो क्षण ठहर वीर कुम्भ बाघ के बिल्कुल पास चला गया।

"यह कौन है?"

तभी पास वाली झाड़ियों से सुनाई दिया। वीर कुम्भ ने मुड़कर देखा, चार-पाँच भील खड़े आश्चर्य से देख रहे थे।

"तुम कौन हो?" भीलों में से एक ने अपनी बोली में पूछा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुम्भ उनकी तरफ देख रहा था, क्यों वह उनकी भाषा नहीं समझता था।

भील आपस में पता नहीं क्या बातें करने लगे !

"कुँवरजी ! आप कहाँ हैं, कुँवरजी ?" सहसा कुछ दूर से आवाज़ें सुनाई देने लगीं। शायद सैनिक कुम्भ को ढूँढते हुए उधर ही आ रहे थे।

"कुँवर कुम्भ !" राठौर रणमल का स्वर सुनाई पड़ा।

"मैं यहाँ हूँ—झरने के पास !" कुम्भ ने भी पुकारते हुए कहा। फिर आगे बढ़कर एक ही झटके से बाघ के मुँह से अपना भाला खींच लिया।

इतने में चार-पाँच सैनिक और राठौर रणमल भी वहाँ आ गये थे। कुम्भ को देख रणमल ने कहा :

"ओह ! कहाँ चले आये थे, तुम कुम्भ ?"

"यों ही घूमता हुआ इधर चला आया ?" कुम्भ ने कहा।

"इसने इस भयानक बाघ को मार डाला है।" भीलों में से एक ने कहा—"इस बाघ ने यहाँ बड़ा उत्पात मचा रखा था। हमारे कई ढोरों को खा गया। कई लोगों को घायल कर दिया।" वह रुका, फिर बोला—"यह बालक बड़ा बहादुर है। हम लोग भी बाघ का पीछा कर रहे थे। हमारे पहुँचने से पहले ही अकेले ने इस भयानक बाघ को मार डाला है। यह बड़ा बहादुर है !"

राठौर रणमल मुस्कराये। वे भीलों की बोली समझते थे। भीलों में से एक ने फिर पूछा :

"यह कौन है ?"

"इस देश का राजकुमार है।" रणमल ने उत्तर दिया।

"राजकुमार !" कुम्भ की ओर ध्यान से देखते हुए दूसरा भील बोला—"कौन राजकुमार ?"

"राजकुमार कुम्भकर्ण !" राठौर रणमल ने कहा।

"मेवाड़ के राणा मुकुलजी का बेटा कुम्भकर्ण !" तीसरे भील ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इतने में चार-पाँच सैनिक और राठौर रणमल भी वहाँ आ गये थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुछ सोचते हुए कहा—"राणा की तो हत्या कर डाली गई और वे लोग इसे...।"

वह आगे कुछ कहना ही चाहता था, कि दूसरे ने उसे चुटकी मारकर रोक दिया।

"वे लोग कौन—क्या?" राठौर रणमल ने कुछ समझते हुए कहा—"तुम कुछ कह रहे थे!"

"कुछ नहीं!" दूसरा बोला—"कुछ भी नहीं!" बात को टालने की कोशिश करते हुए दूसरा भील फिर बोला—"आप कौन हैं?"

"मैं मारवाड़ का राजकुमार हूँ—वहाँ का राजा। राजकुमार कुम्भ का मामा।"

"ओह मारवाड़ का राजा!" वह भील बोला—"वहाँ भी हमारी जाति के बहुत-से लोग रहते हैं।"

"तब तो हम लोग एक-दूसरे के मित्र हैं।" रणमल ने कहा। उनके दिमाग में बार-बार बच्चा और मैरा की बात घूम रही थी। उन्होंने बड़े प्रेम से पूछा—"क्या हमारी और आप लोगों की मित्रता नहीं हो सकती!"

"क्यों नहीं!" वह भील बोला—"आप हमारी बस्ती में चलिये! हमारे सरदार से मिलिये।"

राठौर रणमल ने कुछ सोचा। फिर कहा—"चलो!"

कुम्भ और सैनिकों को साथ लेकर वे लोग भीलों के पीछे चल दिये। थोड़ी ही दूर उनकी बस्ती थी। बस्ती क्या, इधर-उधर कुछ झोंपड़ियाँ बिखरी हुई थीं। उनके बीच में एक काफी खुला मैदान था। वहाँ इधर-उधर कई मशालें जल रही थीं। एक तरफ लकड़ी के बने तख्तों पर कुछ आदमी बैठे थे। उनमें से एक काफी मोटा-तगड़ा था। उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूंछें, सिर पर विशेष ढंग से पगड़ी बँधी हुई थी। वे भील उसके सामने जाकर खड़े हो गये। उन्होंने उस मूंछ वाले से कुछ कहा। हड़बड़ी में उठते हुए वह बोला:

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"हूं-उँ !" और फिर उसने बड़ गौर से रणमल और कुम्भ की तरफ देखा। दो क्षण बाद बोला—"आप मारवाड़ के राजा हैं ! पिछले साल होली पर मैं वहीं था। मैंने आपको देखा था। आइये, पधारिये !" और उसने तख्त पर बैठने का इशारा किया।

"तब तो हम लोग पुराने मित्र हैं।" बैठते हुए राठौर रणमल ने कहा। कुम्भ भी उनके पास बैठ गये। सैनिक इधर-उधर खड़े हो गये।

"हम लोग मारवाड़ के राजा और मेवाड़ के होने वाले राणा का स्वागत करते हैं। होने वाले राणा ने बाघ को मारकर हम सबकी रक्षा की है। अपना धर्म निभाया है, हम लोग अपना धर्म निभायेंगे।"

सभी मुस्कराये।

"आज हमारे यहाँ वसंत का उत्सव है।" वह मुखिया फिर बोला—"आप लोग सभ्य नागरिक हैं, हम लोग जंगली भील। आप लोगों को हमारा उत्सव पसन्द तो क्या आयेगा, पर फिर भी हमारी प्रार्थना स्वीकार कर हमारा उत्सव अवश्य देखें।"

"हम अवश्य देखेंगे।" कुम्भ ने प्रसन्नता से कहा।

"आज भोजन आदि से भी आप लोग हमारा अतिथि-सत्कार स्वीकार करेंगे। बिना खाये-पीये अतिथि देवता वापस लौट जाए, यह हमारी परम्परा के विरुद्ध है।"

"आपकी हर इच्छा का ध्यान रखा जायेगा, भीलराज !" कुम्भ ने कहा।

"भीलराज !" मुखिया ने प्रसन्नता से कहा—"भीलों ने हमेशा मेवाड़ का साथ दिया है। फिर एक राजा ही ऐसे शब्द कह सकता है।" कहते-कहते मुखिया ने अपने आदमियों को कुछ संकेत दिया।

ढम्-ढम्-ढम्-ढम् !

सहसा ढोल और मृदंग का स्वर गूंजने लगा। और भी कई प्रकार के बाजे बजने लगे। इधर-उधर से निकलकर भील युवक और युवतियाँ सामने वाले मैदान में मस्ती से नाचने-गाने लगे। कवि-हृदय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाले और संगीत-प्रमी कुम्भ को यह सब बड़ा अच्छा लगा। उनका मस्तक झूमने लगा।

काफी देर तक वह सामूहिक नृत्य-गान का कार्यक्रम चलता रहा। जैसे ही नृत्य-गान समाप्त हुआ, कुम्भ ने कहा :

"वाह ! वाह ! लगता था, जैसे स्वर्ग का आनन्द धरती पर उतर आया हो। इन नर्तकों और गायकों को हम चित्तौड़गढ़ आने का निमन्त्रण देते हैं। कहिये स्वीकार है हमारा निमन्त्रण !"

"अवश्य स्वीकार है।"

उसके बाद भोजन की व्यवस्था की गई।

भोजन करते हुए रणमल ने भीलों के मुखिया से कहा :

"हम मेवाड़ के राजकुमार स्वर्गीय राणा मुकुलजी के हत्यारों और देशद्रोहियों को दण्ड देने के लिए निकले हैं, भीलराज ! हमने सुना था कि मेवाड़ के राणा परिवार के विद्रोही सदस्य बच्चा और मैरा कुछ दिन यहाँ भी रहे थे ?"

"बच्चा और मैरा !" भील मुखिया ने सोचते हुए फिर कहा—"सुना था हमने भी, राठौर राज ! वे लोग भादेरिया में रह रहे थे। यहाँ भी आये थे। हमसे मेवाड़ के विरुद्ध सहायता भी चाही थी। हम लोगों ने उन्हें वचन भी दिया था।"

"क्या ?" कुम्भ का हाथ भाले पर चला गया।

"लेकिन अब विचार बदल गया है।" भील मुखिया ने एक क्षण रुककर कहा—"सदियों से हमारी पीढ़ियाँ मेवाड़ को अपने खून-पसीने से सींचती आ रही हैं। हम लोगों की मातृभूमि यही जंगल और पहाड़ी प्रदेश हैं। हम अपनी मातृभूमि के साथ विश्वासघात नहीं कर सकते। आप लोग विश्वास रखिये।"

"हूँ !" कुम्भ ने शान्त होते हुए कहा।

"और अब वे लोग कहाँ हैं ?" राठौर रणमल ने प्रश्न किया।

"यहाँ से वे लोग अरावली की तरफ चले गये थे। उनके साथ एक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अच्छी-खासी सैनिक टुकड़ी भी थी। यहाँ भादेरिया के एक समृद्ध भाट (चारण कवि) ने उनकी काफी सहायता की थी।"

"भाट!" कुम्भ के मुख से निकला—"मेवाड़ के गौरव और वीरता का गायन करने वाले भाट कवि भी देशद्रोहियों को सहायता दे सकते हैं!" कुम्भ गम्भीर हो गये। फिर बोले—"तो यह निश्चित है कि अब मेवाड़ राज्य में भाट कभी नहीं रहने पायेंगे—हरगिज़ नहीं!" कहते-कहते कुम्भ कुछ उत्तेजित हो उठे।

"हमें उन्हें किसी भी तरह पकड़ना है।" राठौर रणमल ने कहा—"आप हमारी क्या सहायता कर सकते हैं, भीलराज ?"

"हम आपको उस स्थान तक ले जा सकते हैं।"

"बहुत ठीक!" मुखिया की बात काटते हुए रणमल ने फिर कहा—"कल दिन निकलने से पहले हम लोग चल देंगे।"

"ठीक!" भील मुखिया ने कहा—"हमारे आदमी तब तक आपके पास पहुँच जायेंगे।"

भोजन समाप्त हुआ।

भीलराज की आज्ञा से कुछ लोग कुम्भ तथा रणमल आदि को उनके पड़ाव तक पहुंचा आये।

अगले दिन सूर्योदय से पहले ही वे लोग अरावली पर्वतमाला की ओर चल दिये।

कई दिन चलने के बाद उन्होंने अरावली के एक पठार पर डेरा डाला। वहाँ से पहाड़ियों के बीच बसी एक सुरक्षित गढ़ी नज़र आ रही थी। एक भील ने संकेत करते हुए कहा :

'वहाँ मिलेंगे आपको वें दोनों देश और कुलद्रोही !"

"ठीक है! रणमल ने कहा।

उसने कुँवर कुम्भ के साथ कुछ सलाह की। फिर एक सैनिक को निर्देश दिया।

सहसा बिगुल बज उठा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इनके सैनिकों ने चारों और से गढ़ी को घर लिया।

वहाँ भी हलचल होने लगी। बिगुल बजा। बच्चा और मैरा के सैनिक अपनी तलवारें, भाले तथा अन्य शस्त्र लेकर निकल आये।

एक बार फिर दोनों ओर से बिगुल बजा।

फिर सैनिक एक-दूसरे पर टूट पड़े। कुम्भ बड़ी वीरता से लड़ने लगा। सहसा उसकी दृष्टि बच्चा और मैरा पर पड़ी। उसने ललकारते हुए चुनौती दी :

"देशद्रोहियो! तुम्हें अपना काका कहते हुए मुझे शर्म आती है। उस दिन तो अभ्यास-युद्ध था। पर आज तुम लोगों को बता दूंगा कि देश और वंश-द्रोह की क्या सज़ा होती है!"

"तुम अभी बच्चे हो, कुम्भ!" बच्चा और मैरा ने कहा।

"सावधान!" भूखे शेर की तरह कुम्भ उन पर टूट पड़ा। उसकी तलवार का निशाना बच्चा पर पड़ा। वह कराहकर, चीख मारकर गिर पड़ा।

रणमल भी लड़ते-लड़ते वहाँ पहुँच गए। उन्होंने ललकारा :

"शाबाश कुम्भ!"

और कुम्भ ने एक और वार से मैरा को भी मार गिराया। वह ज़ोर से अट्टहास कर उठा—

"आहा-हा-हा-ह! देशद्रोहियो! तुम लोगों को नरक में भी स्थान नहीं मिलेगा।"

बच्चा और मैरा के गिरते ही, उनके बाकी सैनिक भाग खड़े हुए। बच्चा के दोनों बेटे एका और महपा भी माण्डू की तरफ भाग खड़े हुए। उस गढ़ी पर मेवाड़ का झण्डा लहरा, वहाँ की व्यवस्था कर, विजयी कुम्भ अगले ही दिन चित्तौड़गढ़ वापिस चल दिये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाँच

"महामन्त्री !"

"आज्ञा, महाराणा !"

महामन्त्री ने खड़े होकर अपने नये महाराणा कुम्भाजी का अभिवादन किया। आज ही उन्हें महाराणा के पद पर सम्मानित किया गया था। राज-दरबार ठसाठस भरा था। मेवाड़ के सभी सामन्त और सरदार वहाँ उपस्थित थे। राजस्थान की अन्य रियासतों के शासक भी आये हुए थे। द्वार पर अभी भी खुशी की शहनाइयाँ बज रही थीं।

"देश की सुरक्षा की व्यवस्था सबसे पहले होनी चाहिये!" महाराणा कुम्भा ने कहना शुरू किया—"उसके लिए हमारे दिमाग में बहुत दिनों से एक योजना काम कर रही है। हमारा विचार है कि देश के सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर मज़बूत घेराबन्दी की जाये। अनेक सुदृढ़ दुर्ग बनवाये जायें।"

"बड़ा अच्छा विचार है, महाराणा का !" कई सामन्त-सरदारों ने समर्थन किया।

"हमारी दृष्टि में अभी दो ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान हैं, महामंत्री !" राणा कुम्भा बोले—"कमलमीर का प्रदेश और आबू की पहाड़ियाँ ! वहाँ तो दुर्ग बनवाने का कार्य जल्दी आरम्भ हो ही जाना चाहिए।"

"कुम्भाजी ठीक कहते हैं।" चण्डजी ने कहा—"ये दोनों स्थान हमारी नजरों में भी बहुत दिनों से थे। इन दोनों दिशाओं से शत्रुओं के आक्रमण का भय हमेशा बना रहता है। आबू का पहाड़ी इलाका वैसे भी बड़ा सुन्दर और महत्त्वपूर्ण है। वहाँ तो ग्रीष्म-महल भी बनने चाहिएँ।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"कुंवर चण्डसिंह जी का विचार बहुत अच्छा है।" राठौर रणमल ने कहा—"आबू में ग्रीष्मकालीन राजधानी भी बन सकेगी। इससे वहाँ के लोग भी हमेशा सावधान रहा करेंगे। देश की सीमा-रेखा भी सुरक्षित हो जाएगी।

"और उचित स्थान भी जल्दी खोजे जायें जहाँ रक्षा के लिए दुर्ग-निर्माण का कार्य आरम्भ किया जा सके।" कुम्भा जी ने कहा।

"जल्दी ही ऐसा किया जायेगा, महाराणा !" महामन्त्री ने फिर कहा—"राज्य के सर्वेक्षण-विभाग को ऐसे स्थानों की खोज के लिए आज ही निर्देश दे दिए जायेंगे। देश की रक्षा पहले होगी, बाकी सब बाद में।"

"पर हम लोग अकेले तो यह सब न कर सकेंगे।" महाराणा कुम्भा बोले—"हमें राज-काज चलाने और व्यवस्थाएँ करने का कोई अनुभव नहीं। इसलिए हमारी इच्छा है कि आदरणीय काका चण्डजी पहले के समान ही मेरा पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे !"

"हमारे आशीर्वाद हमेशा कुम्भ के साथ हैं।" कुँवर चण्डजी ने कहा—"मगर पिताश्री महाराजा लाखाजी से की गई प्रतिज्ञा के अनुसार हम किसी राज-काज और राजनीति में भाग नहीं ले सकते ! अतः हमारी इच्छा है कि राठौर रणमल कुम्भ के बालिग होने तथा सारी व्यवस्थाएँ समझने तक राणा के संरक्षक बनकर काम करें।"

"काकाजी !" कुम्भाजी ने व्याकुलता से कहा।

"राणा बेटे !" चण्डजी ने कहा—"यही उचित है। हम अपनी मर्यादा में बँधे हैं। यदि हम ही लोग अपने वचनों और मर्यादाओं का पालन नहीं करेंगे, तो साधारण जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा ?"

राणा कुम्भा ने उनकी आज्ञा के सामने मस्तक झुका दिया।

"मन्त्रीजी !" चण्डजी फिर बोले—"राज-काज की प्रत्येक व्यवस्था राणा और राठौर रणमल की सलाह से होनी चाहिए !"

"ऐसा ही होगा, कुंवरजी !" महामन्त्री ने कहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"आपकी उदारता कभी भुलाई नहीं जा सकेगी, कुँवर साहब !" राठौर रणमल ने कहा।

"देश का सिपाही बने रहने में जो गौरव है, वह शासक बनने में नहीं है, राठौर !" चण्डजो बोले—"मैंने बचपन से लेकर आज तक इसी व्रत को पाला है, अन्तिम क्षण तक पालता रहूँगा। मातृभूमि से, यहाँ की जनता की सुख-समृद्धि से बढ़कर हमें कुछ भो प्रिय नहीं !"

"धन्य हैं आप !" सभी ने एक साथ कहा।

उसके बाद नये राणा को सामन्तों तथा सरदारों द्वारा देश के प्रति वफादार रहने के आश्वासन दिये जाते रहे। राजस्थान की अन्य रियासतों से आये शासकों तथा उनके प्रतिनिधियों ने भी मेवाड़ के प्रति सम्मान-भाव रखने के भाव प्रकट किये।

राणा कुम्भा राठौर रणमल से कुछ क्षणों तक कुछ विचार-विमर्श करते रहे। फिर बोले :

"जब तक देश में सुरक्षा की व्यवस्था नहीं हो जाती, मारवाड़ राज्य की सुशिक्षित सेना यहीं पर रहेगी। उसे मेवाड़ की सेना के समान ही मान तथा अधिकार प्राप्त रहेंगे। राठौर रणमल जी उसका संचालन करेंगे !" एक क्षण रुककर कुम्भाजी ने फिर कहा—"पिछले काफी दिनों से देश में कुछ अव्यवस्था-सी फैल रही है। हमें आशा है कि आप लोग अपने-अपने इलाकों में जाकर स्थिति को सँभालने और दृढ़ बनाने का प्रयत्न करेंगे। अपने इलाके में शान्ति और स्थिरता बनाये रखना बहुत बड़ी देश-सेवा है।

"ऐसा ही होगा, महाराणा !" सभी ने आश्वासन दिया।

"हमें पता चला है कि दो देशद्रोहियों ने मालवा की राजधानी माण्डू में शरण ले रखी है। उन दोनों देशद्रोहियों का सम्बन्ध मेवाड़ के राज-परिवार से ही है।" कहते-कहते राणा कुछ उत्तेजित हो उठे—"देशद्रोही कितना भी बड़ा क्यों न हो, किसी भी परिवार से उसका सम्बन्ध हो, क्षमा नहीं किया जा सकता।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ऐसा ही होगा, महाराणा !" सभी ने आश्वासन दिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"आप ठीक कहते हैं, महाराणा !" अनेक स्वर सुनाई दिये—"उन देशद्रोहियों के नाम बताये जायें !"

"उनके नाम हैं एका और महपा।" महाराणा कुम्भा ने सिर झुकाते हुए कहा—"हमें यह कहते हुए दुख हो रहा है कि दोनों देशद्रोही रिश्ते में हमारे भाई हैं ! वे हमारे देशद्रोही काका (बच्चा) के बेटे हैं। आप लोग तो जानते हैं कि बच्चा और मैरा को तो अरावली पर्वतमाला में देशद्रोह का दण्ड दिया जा चुका है। उनके बेटों के बारे में जो सलाह आप लोग देंगे, वही किया जायेगा।"

"मालवा के सुल्तान से उन्हें वापस माँगा जाए। यदि वह इन्कार करे, तो उसे भी दण्ड दिया जाए।" एक सामन्त ने कहा—"यों भी मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी मेवाड़ के प्रति अच्छा विचार नहीं रखता। उसके सैनिक सीमाओं पर छेड़खानी करते रहते हैं।"

"ठीक है।" कुम्भा जी ने कहा—"यही किया जायेगा।" वे महामन्त्री की ओर मुड़कर बोले—"महामन्त्री !" मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी के नाम पत्र लिखा जाए। उसे एक मास के भीतर एका और महपा को सौंप देने को कहा जाए।"

"जो आज्ञा, महाराणा !" महामन्त्री ने कहा।

"और हाँ !" महाराणा फिर बोले—"अरावली के भाटों ने बच्चा और मैरा जैसे देशद्रोहियों को अपने यहाँ शरण दी थी। और भी समाचार मिले हैं कि ये चारण और भाट (कवि) कुछ उद्दण्ड हो गये हैं। लोभ-लालच में पड़ गये हैं। इसलिए हमारी आज्ञा है कि उन्हें मेवाड़ राज्य से निकाल दिया जाय।"

"ऐसा कभी नहीं हुआ, महाराणा !" एक सामन्त ने विरोध करते हुए कहा—"चारण और भाट हमेशा से इस देश के गौरव के गायक रहे हैं। एक के कारण सभी को देश-निकाला देना उचित नहीं। वे कवि हैं, कलाकार हैं ! कला किसी भी देश के गौरव की थाती होती है।"

"कवि, कला और कलाकार के लिए हमारे मन में कितना सम्मान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है, शायद आपको पता नहीं, सरदार !" राणा बोले—"पर कला और कलाकार जब देश को जगाने, उसकी भावना को सजाने-सँवारने के स्थान पर अपने ही स्वार्थ में लग जायें, तो···? हमें ऐसे अनेक प्रमाण मिले हैं, जिनसे पता चलता है कि भाट आज अपने कर्त्तव्य को भूल चुके हैं। कर्त्तव्य-ज्ञान और उसके लिए कठोरता का अनुशासन राजनीति के समान कला-क्षेत्र में भी आवश्यक है।

"तब ठीक है, महाराणा !" वह सामन्त बोला।

"सारे मेवाड़ में चारणों और भाटों के विरुद्ध हमारी आज्ञा प्रचारित की जाए। जो वास्तव में सच्चे और राष्ट्र-प्रेमी कलाकार होंगे, उन्हें राज्य की ओर से उचित आश्रय दिया जाएगा।" महाराणा कुम्भा ने कहा।

"ऐसा ही होगा, महाराणा !" मन्त्री ने कहा।

"आज से ठीक तीसरे दिन हम लोग अहेरिया (सम्मिलित शिकार खेलने) का उत्सव मनायेंगे।" कुम्भाजी ने कहा—"आप सब लोग उसके लिए सादर निमन्त्रित हैं।"

"महाराणा की जय !" तभी एक द्वारपाल ने आकर कहा—"महाराणा, भादेरिया के पास वाली भील बस्तियों के कुछ लोग दरबार में आने की आज्ञा चाहते हैं।"

"भादेरिया की भील-बस्तियाँ।" कुम्भाजी ने राठौर रणमल की तरफ देखा—"ये वही लोग हैं शायद, जिन्होंने हमें विद्रोहियों का स्थान बताया था !"

"आपने उन्हें राजधानी में आने का निमन्त्रण भी दिया था, महाराणा !" राठौर रणमल ने कहा।

"उन्हें आने दिया जाए !" राणा ने कहा।

"जो आज्ञा।" झुककर प्रणाम कर द्वारपाल चला गया। कुछ देर बाद ही मुखिया के साथ भीलों की एक टोली ने प्रवेश किया।

"महाराणा की जय।" मुखिया ने कहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"जय भगवान एकलिंग !" कुम्भाजी ने कहा—"आओ, मुखियाजी ! मेवाड़ आप लोगों का स्वागत करता है। इनके बैठने की व्यवस्था की जाए !"

आदेश पाते ही उन्हें बैठने के लिए उचित आसन और स्थान दे दिये गये।

भील अपने साथ अनेक प्रकार के जंगली फल-फूल लाये थे। मुखिया ने वे सब महाराणा के सामने रखते हुए कहा :

"राजतिलक के शुभ अवसर पर जंगलियों की यह तुच्छ-सी भेंट स्वीकार करें, महाराणा !"

"आप लोगों का यह मित्रता-भाव हमेशा बना रहे। इन वस्तुओं को प्रेम और भाईचारे की भेंट मानकर हम अवश्य स्वीकार करेंगे, मुखियाजी !" कुम्भाजी ने कहा। फिर मन्त्री की तरफ देखकर बोले—"हमारी ओर से मुखियाजी को एक सरोपा (पगड़ी आदि) तथा तलवार भेंट की जाए।"

तत्काल आज्ञा का पालन किया गया।

"यह पगड़ी केवल मेवाड़ की आन और महानता के सामने झुकेगी। यह तलवार केवल देश की रक्षा में ही उठेगी, महाराणा !" मुखिया ने दोनों वस्तुएँ झुककर लेते हुए कहा। वह फिर बोला—"राजतिलक के शुभ अवसर पर हम लोग अपने नृत्य-गान का उत्सव मनाना चाहते हैं, महाराणा !"

"हम उसमें अवश्य भाग लेंगे।"

दिन बीता।

रात को सारा चित्तौड़गढ़, सारा मेवाड़ और राजस्थान नये महाराणा के राज्याभिषेक की खुशी में जगमगा उठा। प्रत्येक नगर और गाँव में दीपमालाएँ जलाई गईं। चित्तौड़गढ़ के किले में, राजभवन के सामने रात-भर भीलों का नृत्य-गान होता रहा।

अगले दिन से सारे काम निश्चित योजना के अनुसार होने लगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उधर महाराणा का दूत पत्र लेकर मालवा की राजधानी माण्डू पहुँचा। उस समय सुल्तान महमूद खिलजी अपने दरबार में ही बैठे थे। दरबार में राग-रंग, नृत्य-गान का कार्यक्रम चल रहा था। मेवाड़ के दोनों विद्रोही एका और महपा भी एक तरफ बठे थे। नृत्य-गान की समाप्ति के बाद सुलतान महमूद ने एका और महपा की तरफ देखा:

"कहिये राजकुमार! पसन्द आया नाच?"

"क्यों नहीं, सुलतान!" एका ने कहा—"यही तो ज़िन्दगी है! सचमुच यहाँ आकर ही हमने ज़िन्दगी का अच्छा रंग और आनन्द देखा है। एक वह है हमारा देश!"

"बड़ा रंगीला है आप लोगों का देश, बड़ा गुलजार भी! अगर वह मालवा राज्य का एक हिस्सा बन जाये, तो फिर हमारी तरफ संसार की कोई शक्ति आँख उठाकर न देख सके।" सुलतान ने कहा। वह फिर कहने लगा—"सुना है, वहाँ के लोग बड़े बहादुर होते हैं! वहाँ के खेत सोना उगलते हैं, पहाड़ों में सोने और हीरों की खानें हैं!

"वह सब कुछ तो है ही सुलतान हुजर!" महपा ने कहा—"पर उन्हें कोई भोगने वाला नहीं। वहाँ की ज़िन्दगी बँधी-बँधाई है। नियम और अनुशासन के नाम पर लोगों को बाँध कर रख दिया गया है। ज़मीन और ईटों को मातृभूमि या माँ का नाम देकर, उसी की रक्षा के लिए मर-मिटने का उपदेश दिया जाता है और उस पर अपनी महानता का ढिंढोरा दुनिया भर में पीटा जाता है।"

"इसे महानता तो मानना ही पड़ेगा, राजकुमार!" सुलतान महमूद ने कहा—"राष्ट्रों और जातियों का इतिहास तो इस प्रकार के अनुशासन से ही बना करता है।"

"वह···वह तो ठीक है, सुलतान!" महपा ने झेंपते हुए कहा—"पर है तो सब कुछ इनसान के लिए ही न! वहाँ इन्सान की कद्र नहीं! तभी तो हमें आपसे दोस्ती करने के लिए आना पड़ा।"

"हूँ!" सुलतान ने गौर से दोनों भाइयों की तरफ देखा—"हम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आप लोगों की दोस्ती की भावना की पूरी कद्र करते हैं। मेवाड़ के इस सोना उगलने वाले इलाके को अपना बना लेने की हमारी बहुत इच्छा है।"

"तो अब इस इच्छा को पूरी कर डालिए न, सुलतान!" एका ने कहा—"हम आपके साथ हैं!"

तभी एक द्वारपाल ने प्रवेश किया। वह झुकते हुए बोला :

"मेवाड़ के राणा कुम्भाजी का एक दूत हुजूर की सेवा में हाज़िर होना चाहता है। जो हुक्म दें!"

"मेवाड़ के राणा का राजदूत!" आश्चर्य से सुलतान बोला।

"क्या—आ?" एका और महपा का रंग उड़ गया।

सुलतान महमूद ने उन दोनों की तरफ देखा। घबराये स्वरों में वे दोनों बोले :

"हमारी रक्षा कीजिये, सुलतान! वह बड़ा ज़ालिम है। हम बड़ी उम्मीद लेकर आपके पास आये हैं।"

"दूत से मिलना तो होगा ही!" कहकर सुलतान ने अपने द्वारपाल से कहा—"उसे आने दो!"

द्वारपाल चला गया।

कुछ ही क्षणों बाद मेवाड़ के दूत ने प्रवेश किया। उसने दरबारी ढंग से सुलतान का अभिवादन किया।

"हमारे महाराणा ने आपके नाम यह पत्र दिया है।" कहकर दूत ने एक पत्र सुलतान को दे दिया।

सुलतान पत्र पढ़ने लगे। पत्र पढ़ते-पढ़ते उनकी त्यौरियों पर बल पड़ गये। बोले :

"उस कल के छोकरे की इतनी हिम्मत! वह हमें धमकी देना चाहता है! हम एका और महपा को उसके हवाले कर दें, नहीं तो एक महीने के बाद हमें इसका दण्ड भुगतना पड़ेगा—हूँ!" सुलतान कुछ गम्भीर हो गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"मेरे लिए क्या आज्ञा है, सुलतान ?" मेवाड़ के दूत ने फिर पूछा।

"आज्ञा !" सुलतान बोला—"अपने महाराणा से जाकर कह दो, हम उसके हुक्म के गुलाम नहीं हैं ! उसकी धमकी का उत्तर केवल तलवार से ही दिया जा सकता है !"

"तो यही आपका उत्तर है ?" दूत ने पूछा।

"बिल्कुल यही !" सुलतान ने दृढ़ता और गुस्से से कहा।

"ठीक है।" कहकर मेवाड़ का दूत चला गया।

सभा में सन्नाटा छा गया।

एका और महपा के चेहरों पर एक रंग आ रहा था और एक जा रहा था !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

छः

सारंगपुर के पास !

एक जंगलों से घिरा मैदान। चारों ओर सैनिक शिविर लगे थे। महाराणा कुम्भा पूर्णतया सैनिक वेश में सजे हुए थे। वे अपने शिविर में गम्भीर भाव से इधर-उधर घूम रहे थे। तभी युवक सेनापति ने प्रवेश किया।

"क्या समाचार हैं, सेनापति ?"

एकाएक रुकते हुए कुम्भाजी ने पूछा। उनका चेहरा काफी गंभीर तथा उदास था।

"मालवा की सेना अब कुछ ही दूर है, महाराणा !" सेनापति ने कहा—"उसका पथ-प्रदर्शन विद्रोही और देशद्रोही एका तथा महपा ही कर रहे हैं। मेरे विचार में सुलतान महमूद को यहीं घेरना उचित होगा।"

"हमारा भी यही विचार है।" कुम्भाजी ने कहा और फिर वहीं टहलने लगे।

"क्या बात है, महाराणा ? आप कुछ चिन्तित दिखाई दे रहे हैं ?" सेनापति ने कुछ रुकते हुए कहा—"शायद रात को ठीक प्रकार सो नहीं सके !"

"ठीक कहते हो, सेनापति।" राणा ने रुकते हुए कहा—"रह-रह कर काका चण्डजी की गम्भीर और गौरवपूर्ण आकृति मेरे दिल-दिमाग में बिजली के समान कौंध जाती है। लगता है, जैसे मेरे जीवन की सबसे महान् प्रेरणा-शक्ति मुझसे छिन गई है। उनके बिना मुझे अपना जीवन एकदम अधूरा और अपूर्ण लगता है।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"वे थे ही एक महान् व्यक्ति !" सेनापति ने कहा—"हम सब आज जो स्वतन्त्र वातावरण में साँस ले पा रहे हैं, उन्हीं की वीरता और शूरता के कारण ही है, महाराणा !"

"पिताश्री के स्वर्गवास पर हमें उतना दुःख नहीं हुआ था, सेनापति !" राणा के नयन सजल हो गये—"तब काका चण्डजी जीवित थे, उनकी बातों ने मुझे नया उत्साह प्रदान किया। पर आज ? काका चण्डजी के अभाव में जैसे जीवन सूना होकर रह गया है।" एक-दो क्षण मौन रहने के बाद कुम्भाजी ने कहा—"रात सपने में उन्हें देखा। उन्होंने मुझे एक तलवार, एक वीणा, एक कलम और एक छैनी देते हुए कहा, इन्हें सँभालकर रखना। मैं उनकी इच्छा समझ नहीं पा रहा हूँ, सेनापति !"

"ये सभी तो शुभ वस्तुएं हैं, महाराणा !"

"ठीक कहते हो, सेनापति !" राणा ने तनिक जोश के साथ फिर कहा—"स्वर्गीय काकाश्री की प्रत्येक इच्छा को पूरा करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य होगा। शूरता, कला, साहित्य और राष्ट्र का निर्माण, इन्हीं में अपना जीवन होम (बलिदान) कर दूंगा !"

डम् ! डम् ! डम् !

तभी बड़े ज़ोर-ज़ोर से नगाड़ा बजने लगा !

"महाराणा की जय !" एक सैनिक ने भागते हुए प्रवेश किया।

"तलवारों की छाया में पलने वाले, राजपूत !" राणा ने शूरता के भाव से कहा—"इतने घबराये हुए क्यों हो ?"

"मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी की सेनाएँ बहुत करीब आ गई हैं, महाराणा !"

"ठीक है ! शान्ति से जाओ। हम देखते हैं।" राणा का आदेश पाकर वह सैनिक चला गया। राणा ने सेनापति से कहा—"तो काका जी की एक इच्छा पूरी करने का अवसर आ गया है, सेनापति ! जल्दी से जाकर अपनी योग्यता के अनुसार सारंगपुर के चारों ओर नाकेबन्दी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

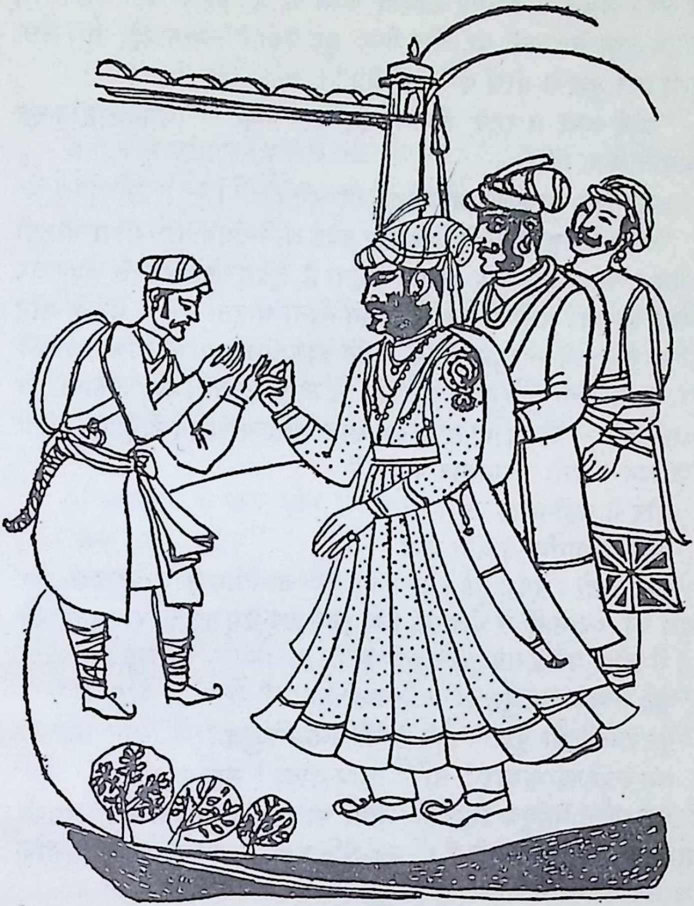

"मालवा के सुलतान महमूद खिलजी की सेनाएं बहुत करीब आ गई हैं, महाराणा !"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर लो। जब शत्रु अपनी छावनी डाल दे, तो पहले उसे ललकारो, चुनौती तथा चेतावनी दो और फिर टूट पड़ो! ध्यान रहे, हम लोग पहली बार युद्ध के मोर्चे पर आये हैं।"

"कोई कमी न रहने दी जायेगी, महाराणा!" नमस्कार करके सेनापति चला गया।

महाराणा कुम्भाजी अकेले टहलने लगे।

"कैसी है यह जिन्दगी! आत्मा कोई आनन्दमय गीत गाना चाहती है, मन इच्छाओं का नृत्य देखना चाहता है, हृदय वीर-भाव से फड़ककर वीरता का कोई अनोखा चमत्कार बन जाना चाहता है!" वे रुके और फिर टहलने लगे—"कुछ भी हो, आने वाला युग हमारी साधनाओं की ओर, हमारे कार्यों की ओर उँगलीं न उठा सकेगा। क्या पढ़ाया था शिक्षा-गुरु ने —जीवन की सफलता अपना कर्त्तव्य पालने में ही है! ठीक है, कर्त्तव्य···कर्म···लगातार कर्म!"

और वे वहीं घूमते रहे।

वह दिन शान्ति मे बीत गया।

रात बीती। सुबह हुई। सारंगपुर के आसपास के जंगल शंख और बिगुल की ध्वनियों से गूँज उठे। नगाड़ा ढम्-ढम् करके राजपूतों की नसों में जोश भरने लगा।

युद्ध! भयानक युद्ध!

दूसरे दिन भी युद्ध! पहले से भी भयानक युद्ध!

तलवारों की झंकार! नारे! हाय-तौबा! मार-काट!

"सुलतान महमूद खिलजी भागा जा रहा है, महाराणा! उसकी सेनाओं के पैर उखड़ गये हैं।" एक सैनिक ने आकर सूचना दी—"वह प्राण बचाकर भाग जाना चाहता है।"

"क्या?" भयानकता से युद्ध करते हुए वीर कुम्भाजी की तलवार रुकी—"सेनापति से कहो, उसका पीछा करें। नहीं, ठहरो! हम स्वयं उसका पीछा करेंगे। सेनापति से कहो, वे सारी सेना को लेकर हमारे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पीछे-पीछे आयें। मातृभूमि का अपमान करने वालों को यों ही बचकर नहीं जाने दिया जा सकता !"

और राणा ने अपने घोड़े जो एड़ लगा दी।

सैनिकों की एक टोली भी उनके पीछे हो ली।

आगे-आगे सुल्तान खिलजी और उससे दो-तीन मील पीछे राणा की सेना और वे स्वयं निरन्तर भागे जा रहे थे।

मालवा प्रदेश आ गया।

राजधानी माण्डू आ गई।

"ठहर जाओ!" राणा कुम्भा ने अपने सैनिकों को रोकते हुए कहा—"यों ही आगे बढ़ना उचित नहीं। सुलतान अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ माण्डू के किले में घुस चुका है। हमारी सेना बहुत पीछे रह गई है। उसे आ लेने दो। हार-जीत का निर्णय किये बिना हम लौटना नहीं चाहते।"

सैनिक राणा के पास पहुँच रुक गये।

"ढम्! ढम्! ढम्!"

माण्डू के दुर्ग के भीतर ज़ोर-ज़ोर से नगाड़ा बजने लगा। चारों ओर से भगदड़ के स्वर सुनाई देने लगे।

"क्या हुआ?" भागते हुए माण्डू निवासी पूछ रहे थे।

"सुलतान सारंगपुर के पास से भाग आये। राजपूत राणा कुम्भा की सेना पीछा करते हुए आ रही है—अरे भागो! किले के भीतर चलो!"

देखते ही देखते आस-पास के सभी लोग दुर्ग में पहुँच गये। दुर्ग के फाटक बन्द हो गये।

तब तक राणा की सेना भी आ पहुँची।

"घेर लो चारों ओर से दुर्ग को!" राणा कुम्भा ने आदेश दिया। वह फिर बोले—"माँ के दूध का बदला चुकाने का अवसर आ पहुंचा है। मेवाड़ के देशद्रोहियों को शरण देने वाले इस दुर्ग की ईंट से ईंट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बजा दो।"

कुम्भाजी की सेना ने माण्डू के दुर्ग के चारों ओर घेरा डाल दिया।

दो-चार दिन के घेरे ने ही शत्रुओं के हौंसले गिरा दिये। क्योंकि उन्हें इस बात की बिल्कुल आशा न थी, कि मेवाड़ की सेना पीछा करती हुई यहाँ तक आ पहुँचेगी। किले के भीतर खाद्य सामग्री का बिल्कुल अभाव था।

खिलजी के सैनिक फाटक खोलकर, नारे लगाते हुए राजपूतों पर टूट पड़े। पीछे से उनकी दूसरी सैनिक टुकड़ी भी आ गई। घमासान युद्ध होने लगा। कुम्भाजी ललकार-ललकार कर शत्रुओं का संहार करने लगे।

देखते ही देखते मैदान साफ हो गया।

राणा और उनके सैनिकों ने किले के भीतर घुसकर सुलतान महमूद खिलजी को कैद कर लिया।

"महाराणा कुम्भ जी की जय!"

"जय!"

चारों ओर जय-जयकार होने लगा।

दो-चार दिन वहाँ रहकर राणा ने सारी व्यवस्था की। उसके बाद कैदी सुल्तान महमूद को साथ लेकर वे चित्तौड़गढ़ वापिस आ गये।

देशद्रोही एका और महहा का कुछ पता न चल सका।

छः महीने बीत गये।

महाराणा कुम्भाजी राजदरबार में बैठे थे! राठौर रणमल तथा अन्य सामन्त-सरदार भी वहाँ उपस्थित थे।

"मालवा की इस विजय को हम स्थायी बनाना चाहते हैं।" राणा कुम्भा कहने लगे—"यह हमारी पहली विजय है। हम चाहते हैं कि यह विजय हमें जीवन-भर प्रेरणा देती रहे। हमें ही नहीं, देश की आने वाली पीढ़ियाँ भी इस विजय से प्रेरणा लेकर राष्ट्र की आन की रक्षा के लिए विजय के मार्ग पर अग्रसर होती रहें!"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"बड़े अच्छे विचार हैं, महाराणा !" कई सभासदों ने एक साथ कहा—"विजय का कोई प्रतीक होना चाहिए।"

"प्रतीक ! यादगार !" कहते हुए कुम्भाजी कुछ गम्भीर हो गये। दो-चार क्षणों बाद फिर बोले—"एक विचार है। क्यों न चित्तौड़गढ़ के किले में विजय का प्रतीक एक स्तम्भ बनाया जाए—विजय स्तम्भ !"

"अवश्य, महाराणा !" एक सामन्त ने कहा—"एक ऊँचा स्तम्भ ! वीरता और विजय की भावना के अनुरूप ही उच्च तथा विशाल !"

"ठीक है !" कुम्भाजी ने मन्त्री की तरफ देखा—"महामन्त्री, स्तम्भ के लिए उचित स्थान देखकर शीघ्र ही निर्माण-कार्य आरम्भ हो जाना चाहिए।"

"लेकिन मुझे आपत्ति है।" राठौर रणमल ने कहा—"इस सामान्य-सी विजय को लेकर स्तम्भ खड़ा करने से क्या लाभ ? यह तो यों ही देश का धन तथा समय बरबाद करना है।"

"क्या ?" राणा ने चकित भाव से राठौर रणमल की तरफ देखा। फिर बोले—"राठौर ने हमारी प्रत्येक बात का विरोध करने का शायद निश्चय कर लिया है। वे स्मारकों का महत्त्व भी नहीं समझते। उन्हें पता नहीं कि ऐसी यादगारें देश की वीरता के इतिहास के पड़ाव होती हैं। वे युगों-युगों तक देश-रक्षा के पवित्र कार्य की याद दिलाती रहती हैं। इसलिए विजय-स्तम्भ अवश्य बनेगा !"

राठौर रणमल कुढ़कर रह गये।

दिन बीतने लगे।

विजय-स्तम्भ दिन-प्रतिदिन ऊपर उठता गया।

महाराणा कुम्भा अब पूर्ण युवक हो चुके थे। झालवाड़ के नरेश की सुपुत्री से उनका विवाह भी हो गया था। मालवा विजय के कोई छः मास बाद उनके यहाँ राजकुमार उदयकर्ण (ऊदाजी) का जन्म हुआ।

पुत्र-जन्म के इस अवसर पर बधाई देने के लिए विशेष दरबार का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आयोजन किया गया।

प्रायः सभी से बधाइयाँ बटोर लेने के बाद महाराणा कुम्भा ने प्रसन्नता से कहा :

"आप सबने जो बधाई-सन्देश दिये हैं, उसके लिए मैं अपनी तथा राणा-परिवार की ओर से सबको धन्यवाद देता हूँ। इस बात का विश्वास दिलाता हूँ, कि समय पड़ने पर देश, उसकी मर्यादा और सम्मान रक्षा के लिए मैं अपना सब-कुछ दाँव पर लगा दूँगा। मेरी यह पहली सन्तान भी देश के लिए अर्पित है।"

"आप धन्य हैं, महाराणा!" अनेक स्वर सुनाई दिये।

"महाराणा कुम्भा की..."

"जय!"

काफी देर तक जय-जयकार होता रहा।

"एक और बात आप लोगों से कहना चाहता हूँ।" शान्ति होने के बाद राणा कुम्भा ने फिर कहा—"मालवा का सुलतान लगभग आठ महीने से यहाँ बन्दी है। राजकुमार उदयकर्ण के जन्मोत्सव पर उसने भी बधाई का सन्देश भेजा है। साथ ही वह मेवाड़ के साथ सन्धि भी करना चाहता है।"

"तो उसके होश ठिकाने आ गये!" एक सामन्त ने कहा।

"भविष्य में वह मेवाड़ का पक्का मित्र बनकर रहना चाहता है।" महाराणा कुम्भा ने कहा—"मेरा विचार है, सुलतान की इच्छा पूरी की जाए। मेवाड़ ने मित्रता के लिए बढ़े हाथ का हमेशा सम्मान किया है"

"इसके बदले में वह मेवाड़ को क्या देगा, महाराणा?" राठौर रणमल ने विरोध-सा प्रकट करते हुए पूछा।

"लेना-देना कैसा, राठौरजी!" महाराणा बोले—"वह केवल सन्धि नहीं, बल्कि मित्रता चाहता है। मित्रता का आधार हमारे विचार में लेन-देन तो कभी नहीं रहा, न रहना ही चाहिए।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाराणा ठीक कहते हैं।" अनेक दरबारियों ने कहा।

"महाराणा का संरक्षक होने के नाते मैं इस बात का विरोध करता हूँ। मुझे इन सुलतानों पर तनिक भी भरोसा नहीं। बिना किसी प्रकार का दण्ड लगाए, सुलतान को छोड़ना गलती होगी।" राठौर रणमल ने कहा।

"मित्रता दण्ड या दवाव से नहीं हुआ करती, राठौर सरदार!" कुम्भाजी ने कहा—"हिसाब-किताव और मित्रता के सम्बन्धों में ज़मीन-आसमान का अन्तर होता है। विश्वास को विश्वास से ही जीता जा सकता है। सुलतान ने उचित दण्ड देने की बात भी कहलवाई है, पर जब वह मित्रता करना चाहता है, तो हमने किसी भी प्रकार का दण्ड न देने का निश्चय किया है।"

"मैं ऐसा नहीं होने दे सकता!" राठौर रणमल ने दृढ़ता से कहा "आप ऐसा नहीं कर सकते, राणा!"

"राठौर सामन्त रणमल जी!" महाराणा कुम्भा ने तनिक क्रोध से कहा—"स्वर्गीय काका चण्डजी ने आपको मेरा संरक्षक नियुक्त किया था, आप मेरे आदरणीय रिश्तेदार भी हैं। पर इसका यह अर्थ नहीं कि आप हमारी प्रत्येक वात का विरोध करते रहें। अब हम इतने समर्थ हो चुके हैं कि उचित-अनुचित सोच सकें। केवल विरोध के लिए विरोध, या वड़प्पन जताने के लिए विरोध की प्रवृत्ति और राजनीति देश के लिए कभी भी अच्छी नहीं हुआ करती।"

"यह मेरा अपमान है!" राठौर रणमल ने कहा।

"सीमाएँ सबके लिए समान हैं, राठौर सरदार!" राणा ने उनकी ओर देखते हुए कहा—"हाँ, तो मेवाड़ के वीर साथियों! हमने मालवा के सुलतान के साथ मित्रता करने का निश्चय किया है। आप लोगों की क्या राय है?"

"मित्रता के लिए वढ़े हाथ को ठुकराया नहीं जा सकता, महाराणा!" एक सरदार ने कहा—"शत्रु को भी मित्र बनाना, यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुत बड़ी उदारता है। हमारी परम्परा है। यदि कल तक का शत्रु सच्चे मन से मित्रता चाहता है, तो हमें उदारता से काम लेना चाहिए।"

"तो ठीक है!" महाराणा ने महामन्त्री की तरफ देखा—"महामन्त्री, सुलतान को सम्मान के साथ दरबार में लाने की व्यवस्था की जाए।"

"जो आज्ञा महाराणा!" कहकर महामन्त्री ने एक अन्य सरदार की ओर देखा। फिर वे दोनों कुछ बातचीत करते हुए चले गये।

कुछ क्षणों तक सन्नाटा छाया रहा।

"मेवाड़ के देशभक्तो!" सन्नाटे को भंग करते हुए महाराणा कुम्भा ने फिर कहना आरम्भ किया—"आप लोग आज की परिस्थितियों से अपरिचित नहीं। देश में चारों तरफ असुरक्षा की भावना है। देश की सीमाओं पर भी अनेक खतरे हैं। उधर दिल्ली में लोदी खानदान की कट्टरता तो आपको मालूम हो है। सुना है, उसने ग्वालियर राज्य के किले नरवर को बिल्कुल तहस-नहस कर डाला है। वहाँ की कलात्मक मूर्त्तियों तक को नहीं रहने दिया। पता नहीं, कला का अपमान करके इनको क्या मिलता है?"

राणा क्षणभर चुप रहकर फिर बोले—"उधर गुजरात के सुलतान की इच्छाएँ भी बड़ी-बड़ी दिखाई देती हैं। हम चाहते हैं कि सारे राजस्थान को मेवाड़ की छाया में एक सुसंगठित शक्ति के रूप में खड़ा किया जाये। इसके लिए हमें सभी देशवासियों से मिलना होगा, उन्हें संगठित करना होगा। हम एक विशाल सेना का भी निर्माण करना चाहते हैं, जो किसी भी क्षण शत्रुओं से लोहा ले सके। कहिये आप लोग सहमत हैं?"

"हम सब सहमत हैं, राणा!" सभी सभासदों ने कहा।

"हमने प्रसिद्ध स्थानों पर सुदृढ़ दुर्ग बनाने का भी निश्चय किया था। ऐसे ब्त्तीस स्थान चुने गये हैं, जो सैनिक दृष्टि से विशेष महत्त्व-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्ण हैं। उनमें से अनेक स्थानों पर दुर्ग-निर्माण का काय जारी हो चुका है। बाकी स्थानों पर भी शीघ्र आरम्भ हो जायेगा। हमने प्रजा की सुविधा के लिए अनेक कुएँ खुदवाने का आदेश भी दिया है। हम चाहते हैं, कि देश सभी दृष्टियों से सुखी, समृद्ध और सुरक्षित हो। पर यह तभी हो सकेगा, जब हम केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीना सीखेंगे।"

"धन्य ! धन्य, महाराणा !" अनेक स्वर सुनाई दिये।

तभी एक द्वारपाल ने प्रवेश किया। मस्तक झुकाकर बोला :

"महाराणा की जय ! द्वार पर राजकुमार एका और महपा खड़े हैं। वे लोग क्षमा-याचना के लिए सेवा में उपस्थित होना चाहते हैं।"

"एका और महपा !" महाराणा गम्भीर हो गये।

"वे देशद्रोही बच्चा के बेटे !" राठौर रणमल ने बीच में बोलते हुए कहा—"देश उन्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता। मातृभूमि ऐसे कुल-कलंकों को कभो आश्रय नहीं दे सकती।"

"आप भूल कर रहे हैं, राठौर सरदार !" महाराणा कुम्भा ने कहा—"देश और मातृभूमि की इतनी संकुचित व्याख्या न कीजिये। माँ किसका अपराध क्षमा नहीं करती ? माँ का भटका हुआ बेटा यदि सच्चे मन से एक बार 'माँ !' कहकर पुकार दे, तो यह हो ही नहीं सकता कि वह उसे हृदय से न लगा ले !"

"यह कोरा आदर्श मुझे पसन्द नहीं !" राठौर रणमल ने कुछ खीझते हुए कहा—"यह भावुकता है !"

"चलो, भावुकता ही सही।" महाराणा बोले—"कम से कम संकीर्णता तो नहीं ! याद रखिये राठौर, संकीर्णता सब बुराइयों की जड़ है। वह सारे देश का सत्यानाश कर करती है !"

"यह महाराणा का मोह और अहंकार बोल रहा है !" राठौर रण-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मल ने उपेक्षा से कहा।

"क्या-आ ?" कुम्भाजी का स्वर कुछ लम्बा हो गया। एक क्षण के मौन के बाद वे फिर बोले—"लगता है, राठौर, उदार मानवता की भावना पर संकीर्णता का प्रतिबंध लगाना चाहते हैं। अगर भूल न करता हो, तो मनुष्य देवता न बन जाता! सुबह का भूला अगर शाम को लौट आये, तो उसे भूला नहीं समझना चाहिए, राठौर!"

"तो मुझे जाने की आज्ञा दी जाए!" रणमल ने उठते हुए कहा।

"आप अपनी इच्छा के खुद मालिक हैं।" कुम्भाजी ने कहा। फिर द्वारपाल की तरफ देखकर बोले—"एका और महपा को भीतर आने दिया जाए।"

द्वारपाल चला गया।

राठौर रणमल भी अपने स्थान से उठे। एक बार उन्होंने सबकी तरफ़ देखा, फिर पाँव पटकते हुए चले गये। जाते-जाते उनके स्वर सुनाई दिये :

"मैं हमेशा के लिए जा रहा हूँ।"

"विरोध के लिए विरोध, या केवल महत्त्व दिखाने के लिए विरोध का हमेशा के लिए चले जाना ही अच्छा है।" राणा ने कहा।

"दुहाई है, महाराणा की!"

तभी झुकते हुए एका और महपा ने प्रवेश किया। वे दोनों पास आकर महाराणा के कदमों पर गिर पड़े।

"हमारे अपराध क्षमा कर दिये जायें, महाराणा!" एका और महपा—दोनों भाइयों ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"यदि तुम लोगों का पश्चात्ताप सच्चा है, तो देश तुम्हारा स्वागत करेगा। मातृभूमि तुम लोगों को भी अपनी गोदी में अन्य बेटों के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समान ही स्थान देगी।" महाराणा ने गम्भीरता से कहा।

"हम सच्चे मन से कहते हैं, राणा भैया !" एका ने हाथ जोड़ते हुए कहा—"पिताश्री और स्वर्गीय दादाश्री महाराणा मुकुलजी के चरणों की सौगन्ध…!"

"मुझे इस बात पर गर्व है कि मेरे दो भाइयों ने अपनी गलती मान ली है। अपनी गलती मान लेना सबसे बड़ा पश्चात्ताप है।" महाराणा ने कहा—"देश-सेवा का व्रत लेकर तुम दोनों मेरे दो बाजू बनकर स्वतन्त्रता से मेवाड़ में रह सकते हो।"

"आप धन्य हैं, राणा भैया !" दोनों ने कहा।

"सेनापति !" राणा ने सेनापति की ओर देखा। कुछ सोचते हुए वे फिर बोले—"राणा वंश के इन दोनों कुमारों को सेना में उचित स्थान प्रदान किया जाए।"

"जो आज्ञा, महाराणा !" सेनापति ने झुककर कहा।

तभी उन्हें सूचना मिली कि महामन्त्री मालवा के सुलतान को साथ लेकर आ रहे हैं।

"सुल्तान को उचित सम्मान दिया जाय !" राणा ने सभासदों से कहा।

"महाराणा की जय !"

महामन्त्री तथा एक अन्य सामन्त के साथ प्रवेश करते हुए मालवा के सुलतान महमूद ने कहा।

"आइये, सुलतान। आपकी मित्रता की भावना का हम लोग स्वागत करते हैं।" महाराणा ने खड़े होते हुए कहा। पास ही पड़े फूलों के गुलदस्ते में से एक फूल निकालकर, उसे सुलतान की ओर बढ़ाते हुए राणा फिर बोले—"मित्रता का यह फूल स्वीकार करें, सुलतान !"

"ओह ! महाराणा साहब, आप कितने उदार हैं !" फूल लेते हुए

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुलतान ने कहा—"इस फूल के बदले में आपकी सेवा में भेंट करने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं। मेरी यह पगड़ी···" और कहते हुए सुल्तान ने अपनी पगड़ी उतारनी चाही।

"यह नहीं, सुलतान!" राणा ने उनका हाथ थामते हुए कहा—"मित्रता में ऐसी बातों की आवश्यकता नहीं होती।"

"आपके इस व्यवहार ने हमारा मन जीत लिया है, महाराणा साहब!" सुलतान ने महाराणा का हाथ थामते हुए कहा—"खुदा को गवाह मानकर कहता हूँ, कि मरते दम तक दोस्ती का हक निभाऊँगा।"

"हम भी वचन देते हैं, सुलतान!" महाराणा ने कहा। फिर सुलतान को उनके समीप ही एक उचित आसन पर बैठाया गया।

काफी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। अन्त में महाराणा कुम्भा ने कहा :

"हमारी ओर से आप इसी क्षण से स्वतन्त्र हैं, सुलतान! हमने मालवा को जीता, पर वह अब आप ही का है। आप हमारे मित्र और मेहमान बनकर जब तक चाहें, यहाँ रह सकते हैं।"

"शुक्रिया, महाराणा साहब!"

और फिर दरबार समाप्त हो गया।

कोई एक सप्ताह तक और सुलतान महमूद खिलजी चित्तौड़गढ़ में रहा, फिर वह माण्डू चला गया।

कई वर्ष बीत गये।

महाराणा कुम्भा की शक्ति और प्रताप दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। विजय-स्तम्भ ऊपर ही ऊपर उठने लगा।

मेवाड़ में विशाल किलों का जाल भी फैलने लगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सात

कई वर्ष बीत गये।

आबू पर्वतमाला पर बना महाराणा कुम्भा का ग्रीष्म महल। महल इसी वर्ष बनकर पूरा हुआ था। उधर कमलमीर के पास भी एक विशाल दुर्ग बन चुका था। उसका नाम रखा गया था कुम्भलगढ़। राणा की आज्ञा और इच्छा से तीस के लगभग और दुर्ग भी बन रहे थे। मेवाड़ राज्य में पूर्णतया शान्ति थी। इसी कारण महाराणा गर्मियाँ बिताने के लिए आबू की पहाड़ियों पर बने इस नये महल में आ गये थे।

रात का पहला पहर बीत चुका था।

चारों ओर निर्मल चाँदनी छिटक रही थी। मौसम में ग्रीष्म ऋतु होने पर भी ठण्डक थी। दूर-दूर तक हरियाली का राज्य था। महाराणा कुम्भा अपने विशेष कला-महल की खिड़की में खड़े थे। उनकी दृष्टि चाँदनी में नहा रहे वृक्षों पर दूर तक तैर रही थी। वे उस सुन्दर प्राकृतिक वातावरण में खोये हुए थे। उनका जी चाह रहा था कि गुनगुनाने लगें। कोई मधुर गीत गाने लगें। उन्होंने एक कोने में रखे हुए तम्बूरे तथा वीणा की ओर देखा। फिर बाहर देखने लगे। वे फिर मुड़े और कई क्षणों तक इधर से उधर घूमते रहे। उनके होंठ अपने-आप गुनगुनाने लगे। धीरे-धीरे उनके दिमाग में एक मधुर गीत बजने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लगा :

"ए री सखि, प्रियतम नहीं आये।"

इसी पंक्ति को वे कई क्षणों तक, बार-बार गुनगुनाते रहे। फिर तम्बूरा उठाकर बैठ गये। तारों को कसा और भाव-भरे मधुर स्वरों में धीरे-धीरे गाने लगे :

"ए री सखि, प्रियतम नहीं आये।
निशि-दिन नयना बाट जुहत हैं, पथ पर दीप जलाये।
—सखि, प्रियतम नहीं आये।
भीगी-भीगी रातें काली
तड़पत मोरा मनुवा आली
और घिरे घनश्याम सलोने
बिजली चमक रही मतवाली
मेरे सुख-सपनों के साथी, काहे सुधि बिसराये।
—सखि, प्रियतम नहीं आये।
दर्द विरह का जग क्या जाने,
करत ठिठोली, जग नहीं माने,
सिर्फ वेदना रीति प्रीति क्या,
बोलो, हे प्रियतम पहचाने !
परदेशी संग दुनिया वालो, कोई क्या मनुवा लगाये !
—सखि, प्रियतम नहीं आये।"

गीत समाप्त हो जाने के बाद भी वे काफी देर तक तम्बूरे के तारों को छेड़ते रहे, गुनगुनाते रहे। कुछ देर बाद उठकर खड़े हो गये और फिर खिड़की के पास जाकर बाहर देखने लगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"महाराणा की जय !"

तभी एक सेवक ने आकर प्रणाम किया।

राणा ने स्नेह भरी आँखों से उसकी तरफ देखा। बोले :

"कहो ?"

"द्वार पर वह दक्षिण से आये संगीताचार्य खड़े हैं, महाराणा ! सेवा में उपस्थित होना चाहते हैं।"

"ओह, संगीताचार्य जी ! उन्हें अपने साथ ही क्यों नहीं लेते आये ? एक सच्चे कलाकार को हमारे पास आने के लिए किसी प्रकार की आज्ञा की आवश्यकता नहीं।" सेवक मुड़ने लगा, तो महाराणा फिर बोले—"ठहरो ! उनका सम्मान करने हम स्वयं चलते हैं।"

और महाराणा स्वयं द्वार की ओर चले। तभी संगीताचार्य ने मुस्कराते हुए प्रवेश किया।

"आइये, कलाकार ! मेवाड़ का महाराणा कुम्भा आपका स्वागत करता है।" उन्हें अपने वाले आसन पर ही बैठाते हुए राणा ने फिर कहा—"कहिये ! आपको यहाँ किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं ?"

"आप जैसे उदार कलाप्रेमी के राज्य में भला कलाकार को किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है, महाराणा !" संगीताचार्य ने कहा—"चाँदनी की किरणों के साथ-साथ आपके गीत-संगीत के स्वरों ने जैसे ही मेरे भवन में प्रवेश किया, मेरा मन नाच उठा। ओह ! आपके स्वरों में कितना माधुर्य है, महाराणा ! संगीत की कैसी गहरी परख है आपको ! तलवार चलाने वाले ये हाथ तम्बूरे के तारों में भी एक मधुर थिरकन भर सकते हैं, यह जान-सुनकर तो मैं चकित रह गया, महाराणा !"

"इसे कला की देवी सरस्वती का आशीर्वाद ही समझिये, आचार्य! नहीं तो रात-दिन तलवारों की छाया में साँस लेने वाले हमारे जीवन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

का गीत-संगीत के साथ क्या सम्बन्ध ?" महाराणा ने नम्रता से कहा।

"सचमुच ! आपकी कला और कण्ठ में देवी सरस्वती का निवास है, महाराणा।" आचार्य बोले—"दक्षिण में हमने सुना था कि राजस्थान में एक ऐसा व्यक्ति है, जिसकी सधी हुई उँगलियाँ जितनी तेजी से शस्त्रों में झंकार पैदा करती हैं, उतनी ही तेज़ी से तम्बूरे और वीणा के तारों में भी। सुना था कि वह व्यक्ति एक ओर तो तलवार के बल से घग्घर नदी तक अपने राज्य का विस्तार कर चुका है, दूसरी ओर अपने स्वर-संगीत के बल पर वह आत्मा में विद्यमान आनन्दलोक तक को जीतने की शक्ति रखता है। आज वह सब अपनी आँखों से देख-सुन लिया।

"यह सब आप जैसे महापुरुषों के आशीर्वाद और शुभ कामनाओं का ही फल है, आचार्य !" राणा ने कहा।

दो-चार क्षणों तक शान्ति रही।

"यह जो गीत आप अभी-अभी गा रहे थे, महाराणा, उसके भाव कुछ-कुछ संस्कृत के प्रसिद्ध कवि जयदेव के 'गीत-गोबिन्द' से मिलते हैं। वह कौन महाभाग कवि है, जिसने गीत-गोबिन्द के भाव को भाषा के शब्दों में इतनी सरसता से बाँधा है ?" आचार्य ने जिज्ञासा प्रगट की।

"कला के इस सेवक ने ही, आचार्य !" कुम्भा जी ने तभी मुस्कराते हुए कहा—"मैंने 'गीत गोबिन्द' का अपनी भाषा में अनुवाद करने का प्रयत्न किया है। उसके भावों को लेकर कुछ गीत भी रचे हैं।"

"महाराणा !" आचार्य की आँखें हैरानी से खुली रह गईं—"ओह ! आप कितने गहरे हैं। आपकी रचना 'रस-शास्त्र' के भी एकदम अनुकूल है और संगीत शास्त्र के भी !"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"मैंने अपने शिक्षा-काल में रस-शास्त्र का मन लगाकर अध्ययन किया था, आचार्य !" कुम्भाजी ने नम्रता से कहा—"नाट्य-शास्त्र भी पढ़ा है। आइये, आपको कुछ अपनी रचनाएँ दिखाऊँ !"

इतना कहकर महाराणा एक ओर चौकी पर रखा एक लाल कपड़े में लिपटा बस्ता-सा उठा लाये। आचार्य के पास बैठकर उसे खोला। उसमें से एक पुस्तक निकालकर बोले :

"यह एक नाटक है, आचार्य। इसे मैंने बचपन में ही पूरा कर डाला था। हम इसका अभिनय भी करना चाहते थे। अपने बाल-मित्रों के साथ मिलकर हम लोगों ने अभिनय का अभ्यास भी आरम्भ कर दिया था। लेकिन···!" कहते-कहते राणा का गला भर आया।

"लेकिन क्या, महाराणा ?" आचार्य ने आश्चर्य से पूछा—"आप कुछ उदास क्यों हो गये ?"

"इस नाटक का अभिनय न हो सका।" खिड़की के रास्ते बाहर की ओर-देखते हुए राणा फिर बोले—"हम अभिनय का अभ्यास कर रहे थे कि पिताश्री की हत्या उन्हीं के एक बेटे ने कर डाली।"

एक आह भरकर कुम्भाजी मौन हो गये।

"वह एक दुखद प्रसंग है, महाराणा !" आचार्य ने सहानुभूति-भरे शब्दों में कहा—"हमारे देश की निर्बलता का कारण इस प्रकार की नीति और चरित्र की हीनता भी है।"

"खैर, छोड़िये आचार्य !" महाराणा ने प्रसंग बदलने के अभिप्राय से कहा—"हम एक और नाटक भी लिख रहे हैं। 'गीत-गोबिन्द' की टीका भी अभी तक अधूरी ही है। यह देखिये !" राणा ने एक-दो अन्य पुस्तकें भी उन्हें दिखाईं।

सब देखने के बाद आचार्य ने कहा :

"सुनते आ रहे थे कि राजा लोग कलाकारों को आश्रय देते हैं,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्य ने दक्षिणी शैली के राग राणा को सुनाये। राणा ने भी अपने कई गीत गाये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर यहाँ तो विभिन्न कलाए आपका आश्रय पाकर धन्य हो गई हैं। हमने चित्तौड़गढ़ में बन रहा विजय का प्रतीक 'कीर्ति-स्तम्भ' भी देखा है। कुम्भलगढ़ भी देख आया हूँ। वह किला आपकी भवन-निर्माण-कला की कल्पना का अद्भुत नमूना है, महाराणा! मेवाड़ में बन रहे अन्य कई दुर्ग और भवन भी देखे हैं। अद्भुत कल्पनाशीलता है आपमें! आप राज-काज और युद्धों की छाया में इतनी कलाओं को भी अपने अन्तर में पाल रहे हैं, अद्भत! महाराणा अद्भुत!"

राणा मुस्कराकर रह गये।

उनमें काफी देर तक कलाओं के सम्बन्ध में चर्चा होती रही। आचार्य ने दक्षिणी शैली के राग भी राणा को सुनाये। राणा ने भी अपने कई गीत गाये।

चाँद अब तक और ऊपर आ गया था। इन दो कलाकारों के संगीत के स्वरों में नहाकर चाँदनी और भी निखर गई थी।

काफी रात गये तक वह महफिल जमी रही।

आबू के उस राजभवन में कई दिनों तक गीत, संगीत और साहित्य की त्रिवेणी बहती रही।

आखिर एक दिन आचार्य अपनी अगली यात्रा पर चले गये। महाराणा ने काफी दान-दक्षिणा देकर उन्हें विदा किया।

कई वर्ष और बीत गये।

आबू के उसराजभवन में आकर महाराणा कुम्भाजी की कला एक बार फिर जाग उठी थी। वे रात-दिन कला की साधना में मग्न रहते।

प्रतिवर्ष राणा सर्दियों में चित्तौड़गढ़ चले जाते। फिर गर्मियाँ आरम्भ होते ही आबू के इस राजभवन में चले आते।

झन्! झन्! झन्!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वीणा के तारों को तानकर कुम्भा जी किसी नये गीत की स्वरलिपि तैयार करने लगे।

"महाराणा की जय हो!" तभी एक सेवक नें आकर कहा।

पर महाराणा ने जैसे सुना ही नहीं। वे वीणा के तारों से निकल रहे मधुर स्वरों में डूबे रहे।

"महाराणा की जय हो!" सेवक फिर बोला—"चित्तौड़गढ़ से एक दूत आया है। महामन्त्री ने उसे भेजा है। वह इसी क्षण सेवा में उपस्थित होना चाहता है।"

झन्—झन् न न न न झन्!

और झन् करके वीणा-वादन बन्द हो गया।

"क्या?" कुम्भाजी ने सिर घुमाकर सेवक की तरफ देखते हुए पूछा—"चित्तौड़गढ़ से दूत आया है?"

"हाँ, महाराणा!" सेवक ने झुककर कहा।

"उसे हमारे मन्त्रणागार (सलाह-मशविरा करने वाले स्थान) में ले चलो।" वीणा को एक तरफ रखते हुए राणा ने कहा—"हम अभी आते हैं।"

सिर झुकाकर दूत चला गया।

थोड़ी देर बाद राणा भी अपने मन्त्रणगार में पहुँच गये। वे दूत को पहचानते थे। उन्हें देखते ही दूत ने उठकर प्रणाम करते हुए कहा:

"महाराणा की जय!"

"कहो किशनसिंह?" हाथ उठाते हुए महाराणा ने कहा—"सब कुशल तो है?"

"चित्तौड़गढ़ में तो सब कुशल है आपके प्रताप से, महाराणा।" कुछ रुककर दूत बोला—"पर देश की सीमाओं के समाचार अच्छे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं हैं, महाराणा !"

"क्या ?" महाराणा की आँखों में प्रश्न खिच गया।

"सुनने में आया है कि गुजरात का सुलतान मेवाड़ पर हमला करने के लिए चल पड़ा था, पर तभी उसके कुछ सूबेदारों ने विद्रोह कर दिया। इस कारण वह गोलकुण्डा की तरफ चला गया।" दूत ने कहना आरम्भ किया।

"उन्हें आपस में ही उलझा रहने दो।" महाराणा कुम्भा ने कहा—"और कुछ ?"

"असली समाचार तो अभी बाकी है, महाराणा !" दिल्ली का सुलतान सिकन्दर लोदी अपने स्वतन्त्र हो गये सूबों को फिर से वापिस अपने अधिकार ले लेना चाहता है।" दूत ने कहना शुरू किया—"वह गुजरात और मालवा राज्यों को भी फिर से अपने अधीन करने की योजना बना रहा है।"

"हूँ ! कहते जाओ !"

"उसका इरादा ग्वालियर राज्य और मेवाड़ राज्य पर आक्रमण करने का भी है।"

"क्या कहा ?" राणा ने एकदम जोश में भरकर कहा—"मेवाड़ राज्य पर भी दिल्ली का सिकन्दर लोदी आक्रमण करता चाहता है ! उसकी इतनी हिम्मत !"

"महामन्त्री ने कहला भेजा है, महाराणा !" एक क्षण रुककर दूत ने फिर कहा—"उसकी सेना दिल्ली से चल पड़ी है। अभी तक उनके इरादों का कुछ स्पष्ट पता नहीं। वे लोग सीधे गुजरात की ओर भी जा सकते हैं और मेवाड़ पर भी आक्रमण कर सकते हैं।"

"हूँ !" महाराणा कुछ सोचने लगे। फिर बोले—"हमारे युवराज रायमल और कुँवर उदयकर्ण (ऊदा जी तो वहीं हैं न !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उन्होंने क्या योजना बनाई है, देश-रक्षा की ?"

"क्षमा करें, महाराणा !" दूत ने कुछ झिझकते हुए कहा—"कुंवर उदयकर्णजी के सम्बन्ध में तो आप जानते ही हैं। उनकी विलासिता और व्यर्थ के लड़ाई-झगड़ों में अभी तक कोई कमी नहीं आई।"

"इसी कारण तो बड़ा होते हुए भी हमने उसे अपना उत्तराधिकारी न बनाने का निश्चय किया है। वह बुरी संगत में पड़ गया है।" राणा ने गम्भीर होते हुए कहा—"पर रायमल तो ठीक-ठाक है न !"

"महामन्त्री जी ने आपको शीघ्र चित्तौड़गढ़ आने के लिए निवेदन किया है, महाराणा !" दूत ने कहा।

"हमने कुँवर और युवराज रायमल के सम्बन्ध में पूछा है, किशनसिंह !" राणा ने कुछ सन्देह करते हुए कहा—"तुमने उसका उत्तर न देकर महामन्त्री की बात कह दी। जो कुछ भी है, सब साफ-साफ कहो, किशनसिंह !"

"क्षमा करें, महाराणा !" दूत ने झिझकते हुए कहा—"आपके न रहने से कुंवर रायमल भी कुछ असंयमी, स्वतन्त्र और उद्दण्ड से हो गये हैं। इसीलिए महामन्त्री जी ने···।"

"क्या कहा ?" महाराणा ने बीच में ही रोकते हुए पूछा—"कुंवर रायमल भी उद्दण्ड हो गया है ? ओह ! देश की नई पीढ़ी को यह होता क्या जा रहा है ! कितना विश्वास था हमें रायमल पर !" एक एक क्षण मौन रहने के पश्चात् राणा ने फिर पूछा—"क्या किया उसने ?"

"नशे की हालत में चित्तौड़गढ़ की एक कन्या को अपमानित करने का प्रयत्न किया। उसकी चीख सुनकर महामन्त्री उधर आ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गये। कुँवर ने उन्हें भी अपमानित किया।।"

"नहीं!" महाराणा कुम्भा गरज उठे—"यह सहन नहीं किया जा सकता! वह मातृ-शक्ति को अपमानित करने का साहस करे···हमसे भी बड़े महामन्त्री जी की बातों का उत्तर दे···देश की सीमाओं को शत्रु घेर रहे हों और वह नशे में झूमता फिरे···नहीं! मेवाड़ ऐसे लोगों को कभी सहन नहीं सकता। उसके पापों का हम प्रायश्चित करेंगे, किशनसिंह! कुँवर रायमल! कितनी आशाएँ थीं हमें उससे! हमारी नई पीढ़ी इतनी पतित होती जा रही है! नहीं, अब वह मेवाड़ राज्य में एक क्षण भी नहीं रह सकता!"

"शान्त रहें, महाराणा!" दूत किशनसिंह ने कहा—"कुँवर अभी अबोध बच्चे ही तो हैं। सँभल जायेंगे।"

"कहते क्या हो, किशनसिंह!" राणा ने दांत पीसते हुए फिर कहा—"बच्चा है, सँभल जायेगा—ऐसा समझकर उपेक्षा कर देने से काम नहीं चलेगा। माँ-बाप की इसी प्रकार की उपेक्षा ही तो बच्चों को बिगाड़ देती है! ऐसा करना बुराई को बढ़ावा देना है। नहीं, हम यह सहन नहीं कर सकते!"

"मुझे क्या आज्ञा है, महाराणा?"

"तुम चलो! आज ही साँझ तक हम चित्तौड़गढ़ पहुँच जायेंगे। वहीं पर सब-कुछ देख-सुनकर निश्चय किया जायेगा!"

राणा की आज्ञा पाकर किशनसिंह लौट गया।

साँझ ढलते-ढलते महाराणा भी चित्तौड़गढ़ पहुँच गये। उन्हें अचानक आया देख, उदयकर्ण तो इधर-उधर खिसक गया, कुँवर रायमल भी घबरा गया। वह भय से काँपने लगा।

महाराणा सबसे पहले सीधे कुँवर रायमल के भवन में पहुँचे। वह उस समय भा कुछ-कुछ नशे में झूम रहा था।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"पिताश्री !" कुम्भाजी को देख वह आश्चर्य से बोला।

"हमने जो कुछ सुना, उसका एक अंश अपनी आंखों से भी देख रहे हैं, कुँवर रायमल !" राणा ने क्रोध में कहा—"तुमने देश की मातृ-शक्ति का अपमान किया ?"

"पिताश्री !" लड़खड़ाती ज़बान से कुँवर रायमल ने कहा।

"हमारे प्रश्न का उत्तर दो, कुंवर !" राणा फिर उसी क्रोध में बोले—"तुमने हमारे पिता समान वृद्ध महामन्त्री का भी अपमान किया ?"

"मैं क्षमा चाहता हूँ, पिताश्री।"

"नहीं !" राणा गरजे—"ऐसे व्यक्तियों की मेवाड़ को कोई आवश्यकता नहीं। जिस खेत का रखवाला ही उसे चरने लगेगा, वह कभी सुरक्षित नहीं रह सकता !" एक क्षण रुककर महाराणा ने कड़ककर कहा—"निकल जाओ ! मेवाड़ की सीमाओं से कहीं दूर चले जाओ !"

"क्षमा···पिताश्री !"

"नहीं !" वे गरजे—"हमें तुम जैसे नालायकों की आवश्यकता नहीं ! जाओ ! फिर कभी इधर मुँह न करना !"

"कुँवर को क्षमा करें, महाराणा !" तभी महामन्त्री ने प्रवेश करते हुए कहा।

"आप बीच में न पड़ें, महामन्त्रीजी !" राणा ने कहा—"हम नयी पीढ़ी को और उसके अभिभावकों को शिक्षा देना चाहते हैं ! इस प्रकार के अनाचार को सहन नहीं किया जा सकता। देश का भविष्य ऐसे किशोरों और युवकों के हाथों नहीं सौंपा जा सकता !" उन्होंने फिर कुँवर रायमल की तरफ देखा।

कुँवर रायमल सिर झुकाये धीरे-धीरे चला गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुछ क्षणों तक राणा स्थिर भाव से खड़े रहे। उनकी आंख भर आईं, पर आँसू नहीं गिरने दिये।

"चलिये, महामन्त्री ! हमें दिल्ली के सुलतान सिकन्दर लोदी के आक्रमण का मुँहतोड़ उत्तर देना है। अन्य सरदारों को भी मन्त्रणागार में बुला लीजिये।" और राणा गम्भीर कदमों से चल दिये।

सिर झुकाये महामन्त्री भी चले गये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आठ

चित्तौड़गढ़ का राज दरबार !

महाराणा कुम्भा अपने राज सिंहासन पर विराजमान थे। उनका चेहरा कुछ तमतमाया हुआ प्रतीत होता था।

कई क्षणों के सन्नाटे को भंग करते हुए महाराणा बोले :

"हमें अब भी विश्वास नहीं होता।"

"यह पक्का समाचार है, महाराणा !" एक सामन्त ने कहा—"मालवा के सुलतान महमूद खिलजी और गुजरात के सुलतान में मेवाड़ के विरुद्ध पक्का समझौता हो चुका है। मुझे अत्यन्त विश्वासी व्यक्तियों से यह समाचार मिला है।"

"पर हम कैसे मान लें ?" राणा ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उस सामन्त की ओर देखते हुए कहा—"अभी पिछले दिनों दिल्ली के सुलतान सिकन्दर लोदी के विरुद्ध मालवा के सुलतान ने हमारा साथ दिया। यह मान लेने में कोई हानि नहीं कि झूनझुनू नामक स्थान पर दिल्ली की सेना के साथ जो हमारा युद्ध हुआ, उस विजय में मालवा के महमूद खिलजी की सेना का विशेष हाथ है।"

"इसी से तो उसका साहस और भी बढ़ गया, महाराणा !" वह सामन्त बोला—"सुलतान महमूद समझता है कि वास्तव में सिकन्दर लोदी को उसी ने पराजित किया है। जब वह दिल्ली की सेना को हरा सकता है, तो फिर मेवाड़ पर उसका अधिकार क्यों नहीं हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सकता ? अपनी इसी भावना को पूर्ण करने के लिए उसने गुजरात के सुलतान के साथ सन्धि कर ली है। वे दोनों किसी भी समय सीमा-प्रदेशों में छेड़खानी कर सकते हैं। दोनों मिलकर मेवाड़ पर सीधे आक्रमण भी कर सकते हैं। कुछ इसी प्रकार की योजना उन्होंने बनाई है।"

"अच्छा !" राणा गम्भीरता से बोले—"तो इनकी आंखों में उदारता और मित्रता का कोई महत्त्व नहीं ?"

"बिल्कुल नहीं, महाराणा !" सामन्त ने कहा—"वे हर बात को लाभ की राजनीति के तराजू पर तोलते हैं। उस समय वह असमर्थ हो चुका था। अपने तथा राज्य के बचाव के लिए उसने आपसे मित्रता करना ही उचित समझा।"

"हूँ !"

"और अब वह जानता है, कि महाराणा कलात्मक मन्दिर, भवन और किले बनवाने की ओर ही ध्यान दे रहे हैं। वे जानते हैं कि महाराणा ने तो अब नाटक रचने, संगीत-शस्त्र का अभ्यास और ग्रन्थ लिखने, गीत-गोबिन्द का अनुवाद करने की ओर ही ध्यान दे रखा है। मेवाड़ के पास कोई संगठित सेना तो है नहीं। क्यों न इस अवसर से लाभ उठायें !"

"सामन्त !" राणा चौंक उठे—"यह ठीक है कि हम कलाओं की साधना और विकास की ओर आजकल कुछ अधिक ध्यान दे रहे है, पर देश-रक्षा के साधन जुटाने की हमने कभी उपेक्षा नहीं की। तीस-बत्तीस किले बनानें का कार्य सुरक्षा-योजना का ही एक अंग है। गीत-गोबिन्द के अनुवाद के साथ-साथ हमने चण्डीशतक की टीका भी तो की है ! एकलिंग महात्म्य भी तो रचा है ! हम वीरता और कला दोनों के महत्त्व को समझते हैं। हम वीर रस को कलात्मक शृंगार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देना चाहते हैं। हम शृंगार और भक्ति में वीरता की हुंकार जगाना चाहते हैं।"

"यह हमें अच्छी प्रकार से मालूम है, महाराणा!" वह सामन्त फिर कहने लगा—"पर दोनों में समान दबाव रखने से ही यह सम्भव होगा, महाराणा! यह स्पष्ट है कि आजकल कला का पलड़ा कुछ भारी होता जा रहा है!"

"नहीं-नहीं, सामन्त!" कुम्भाजी ने जोश में भरते हुए कहा। एक क्षण बाद वे फिर बोले—"हम कला और कर्त्तव्य—दोनों के पलड़े बराबर रखने का प्रयत्न करेंगे। बल्कि आवश्यकता पड़ने पर कर्त्तव्य की रक्षा के लिए अपना सब-कुछ न्यौछावर कर देंगे। आप पूरा विश्वास रखिये। वास्तव में कला-साधना में भी कर्त्तव्य-पालन से ही निखार आ सकता है।"

"हमें पूरा विश्वास है, महाराणा!"

कुछ देर तक दरबार में सन्नाटा छाया रहा।

"महामन्त्री जी!" महाराणा ने मन्त्री की तरफ देखा—"और क्या समाचार हैं देश-विदेश के?"

"चारों ओर कुछ अराजकता और संघर्ष के ही समाचार मिल रहे हैं, महाराणा!" महामन्त्री ने कहा—"बूंदी के राठौरों ने स्वर्गीय महाराणा लाखाजी के समय एक बार अपने को स्वतन्त्र घोषित किया था, अब फिर वे अपने-आपको स्वतन्त्र मानने लगे हैं। उधर राठौर रणमल जी ने भी यहाँ से जाकर मेवाड़ के विरुद्ध अपना प्रचार जारी कर दिया है। गागरोन, जाबरा आदि के सामन्त भी अपने-आपको मेवाड़ से स्वतन्त्र मानकर चलने लगे हैं।"

"हूँ!" महाराणा कुम्भा कुछ सोचने लगे। फिर बोले—"यह देश का दुर्भाग्य है कि यहाँ लोग संगठित नहीं होना चाहते।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"नहीं-नहीं सामन्त ! आवश्यकता पड़ने पर कर्तव्य की रक्षा के लिए हम अपना सब-कुछ न्योछावर कर देंगे ।" कुम्भाजी ने कहा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"बल्कि हर आदमी राजा और नेता बनना चाहता है, महाराणा ! इसी से विदेशी शक्तियां लाभ उठा रही हैं।" एक सरदार ने कहा।

"ठीक है।" राणा बोले—"सभी को स्वतन्त्र रहने का अधिकार है। अपनें-अपने ढंग से उन्नति करने का अधिकार भी सभी को है और होना चाहिए, पर इसका यह तात्पर्य नहीं कि देश के सामूहिक हानि-लाभ की उपेक्षा कर दी जाये। एक ही देश के भाग अलग-अलग टुकड़ों में बंट जाय, हमारी राष्ट्रीयता खण्डित हो जाए, नहीं ! यह सहन नहीं किया जा सकता। देश की अखण्डता और संगठन ही शक्ति का प्रतीक है। इसके लिए यदि कुछ लोग नाराज भी होते हों, तो उनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

रुककर एक बार उन्होंने सभी दरबारियों की ओर देखा। फिर गम्भीर भाव से कहने लगे :

"हमें सारे देश को, देश के प्रत्येक भाग को एक सामूहिक शक्ति के रूप में संगठित करना है। मेवाड़ के देशभक्तो ! इसके लिए यदि हमें कहीं बल का भी प्रयोग करना पड़ा, तो हम झिझकेंगे नहीं।" फिर वे महामन्त्री की ओर मुड़कर बोले 'अपने देश मेवाड़ की सत्ता को स्वीकार करने वाले समस्त भागों (राज्यों) की सूची बनाई जाए। यह भी बताया जाए कि उनमें से कौन-कौन से भाग एकता को भंग करना चाहते है। उसके लिए उचित कार्यवाही की जायेगी।"

"जो आज्ञा, महाराणा !" मन्त्री ने कहा।

फिर उस दिन के लिए दरबार उठ गया।

कुछ दिन और बीत गये।

महामन्त्री ने सूची तैयार कर महाराणा के सामने पेश की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोले—

"बूंदी, बाम्बोर, माण्डलगढ़, खाटू, चाटसु, जहाजपुर, मालपुरा, टोड़ा, हमीरपुर···से सब अपने-आपको स्वतन्त्र घोषित कर चुके हैं, महाराणा !"

भरे दरबार में महाराणा कुम्भाजी ने घोषणा की :

"मेवाड़ के देशभक्तो ! हमने एक विशाल सेना संगठित करने का निश्चय कर लिया है। उसमें कम से कम एक लाख नियमित सैनिक होंगे ! डेढ़ दो हज़ार हाथी भी सेना के लिए शिक्षित किये जायेंगे। आधुनिक तोपखाना तैयार किया जायेगा, इतनी ही घुड़सवार सेना का भी संगठन किया जायेगा, ताकि समय पड़ने पर विदेशी आक्रमण-कारियों को मुँहतोड़ उत्तर दिया जा सके।"

"यह आवश्यक है महाराणा !"

सभी दरबारियों ने समर्थन किया।

"विदेशियों से जूझने से पहले अपने घर में एकता और अखण्डता स्थापित करना आवश्यक है।" महाराणा ने फिर कहा—"हम चाहते हैं कि पहले समस्त भागों को चेतावनी दे दी जाये, कि वे देश की एकता और अखण्डता को भंग न करें। फिर आवश्यकता पड़ने पर बल का प्रयोग भी किया जाये ! क्या आप लोग सहमत हैं ?"

"हम सब सहमत हैं, महाराणा !"

सभी दरबारियों ने हाथ ऊपर उठाकर समर्थन किया।

"तो ठीक है।" महाराणा ने जोश में भरकर कहा—"आज से हम प्रतिज्ञा करते हैं कि राष्ट्र-रक्षा को सबसे ऊपर मानेंगे। या तो उसकी रक्षा, सुख और समृद्धि के लिए कुछ करके दिखायेंगे, या फिर लड़ते-लड़ते मर जायेंगे। कायरों को जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं। याद रखो, बहादुरो ! जीवन का सच्चा रस वीरता में है,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुछ कर गुजरने में है। देश रहेंगा, तो हम रहगे। हमारी सभ्यता, संस्कृति और कलाएँ सभी रहेंगी। हमें देश में शान्ति की रक्षा के लिए तलवार उठानी है ! अपनी स्वतन्त्रता और अधिकारों को जीवित रखने के लिए कमर कसनी है। जय भगवान एकलिंग ! जय स्वदेश !"

"जय !" सभी ने कहा।

"महाराणा कुम्भा की जय !"

"जय !" चारों ओर जय-जयकार होता रहा।

सभी में जोश भरने के लिए महाराणा ने दुर्गा-सप्तशती के अनुवाद किए गए पद्यों का स्वर के साथ पाठ किया। सभी का हृदय जोश और उत्साह से भर उठा।

"एक अनुरोध है, महाराणा !" एक नौजवान सामन्त ने अपने स्थान पर खड़े होते हुए कहा—"क्या आपकी काव्य (कविता) कला का स्वाद चखने का सौभाग्य हमें कभी भी प्राप्त न होगा ?"

"क्यों नहीं मेरे नवयुवक भाई !" मुस्कराते हुए महाराणा ने कहा—"हमें दो ही बातों में सच्चे आनन्द की प्राप्ति होती है। एक तो युद्ध का नगाड़ा और तलवार की झंकार सुनकर, दूसरे मन की गहराइयों में उतर-काव्य-कला का रस चखने में। हम चाहते हैं कि ये दोनों कलाएँ हमारे नवयुवकों का पथ-प्रदर्शन करती रहें। हम तुम्हारी इच्छा आज और अभी पूरी करेंगे।"

कहकर महाराणा 'एकलिंग महात्म्य' का स्वर के साथ पाठ करने लगे। उनके स्वरों में मिठास के साथ-साथ जोश का स्वाभाविक प्रवाह विद्यमान था। वह नवयुवक और सारी सभा झूम उठी।

"एकलिङ्ग महात्म्य' का पाठ समाप्त करने के बाद, एक क्षण रुककर उन्होंने कहा :

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"हमारा विजय-अभियान आज से ही आरम्भ होगा। हम स्वयं देश के कोने-कोने में जायेंगे ! सेना एकत्रित करेंगे। देश की एकता को भंग करने वालों को पहले समझायेंगे, न मानने पर शक्ति का प्रयोग भी करेंगे !" कुछ रुककर उन्होंने फिर कहा—"दूसरे राज्यों पर हमें तब तक आक्रमण नहीं करना है, जब तक कि वे हमारे स्वाभिमान को चुनौती न दें। पर चनौती पाकर हम भयानक से भयानक शत्रु को भी क्षमा नहीं करेंगे !"

"हम सब आपके साथ हैं, महाराणा !"

सभी दरबारियों ने उत्साह से कहा।

"महामन्त्री जी ! शासन और न्याय-व्यवस्था की देख-भाल आप के हाथ रहेगी। न्याय की रक्षा हर कीमत पर होनी चाहिए। छोटा-बड़ा कोई भी उसकी पहुँच से परे न समझा जाए !" फिर उन्होंने सेनापति की तरफ देखकर कहा—"आप अपनी सैनिक टुकड़ी तैयार करिये। हमें कल दिन निकलते ही प्रस्थान कर देना है।"

"जो आज्ञा, महाराणा !"

और सिर झुकाकर सेनापति चला गया।

उसके बाद महाराणा महामन्त्री तथा अन्य प्रमुख सामन्तों और सरदारों से सलाह-मशविरा करते रहे।

अगले ही दिन उन्होंने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ कर दी। बाम्बोर, बम्बावदा, माण्डलगढ़, सारंगपुर, खाटू, टोड़ा, अजमेर, जहाजपुर, नरवर, मालपुरा, जावरा, गंगधार, मण्डोर, आमेर, हमीरपुर, गागरोन, विसलपुर, रणथम्भोर, गाडेवाड़ आदि विभिन्न प्रदेशों ने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली।

वापिस लौटने पर विजयी कुम्भाजी का मेवाड़ में भव्य स्वागत किया गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुत दिनों बाद आज महाराणा दरबार में आये। उनके चेहरे पर विजय का शान्त आनन्द था। सभी सभासदों ने उठकर उनका स्वागत किया।

काफी देर तक इधर-उधर की, विजय-अभियान सम्बन्धी बातें होती रहीं। उसके बाद राणा ने कहा :

"हमने निश्चय किया है, कि सभी धार्मिक स्थलों पर लगने वाला यात्री-कर बन्द कर दिया जाए। विशेषकर आबू के जैन-तीर्थ पर जाने वाले यात्रियों से कोई कर न लिया जाए !"

"बहुत अच्छा विचार है, महाराणा !" महामन्त्री ने कहा—"सभी धर्मों को अपने-अपने विश्वास के अनुसार पूजा-उपासना की खुली छूट रहनी ही चाहिए। यह तो एक महान् मानवीय कार्य है।"

"तो आज ही यह घोषणा प्रचारित कर दी जाय।" महाराणा ने फिर कहा—"राज्य की ओर से भी यात्रियों की सुविधा के लिए भी विशेष प्रबन्ध किए जायें ! हमने अपनी इस यात्रा के दौरान देखा है, कई स्थानों पर पानी की तंगी है, कहीं यात्रियों की सुविधा के लिए रहने को निवास-स्थान नहीं, कहीं रास्ते बहुत ऊबड़-खाबड़ हैं। ये सारी असुविधाएँ जल्दी से जल्दी दूर होनी चाहिएँ !"

"बहुत जल्दी सब काम होंगे, महाराणा !" महामन्त्री ने कहा। फिर उन्होंने तत्काल सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को उचित आदेश दिए।

उसके बाद महाराणा अपनी विजय-यात्रा के अन्य अनुभव सुनाते रहे।

"महाराणा की जय !"

तभी एक दूत ने प्रवेश किया।

"कहाँ से आ रहे हो, दूत ?" उसके अभिवादन का उत्तर देते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुए महाराणा ने पूछा।

मैं बूंदी और मेवाड़ के सीमा-प्रदेशों से आ रहा हूँ, महाराणा!" दूत ने झुककर कहा।

"बूंदी के सीमा-प्रदेश से!" महाराणा कुछ सोचते हुए उसकी तरफ देखने लगे—"कोई विशेष बात है क्या?"

"बूँदी राज्य के कर्मचारी मेवाड़ के व्यापारियों को बहुत तंग करने लगे हैं, महाराणा! अभी तीन दिन पहले उन्होंने यहाँ के व्यापारियों के एक दल को रोक लिया। उनसे सीमा-कर माँगा। उनके याद दिलाने पर भी कि बूँदी राज्य भी मेवाड़ के अन्तर्गत ही पड़ता है, वे लोग नहीं माने। व्यापारियों का सारा सामान छीन लिया।"

"तो वे लोग उचित बात को भी स्वीकार करना नहीं चाहते!" राणा ने गम्भीरता से कहा।

"उन्होंने तो खुला प्रचार आरम्भ कर दिया है, महाराणा, कि बूँदी एक स्वतन्त्र राज्य है, स्वतन्त्र सूबा है। मेवाड़ के अनुशासन को वहां नहीं मान सकता। यदि राणा ने उनकी स्वतन्त्र सत्ता में कोई हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया, तो हम लोग मालवा के सुलतान से सहायता की याचना कर सकते हैं।" दूत ने कहा।

"हूँ!" गम्भीर भाव से महाराणा ने कहा—"तो बात यहाँ तक बढ़ चुकी है!" एक क्षण रुककर फिर बोले—"उसे जल्दी ही उद्दण्डता का उचित दण्ड दिया जाएगा।" फिर वे अपने सेनापति की ओर घूमकर बोले—"हमारी सैनिक-योजना कहाँ तक पहुँच चुकी है?"

"लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है महाराणा!" सेनापति ने झुककर कहा—"एक लाख से अधिक सैनिक, चौदह सौ हाथी, इससे कई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गुना अधिक सुशिक्षित घोड़े, गोला-बारूद और तोपें, निश्चित योजना के अनुसार संगठित हो चुकी हैं।"

"ठीक है।" राणा बोले—देश के सभी शत्रुओं को दण्ड देना ही होगा। मालवा का सुलतान तो पक्का विश्वासघाती निकला। अब वह गुप्त रूप से हमारे देश में भी हस्तक्षेप करने लगा है। यह सहन नहीं किया जा सकता। पर हमने उसे मित्र कहा था, इस कारण हम उस पर पहले आक्रमण नहीं करना चाहते। हमें उसकी किसी भी हरकत का उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन बूँदी···उसकी ज़बान तो बन्द करनी ही होगी। वह तो हमारा घरेलू मामला है।"

"कुछ और भी समाचार मिले हैं, महाराणा!" महामन्त्री ने सोचते हुए कहा—"गुजरात ने दिल्ली से अपना सम्बन्ध बिल्कुल तोड़ लिया है। वहाँ सूबेदार जफरखाँ पहले तो अपने-आपको सुलतान कहलाता था; अब मुज्जफर शाह की उपाधि धारण कर अपने-आपको बादशाह कहने लगा है।"

"चलो!" राणा ने उपेक्षा से कहा—"इतिहास में एक और बादशाह का नाम जुड़ जाएगा।"

उसने मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए मालवा को फिर से उकसाना शुरू कर दिया है, महाराणा! महामन्त्री ने फिर कहा—"मेवाड़ को जीतने के बाद इसका बँटवारा किस प्रकार किया जाएगा, इसकी योजना भी बना ली गई है।"

"अच्छा!" महाराणा ने गम्भीरता से केवल इतना ही कहा।

"योजना के अनुसार कार्य भी आरम्भ हो गया है।"

"हैं! वह कैसे?"

महामन्त्री की बात सुनकर इस बार महाराणा चौंक पड़े।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"गुजरात के इस नय बादशाह मुज्जफर शाह ने अपने छोटे भाई को मारवाड़ के नागौर प्रदेश का शासक भी नियुक्त कर दिया है। आप तो जानते ही हैं कि नागौर का प्रदेश यहाँ से कितना समीप जान पड़ता है। अतः उनकी योजना भली प्रकार से समझी जा सकती है।"

"तो यह बात है!" सब समझते हुए महाराणा बोले—"इस प्रकार देश के शत्रु चारों ओर से सीमाओं को घेर लेना चाहते हैं। यदि इस घेरेबन्दी का समय रहते तोड़ न डाला गया, तो बाद में बहुत हानि उठानी पड़ सकती है। हम ऐसी राजनीतिक भूल नहीं करना चाहते।"

"आप ठीक कहते हैं, महाराणा!" कई सामन्तों ने कहा।

"तो ठीक है! नागौर—बूँदी, बूँदी—नागौर।" जैसे कुछ हिसाब लगाते हुए महाराणा कुम्भा ने कहा—"इन दोनों लक्ष्यों को एक साथ प्राप्त करना आवश्यक है।" फिर कुछ रुककर एका-एक बोले—"एक शक्तिशाली सैनिक टुकड़ी तैयार की जाए, महा-मन्त्री! आज से ठीक तीसरे दिन हम बूँदी और नागौर की विजय के लिए चल देंगे।"

"जो आज्ञा, महाराणा!" महामन्त्री ने कहा। फिर वे तनिक झिझकते हुए बोले—"एक बात कहना चाहता था, महाराणा!"

"निस्संकोच कहिए!"

"इस बार जाने से पहले तनिक कुँवर उदयकर्ण (ऊदाजी) के कान ऐंठते जाइएगा।" महामन्त्री ने कहा—"यों तो आप कुँवर के सम्बन्ध में सब जानते ही हैं, पर आपकी अनुपस्थिति में उनकी विलासिता और विलासिता की झोंक में उनकी हरकतें बहुत अनुचित हो जाया करती हैं।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राणा गम्भीर हो गए। फिर बोले :

"रायमल से आशा थी, वह जब निकम्मा निकला, तो उस विलासी बेटे उदयकर्ण से क्या आशा करूँ—ओह ! आप मेरी वेदना शायद समझ नहीं सकते, महामन्त्री !...ठीक है...मैं उसे समझा दूंगा। नहीं तो उसे भी शायद कुंवर रायमल की राह पर ही जाना पड़े।"

"महाराणा !" मन्त्री ने कहा।

पर तब तक वे उठकर चल दिए थे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नौ

नागौर !

महाराणा कुम्भा ने नागौर को चारों ओर से घेर रखा था। वहाँ का शासक शमसखाँ एकदम घबरा गया। किले के भीतर अपने सामन्तों, सरदारों को इकट्ठा करके उसने कहा :

"अब बचने की कोई आशा नहीं। गुजरात से भाई साहब मुज्ज़फरशाह की फौजें इतनी जल्दी यहाँ पहुंच नहीं सकतीं। इधर मेवाड़ का महाराणा कुम्भा तूफान की तरह घिर आया है!"

"उसके साथ सेना तो अधिक नहीं है, सुलतान!" एक सरदार ने कहा—"हमें उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए।"

"सेना तो उसके पास जरूर अधिक नहीं है।" सुलतान शमसखाँ ने कहा—"पर हौंसले बहुत अधिक नहीं। देखा नहीं, कुम्भा का नाम सुनते ही फौजी कैसे इधर-उधर छिपते फिरते हैं!"

"उसका घेरा मज़बूत है।" शमसखाँ का सिपहसलार (सेनापति) बोला—"यहाँ किले में बन्द रहने से तो काम न चल सकेगा, हुजूर—बाहर निकलकर लड़ मरने के सिवाय कोई चारा नहीं।"

"ठीक है।" शमसखाँ ने कहा—"काश! गुजरात से सेना आ पाती। पर उसके आने तक तो कुम्भा यहाँ की ईंट से ईंट बजा देगा।" वह कुछ सोचने लगा, फिर बोला—"पिछले दिनों गजरात

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और मालवा में भी सन्धि हो गई है न ! क्यों न हम मालवा के सुलतान महमूद के पास सहायता के लिए आदमी भेजें ?"

"आप ठीक कहते हैं ।" सेनापति बोला । अन्य लोगों ने भी उनकी बातों का समर्थन किया ।

"तो अभी एक पत्र लिखो ।" शमसखाँ ने कहा—"गुप्त मार्ग से अपने दूत को निकाल दो । वह कल तक अवश्य माण्डू पहुँच जाएगा । वहाँ से सहायता पहुँचने में दो-तीन दिन से अधिक देर न होगी । हो सकता है, तब तक गुजरात की सेनाएँ भी आ जाएँ । हमारा सन्देश तो वहाँ पहुँच ही चुका होगा ।"

"वह तो कल तक पहुंच गया होगा !" वज़ीर ने कहा ।

फिर उन्होंने तत्काल मालवा के सुलतान महमूद खिलजी के नाम सहायता के लिए पत्र लिखा । एक विशेष दूत को तैयार किया । वह उसी समय पत्र लेकर किले के गुप्त मार्ग से निकल गया ।

अभी मुश्किल से दूत निकल पाया होगा, कि एक ज़ोर का धमाका सुनाई दिया ।

धाँ-धाँ-धाँ !

कई गोले एक साथ छूटे ।

"हमला ! कुम्भा ने हमला कर दिया !" तभी कहीं पास से सुनाई दिया ।

शमसखाँ और सेनापति ने तनकर एक-दूसरे को देखा । कहा किसी ने कुछ भी नहीं ।

लोग किले के भीतर ही इधर-उधर भाग रहे थे । उनके भागने की आवाज़ स्पष्ट सुनाई दे रही थी ।

"मेवाड़ के राणा ने चारों ओर से हमला कर दिया है, सुलतान !" तभी भागते हुए एक सैनिक ने प्रवेश किया ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"और तुम लोगों ने प्राण बचाने के लिए भागना शुरू कर दिया—क्यों ?" शमसखाँ ने क्रोध से उसकी तरफ देखते हुए कहा—"जवाबी हमला करो !" फिर उसने अपने सेनापति की तरफ देखते हुए कहा—"तुम अभी तक यहीं खड़े हो, सिपहसालार ! जाकर तोपचियों को हुक्म दो, वे भी जवाबी गोले दागें। जब तक मालवा या गुजरात से मदद नहीं आ जाती, तब तक जैसे भी हो, कुम्भा को उलझाये रखना है। जाओ, जाते क्यों नहीं ?"

सेनापति चुपचाप चला गया।

उनके पीछे-पीछे वह सैनिक भी चला गया।

सुलतान शमसखाँ बेचैन-सा होकर इधर-उधर घूमने लगा। पता नहीं वह क्या सोच रहा था।

इधर से भी तोपें गोले दागने लगीं।

रह-रहकर तोपों के दगने से धमाके सुनाई देते। सुलतान शमसखाँ वहीं चक्कर काटता रहा।

"किले के दक्षिण वाली दीवार में दरार आ गई है, हुजूर !" तभी एक हाँफते हुए सैनिक ने प्रवेश करके कहा—"सिपहसलार ने पूछा है, अब क्या किया जाए ?"

"मेरा सिर किया जाए !" सुलतान ने रुककर खीझते हुए कहा—"जिस राज्य का सेनापति इतना भी नहीं जानता, कि ऐसे मौके पर क्या करना चाहिए, उसकी जीत क्या खाक होगी ?" और भी अधिक खीझते हुए सुलतान ने कहा—"सिपहसलार को कहो कि कुछ हीजड़ों को बुलवाकर वहाँ उनका नाच शुरू करवा दें। साथ ही आप भी नाचने लगें—कम्बख्त कहीं का !"

"सुलतान !" सैनिक ने खिसियाना-सा होकर कहा।

"जाओ ! उसे कहो, अपनी सारी फौज उसकी हिफाज़त में लगा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शमसखाँ ने विवशता से कहा—"हमें पता नहीं था कि तम्बूरा और वीणा बजाने वाला मेवाड़ का राणा इतना बड़ा योद्धा भी है!"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दे। दुश्मनों का ध्यान किसी दूसरी तरफ बंटाने का प्रयत्न करे। उसकी मरम्मत करवाए। और क्या ? अरे, मेरा मुंह क्या ताक रहे हो !" शमसखाँ ने झिड़कते हुए कहा।

वह चला गया।

"सुलतान !" तभी एक अन्य सैनिक ने प्रवेश करते हुए कहा—"किले का सदर (मुख्य) फाटक टूटना ही चाहता है। मेवाड़ के राणा के हाथी टक्करें मार-मारकर उसका कचूमर निकाल देना चाहते हैं।"

"ओह !" शमसखाँ ने विवशता से कहा—"अब बचाव का कोई उपाय नहीं।" कुछ सोचते हुए जैसे अपने-आप से ही कह उठा—"हमें पता नहीं था कि तम्बूरा और वीणा बजाने वाला यह मेवाड़ का राणा इतना बड़ा योद्धा भी है ! नहीं, अब बचाव का कोई उपाय नहीं।"

"सुलतान !" तभी एक अन्य सैनिक ने आकर कहा—"दक्षिण की ओर से किले की दीवार गिर गई है। उधर पूर्व की ओर से राजपूत किले की दीवारों पर चढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। वे किसी भी समय भीतर घुस आने में सफल हो सकते हैं।"

"तो-तो ?" शमसखाँ की जबान लड़खड़ा रही थी। वह ठीक प्रकार से बोल भी न पा रहा था—"अरे, कोई ख़जाञ्जी (कोषाध्यक्ष) को बुलाओ। उसे सारा खजाना इकट्ठा करने को कहो। मेरा मुंह क्या देख रहे हो—अरे, जल्दी जाओ ! जाओ !"

एक व्यक्ति खजाँची को ढूंढ़ने भागा।

शमसखाँ पागलों की तरह इधर सें उधर तेज़-तेज़ चक्कर लगाने लगा।

"सुलतान ! सुलनान हुजूर ! किले का सदर फाटक टूटकर गिर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रहा है—वह चरमरा रहा है···उसके गिरने की आवाज़ यहाँ तक आ रही है।" घबराहट से हाँफते हुए एक सैनिक ने प्रवेश किया। उसे साँस तक लेना कठिन हो रहा था।

"यों कहो, हमारी किस्मत का सितारा चरमराकर टूट रहा है।" सुलतान ने लगभग रोती हुई आवाज़ में कहा।

तभी खज़ाँची ने प्रवेश किया।

"जल्दी करो! खज़ाने के सारे रुपये, पैसे, हीरे, मोती, जवाहरात निकालकर ले आओ! यहाँ से भाग जाने में ही खैरियत है—अरे, जल्दी करो न!"

सुलतान की आज्ञा पाकर खज़ाँची उन्हीं कदमों पर वापस मुड़ गया।

तब तक किले का मुख्य द्वार टूट चुका था। उधर राजपूत किले की दीवारों पर चढ़ने में भी सफल हो गए थे। किले के भीतर राजपूत मारकाट करने लगे। महाराणा कुम्भा उन्हें ललकारते हुए आदेश दे रहे थे :

"किले को पूरी तरह मिट्टी में मिला दिया जाए। एक भी शत्रु बचकर न जाने पाए। यह किला हमारे राष्ट्र की सोमाओं की रक्षा के लिए एक बहुत बड़ा खतरा था। इसका नाम तक नहीं रहना चाहिए! जय भगवान एकलिंग!"

"जय भगवान एकलिंग!"

"महाराणा कुम्भा की जय!"

किले की टूटती हुई चारदीवारी में राजपूतों का जय-जयकार गूँजने लगा।

शमसखाँ के सैनिक प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। उसके सेनापति का कुछ भी पता न चला। शायद वह लड़ते-लड़ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मारा जा चुका था।

शमसखाँ के लिए और अधिक ठहरना कठिन था। वह भी भागकर अपने सैनिकों के साथ जा मिला। वे सब जिधर मुँह आया भाग गये। खजाँची पकड़ा गया। बहुत बड़ी सम्पत्ति राणा के हाथ लगी। उन्होंने उसी समय घोषणा की :

"यह सारी नकद सम्पत्ति युद्ध में काम आने वालों के परिवारों की सहायता, घायलों की देख-भाल और सीमाओं को और भी अधिक सुरक्षित बनाने के लिए खर्च की जाएगी।"

देखते ही देखते सारा किला शत्रुओं से खाली हो गया। वहाँ मेवाड़ राज्य का झण्डा लहराने लगा।

"नहीं! यहाँ किले की दीवारों पर झण्डा नहीं लहराया जाए। उसे नगर के उच्च भवन पर लहराया जाए! किले का तो नाम भी बाकी नहीं रहना चाहिए।"

और सचमुच एक-दो दिनों में किले का नाम तक मिटा दिया गया। उसके स्थान पर एक सपाट मैदान-सा नजर आने लगा।

महाराणा ने नगर में एक दरबार किया। नागरिकों को संगठित रहकर देश-रक्षा में जुट जाने का सन्देश दिया। फिर उन्होंने वहीं के एक देशभक्त को वहां का शासक सामन्त नियुक्त किया। तीन-चार दिनों तक वहाँ की सारी व्यवस्था ठीक हो गई। अपने सैनिकों को ललकारते हुए महाराणा कुम्भा ने कहा :

अब हमारा अगला लक्ष्य है—बूंदी।"

"बूँदी!"

सैनिकों में उत्साह की एक नई लहर दौड़ गई।

अगले ही दिन महाराणा कुम्भा बूँदी की ओर चल दिए।

उधर शमसखाँ का दूत मालवा के सुलतान महमूद की राजधानी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माण्डू पहुचा। वह सीधा दरबार में गया। सुलतान उस समय अपने विशेष अहलकारों के साथ नर्तकियों का नृत्य देखने में मग्न थे।

"दुहाई है सुलतान की!" दूत ने पहुँचते ही कहा।

नृत्य तत्काल रुक गया। नर्तकियाँ एक तरफ हट गईं!

सुलतान महमूद खिलजी ने दूत की तरफ देखा। पूछा :

"कहाँ से आ रहे हो? क्या बात है?"

"मैं नागौर से आ रहा हूँ, सुलतान!" दूत ने झुककर अदब से कहा—"नागौर को मेवाड़ के राणा कुम्भा ने घेर रखा है! सुलतान शमसखाँ ने यह पत्र दिया है।"

सुलतान ने पत्र लेकर पढ़ा। फिर बोला :

"तो राणा कुम्भा ने अब हमारे राज्यों तक हाथ बढ़ाने आरम्भ कर दिए हैं...हूँ!" फिर वह कुछ सोचता हुआ बोला—"वहाँ इस समय गुजरात की कितनी फौज है?"

"पन्द्रह-बीस हज़ार से अधिक नहीं है, सुलतान!" दूत ने उत्तर दिया।

"राणा ने कितनी फौज से आक्रमण किया है?" सुलतान ने फिर प्रश्न किया।

"इतनी ही फौज होगी राणा की भी। उसमें दो-तीन सौ हाथी भी हैं।" कुछ रुककर दूत फिर बोला—"पर राणा के पास इस समय कुल फौज डेढ़-दो लाख से कम नहीं है, सुलतान! फिर वह फौज जान हथेली पर लिए फिरती है। राणा की आवाज़ सुनकर सारा राजस्थन इकट्ठा हो सकता है। उसका रुतबा और रोब चारों तरफ गालिब (छाया हुआ) है।"

"हूँ-ऊँ!" सुलतान महमूद ने लम्बी 'हूँ' की। फिर उसने सेनापति की तरफ देखा—"सिपहसालार! चुनी हुई बीस हज़ार सेना के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिपाहियों को तत्काल तैयार होने की आज्ञा दो। सवाल नागौर की रक्षा का नहीं, गुजरात के साथ हमारी दोस्ती का है। फिर अगर राणा कुम्भा को अभी न रोका गया, तो कल मालवा के लिए भी खतरा पैदा हो सकता है!"

"आप ठीक फरमाते हैं, सुल्तान!"

और सेनापति झुककर सलाम करके चला गया।

उसके बाद सुल्तान ने दूत से कहा :

"तुम जाकर आराम कर लो। कल सुबह हमारे साथ ही चलना।" ताली बजाकर उन्होंने पुकारा—"कौन है यहाँ?"

"जहाँपनाह!" एक द्वारपाल ने प्रवेश करते हुए कहा।

"भागौर के दूत को आरामगाह में ले जाओ।"

और दूत द्वारपाल के साथ चला गया।

उनको गये हुए अभी थोड़ी देर हुई थी, कि एक घायल से दिखाई देने वाले सैनिक ने प्रवेश किया। वह बुरी तरह हाँफ रहा था और घबराया हुआ था।

"तुम कौन हो?" सुल्तान महमूद ने आश्चर्य से देखते हुए प्रश्न किया।

"मैं नागौर का एक सैनिक हूँ, सुल्तान!" उसने वहीं ज़मीन पर बैठते हुए कहा।

"यह तुम्हारी हालत कैसी हो रही है?" सुल्तान ने फिर पूछा।

"मेरी जैसी हालत नागौर की भी हो चुकी है, सुल्तान! नागौर का ऊँचा और मज़बूत किला मिट्टी में मिल चुका है।

"क्या?" आश्चर्य से सुल्तान ने पूछा—"अभी थोड़ी ही देर पहले तो सुलतान शमसखाँ साहब का दूत आया था। हमने अपनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फौजों को तैयार होने का हुक्म दे दिया है।"

"उस दूत के वहाँ से निकलते ही राणा कुम्भा की फौज ने हमला बोल दिया था, सुल्तान! शाम होने से पहले राणा ने नागौर को फतह भी कर लिया।"

"हूँ!" सुलतान महमूद ने कुछ सोचते हुए कहा—"तो सुलतान शमसखाँ साहब का क्या हुआ?"

"वे किसी प्रकार बच निकले।" सैनिक ने कहा—"शायद गुजरात की तरफ चले गये हैं। मुझे उन्होंने आपको खबर कर देने के लिए भेजा। मुझसे तो बैठा भी नहीं जा रहा है, सुलतान!"

कुछ देर सन्नाटा छाया रहा।

सभी दरबारी कुछ परेशान-से दिखाई देने लगे।

"राणा कुम्भा क्या अभी तक नागौर में ही है?" कुछ देर बाद सुलतान महमूद ने घायल सैनिक से फिर पूछा।

"सुना है, नागौर का बन्दोबस्त करने के बाद राणा कुम्भा अब बंदी राज्य को फतह करने के लिए चले गये हैं!" घायल सैनिक ने कहा।

"क्या बूंदी?" सुलतान चौंक पड़ा—"लगता है, हमारी गुप्त योजना का उसे पता चल चुका। बूंदी ने तो हमारे साथ मिलकर उसका विरोध करने का निश्चय किया था!" कुछ सोचते हुए सुलतान ने अपने वज़ीर की तरफ देखा—"तब तो निश्चय ही वह कल को मालवा पर हमला कर सकता है, क्यों वज़ीरे-आज़म?"

"लगता तो यही है, जहाँपनाह!" वज़ीरे-आज़म ने कहा।

सुलतान गहरी सोच में डूब गये।

"तो फिर सिपहसालार को फौजें तैयार करने से रोक दिया जाए, सुलतान! अब नागौर जाना तो बेकार है।" मन्त्री ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहा ।

"हाँ-हाँ रोक दिया जाए !" पर फिर जैसे कुछ याद करते हुए सुलतान महमूद बोला—"राणा कुम्भा तो इस वक्त बूंदी की ओर चला गया है।" कुछ रुककर वह फिर एकाएक बोले—"क्यों न इस मौके से फायदा उठाया जाए, वज़ीरे-आज़म ?"

"मैं हुजूर का मतलब नहीं समझा !" वज़ीरे-आज़म ने कहा।

"अजी, मतलब बिल्कुल सीधा है।" सुलतान ने समझाते हुए कहा—"राणा खुद तो इस समय मेवाड़ में है नहीं ! क्यों न हम मेवाड़ पर ही हमला बोल दें ?"

"ख्याल तो बडा अच्छा है, जहाँपनाह !" वज़ीरे-आज़म ने कुछ सोचते हुए कहा—"फिर भी सब बात अच्छी तरह सोच लेना उचित होगा।"

"हमने सोच लिया है, वजीरे-आजम !" सुलतान महमूद ने दृढ़ता के साथ कहा—"अकेला राणा कुम्भा कितने मोर्चों पर लड़ सकेगा ! हम मेवाड़ पहुँचकर अनेक मोर्चे खोल देंगे। इस प्रकार उसकी शक्ति को बिखेरना और नष्ट करना अब जरूरी हो गया है।"

"तो ठीक है, सुलतान !" वज़ीर ने कहा।

"सिपहसालार को हुक्म दीजिये, वह दो-तीन में कम से कम पंचास हज़ार फौज तैयार करे।"

वज़ीरे-आज़म ने सन्देश देकर एक आदमी को सेनापति के पास भेज दिया। फिर वह सुलतान के साथ युद्ध के बारे में योजना बनाने लगे।

कुछ देर बाद द्वारपाल ने प्रवेश किया। वह झुककर सलाम करते हुए बोला :

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"हुजूर ! दरवाज़े पर गुजरात के शहंशाह मुज्जफरशाह का एक खास दूत खड़ा है।"

"क्या ?" सुलतान महमूद ने आश्चर्य से कहा।

"बादशाह मुज्जफरशाह ने मालवा की सीमा पर अपनी छावनी डाल रखी है। खास दूत कोई सन्देश लेकर आया है।"

"उसे जल्दी से ले आओ !"

सुलतान की आज्ञा पाकर द्वारपाल चला गया। दूसरे क्षण गुज़रात के बादशाह के विशेष दूत ने प्रवेश किया।

"मालवा के सुलतान की खिदमत में आदाब-अर्ज़ !" दूत ने झुकते हुए कहा।

"आदाब !" सुलतान ने हाथ उठाते हुए कहा—"कहो, दूत ! शहंशाह मुज्जफरशाह साहब तो खैरियत से हैं न !"

"खुदा की दुआ है !" दूत बोला—"हमारे बादशाह सलामत आज ही आपसे भेंट कर कुछ जरूरी सलाह-मशविरा करना चाहते हैं, सुलतान हुजूर !"

"आज ही !" सुलतान ने कहा—"यह हमारी खुश-किस्मती (सौभाग्य) है।"

"तो बादशाह सलामत तशरीफ लाना ही चाहते हैं !"

"क्या ?" दूत की बात सुनकर सलतान महमूद फिर चौंक पड़े।

तभी बाहर द्वार से सुनाई दिया :

"होशियार ! बा-अदब…बा-मुलाहिजा…होशियार !"

और आठ-दस सैनिकों से घिरे, शाही पोशाक पहने, गुजरात के शाह मुज्जफरशाह ने प्रवेश किया।

सुलतान महमूद, उसके वजीरे-आज़म तथा बाकी सभी दरबारी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनका स्वागत करने के लिए खड़े हो गय।

"खुश आमदीद (स्वागत) हो गुजरात के शहंशाह का !" सुलतान महमूद ने आगे बढ़कर उनसे हाथ मिलाया।

वे दोनों सुलतान के सिंहासन पर बैठ गये। बाकी सभी भी अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये।

कुछ देर तक इधर-उधर की बातों के बाद वे दोनों अपने मुख्य विषय पर आ गये।

"नागौर के हालात तो आप सुन ही चुके होंगे !" सुलतान महमूद बोला—"अफसोस है, हमारे पास सन्देश देर से पहुंचा।"

"यही हमारे साथ भी हुआ।" शहंशाह गुजरात ने गम्भीरता से कहा—"हम नागौर की तरफ ही जा रहे थे। पर सब सुनकर अब वहाँ जाना बेकार समझा।"

उसके बाद अपनी योजना बताते हुए सुलतान महमूद ने कहा—"इस प्रकार राणा कुम्भा इस समय मेवाड़ में नहीं है ! वह बूंदी में है। हम चाहते हैं कि इस मौके से फायदा उठाकर वहाँ हमला बोल दिया जाए !"

"आपने खूब सोचा, सुलतान !" मुज्जफरशाह ने कहा—"इधर आप घेरा डालिये। उधर हम भी उसके कुछ इलाकों को घेरने की कोशिश करते हैं। हमारा इरादा आबू के पहाड़ी इलाके पर हमला करने का है। वहाँ से मेवाड़ का नया किला कुम्भलगढ़ भी कुछ दूर नहीं है। क्यों, कैसा रहेगा !"

"बिल्कुल ठीक !" सुलतान महमूद बोला—"उधर से आप घेरिये। हम मन्दसौर और माण्डलगढ़ की तरफ से उसे घेरने की कोशिश करेंगे—क्यों ?"

"तो ठीक है !" दोनों ने एक-दूसरे के हाथ पर हाथ मारा। फिर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुज्जफरशाह ने कहा—"जो जितने इलाके जीत लेगा, उतने उसी के रहेंगे !"

"हमें मंजूर है !" सुलतान महमूद ने कहा।

वह दिन मुज्जफरशाह ने शाही मेहमान बनकर माण्डू में ही बिताया। अगले दिन निश्चित योजना के अनुसार कार्य करने का वचन देकर गुजरात का शाह अपने शिविर में लौट गया।

तीन दिन और गुजर गये।

चौथे दिन सुलतान महमूद मन्दसौर की तरफ चल दिया। उसके साथ विशाल सेना थी। गुजरात का सुलतान भी आबू की पहाड़ियों की ओर प्रस्थान कर गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दस

बूंदी राज्य !

बूंदी वालों ने जल्दी ही आत्म-समर्पण कर दिया।

विशेष दरबार का आयोजन किया गया। महाराणा कुम्भा ने वहाँ के निवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा :

"बूंदी के देशभक्त राजपूतों ! आप लोग उतने ही स्वतन्त्र हैं, जितना कि मेवाड़ राज्य का कोई व्यक्ति हो सकता है। हमारे पूर्वज एक हैं, इसलिए हम भी एक हैं। बूंदी को विजय करने का हमारा यह उद्देश्य बिल्कुल नहीं है, कि हम आपकी स्वतन्त्र सत्ता को समाप्त कर देना चाहते हैं। नहीं, हमारा ऐसा विचार बिल्कुल नहीं है। हम केवल इतना चाहते हैं कि बूंदी राज्य हमेशा की तरह अपने-आपको मेवाड़ राज्य और सारे देश का एक अंग समझे। उसकी तलवार अपनों के विरुद्ध नहीं, विदेशी शत्रुओं और देशद्रोहियों के विरुद्ध ही उठे। आप सोचिये, अगर हम लोग आपस में ही लड़ते रहेंगे, तो देश की रक्षा कैसे होगी ? आप जानते हैं कि हमारी सीमाओं पर विदेशी शक्तियाँ हमेशा अपनी नजरें गड़ायें रहती हैं। यदि हम छोटे-छोटे प्रान्तीय स्वार्थों को लेकर लड़ते रहेंगे, तो फिर हमारी स्वतन्त्रता कभी नहीं रह सकेगी। इसलिए हमें प्रान्तीय स्वार्थों को भुलाकर एक राष्ट्र के लिए संगठित होना है, संघर्ष करना है। मुझे पूर्ण आशा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है, बूंदी के मेरे भाई मेरी इस बात से सहमत होंगे।"

"हम सब सहमत हैं, महाराणा!" अनेक आवाज़ें सुनाई दीं!

"इस गड़बड़ में बूंदी वालों का बहुत कम हाथ है, महाराणा!" बूंदी के एक सरदार ने अपने स्थान पर खड़े होते हुए कहा—"देश के केन्द्र के लोग ही यहाँ आकर झूठे प्रचार किया करते हैं।"

"क्या-आ!"

महाराणा ने चौंकते हुए कहा।

"हाँ, महाराणा!" बूंदी का वह सरदार फिर बोला—"आपने मेवाड़ के चारणों और भाटों को निकाल दिया था। वही लोग यहाँ घूम-घूमकर पिछले कई वर्षों से घृणा और द्वेष का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने ही यह प्रचार किया है कि मेवाड़ के महाराणा बूंदी राज्य की स्वतन्त्र सत्ता को समाप्त कर देना चाहते हैं। उन्हीं के उकसावे में आकर यहाँ के लोग भड़क उठे।"

"हूँ!" महाराणा कुम्भा कुछ गम्भीर हो उठे। बोले—"उस समय चारणों और भाटों ने कुछ देशद्रोहियों को आश्रय दिया था। इसलिए हमारा कदम उचित था। चारण और भाटों ने अपनी वीरता-भरी वाणियों से हमेशा राजस्थान को और सारे देश को नया उत्साह और जोश प्रदान किया है। हम इस बात को कभी नहीं भूल नहीं सकते। पर उनमें कुछ स्वार्थी लोग घुस आये थे। चारण और भाट यदि स्वदेश के प्रति अपने कर्त्तव्य को समझते हों, उसे निभाने के लिए तैयार हों तो हम प्रतिबन्ध उठाने की घोषणा करते हैं।"

"महाराणा कुम्भा की जय!"

तभी दरबार में से किसी ने उठते हुए नारा लगाया:

"जय!"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"क्या-आ ?" महाराणा ने चौंकते हुए कहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चारों ओर से सुनाई दिया।

"हम चारणों के मन में क्षोभ था, महाराणा!" उस नारा लगाने वाले व्यक्ति ने कहा—"आपने एक के कुकर्म का दण्ड सारी जाति को दिया।"

"यदि ऐसी बात है, तो अपने अविचार के लिए हम क्षमा चाहते हैं!" महाराणा ने भावुक होते हुए कहा—"आप लोगों को तो पता ही है कि हमें समस्त कलाओं के प्रति कितना प्रेम है। विशेषकर काव्य (कविता) और संगीत तो हमारे प्राण हैं। फिर भला हम सच्चे कलावन्तों की उपेक्षा कैसे कर सकते हैं। कला का कर्त्तव्य आत्मा में आनन्द और हृदय में उत्साह का संचार करना होना चाहिए। कला और कलाकार तो किसी भी देश और जाति के प्राणों की धड़कन होते हैं। चारण और भाट वास्तव में हमारे देश की लोककला के गायक और संरक्षक हैं। पर उन्हें अपनी कविता और कला का उपयोग राष्ट्रहित के लिए करना चाहिए। मेवाड़ में किसी भी कला पर न कोई प्रतिबन्ध है, न रहेगा!"

"आप महान् हैं, महाराणा!" उस व्यक्ति ने कहा। वास्तव में वह स्वयं भी चारण ही था। उसने जोश में भरकर एक फड़कती हुई कविता पढ़ डाली। महाराणा उसे सुनकर झूम उठे। उन्होंने तत्काल घोषणा की:

"ऐसी सुन्दर कविता रचने वाले को हम मेवाड़ के राज-दरवार में निमन्त्रित करते हैं। वहीं उसका उचित सत्कार किया जा सकेगा।"

"यह मेरा सौभाग्य है, महाराणा!" उस चारण ने कहा।

इसके बाद महाराणा ने बूंदी के शासक राठौर को सम्बोधित करते हुए कहा:

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"बूँदी आपका राज्य है। इसे आप ही संभालिये। अपने-आप को इस पूरे देश का एक अंग समझिये। जब भी हमारी सलाह या सहायता की आवश्यकता हो, हमारे पास आइये, या हमें पुकारिये! हम भागते आयेंगे! पर देश की अखण्डता में कोई दरार नहीं आनी चाहिए!"

"आप उदार हैं महाराणा और महान् वीर भी!" राठौर शासक ने अपना मस्तक झुकाते हुए कहा—"विश्वास रखिये, भविष्य में बूँदी राज्य कोई ऐसी हरकत नहीं करेगा, जिससे देश की अखण्डता भंग हो!"

"हमें यही आशा थी, राठौर!" कहते हुए महाराणा कुम्भा ने उसे गले से लगा लिया।

"देश की अखण्डता!" भीड़ में से किसी ने नारा लगाया।

"अमर रहे।" सभी ने एक साथ नारे का उत्तर दिया।

"जय स्वदेश! जय भगवान एकलिंग!"

महाराणा और राठौर-नरेश ने भी एक साथ कहा :

तभी द्वारपाल ने प्रवेश किया। झुकते हुए बोला :

"महाराणा की जय! मेवाड़ का एक दूत सेवा में उपस्थित होना चाहता है, महाराणा!"

"मेवाड़ का दूत! गम्भीर होते हुए महाराणा बोले—"उसे यहीं ले आओ।"

द्वारपाल चला गया। दूसरे ही क्षण प्रवेश करते हुए दूत बोला :

"महाराणा की जय!"

"कहो, किशनसिंह!" महाराणा ने दूत को पहचानते हुए प्रश्न किया—"कुशल तो है न मेवाड़ में?"

"आपके प्रताप से सभी शुभ है, महाराणा!" दूत किशनसिंह ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहा।

"तो फिर ?" महाराणा ने प्रश्न भरी दृष्टि से देखा।

"आप यहाँ हैं। उधर मेवाड़ को अरक्षित जानकर शत्रुओं की बन आई है, महाराणा !" दूत किशनसिंह ने कहा—"इस बार गुजरात और मालवा मिलकर कई स्थानों पर देश की सीमाओं को भड़काने का प्रयत्न कर रहे हैं, महाराणा !"

"क्या ?" महाराणा ने चौंकते हुए पूछा—"गुजरात और मालवा दोनों मिलकर ?"

"हाँ, महाराणा !" दूत ने कहा।

"कसे ?" महाराणा ने फिर प्रश्न किया।

"गुजरात का सेनापति इमदादुलमुल्क आबू के राजमहलों को घेरे हुए है। गुजरात का बादशाह मुज्जफरशाह खुद कुम्भलगढ़ की तरफ बढ़ रहा है।" दूत ने बताया।

"और मालवा का सुलतान ?" महाराणा ने प्रश्न किया।

"उसकी एक टुकड़ी मन्दसौर की तरफ बढ़ रही है, दूसरी माण्डलगढ़ की ओर। वह स्वयं दोनों के मध्य डेरा डालकर सेनाओं का संचालन कर रहा है। महाराणा ! महामन्त्री ने पूछा है, अब हमारे लिए क्या आदेश है ?" दूत किशनसिंह ने कहा।

"आदेश !" महाराणा मुस्कराये—"ऐसे समय में तो तलवार ही इन विदेशी आक्रमणकारियों को कोई आदेश दे सकती है। बस, तलवार का भैरव नृत्य चारों तरफ होना चाहिए, किशनसिंह !"

"हमारे लिए क्या आज्ञा है, महाराणा ?" बूँदी के नरेश ने कहा—"आपका संकेत पाते ही बूँदी के राठौर इन विदेशियों को कच्चा चबा जायेंगे !"

"अभी उसकी आवश्यकता नहीं, बूँदी नरेश !" महाराणा ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहा—"आप लोग यहाँ की व्यवस्था को दृढ़ता से संभाले रहिये। पराजित शत्रु इधर भी आ सकते हैं। उनसे हम निपट लेंगे!"

उसके बाद महाराणा ने अपने सेनापति तथा प्रमुख सामन्तों को बुलाया। जल्दी ही उन्होंने कुछ विचार-विमर्श किया। अपनी सेना को पाँच भागों में बाँटा। एक को माण्डलगढ़ की तरफ, दूसरे भाग को मन्दसौर, तीसरे को कुम्भलगढ़ और चौथे को आबू के राज्य-महलों की ओर जाने का आदेश दिया। पाँचवें भाग को लेकर स्वयं सबके मध्य रहने की बात कही। ताकि अवसर पड़ने पर जहाँ भी आवश्यकता हो, उचित सहायता पहुँचाई जा सके। फिर दूत किशन-सिंह से बोले :

"तुम अभी मेवाड़ वापस चले जाओ! महामन्त्री से कहना, घबराने की आवश्यकता नहीं। सभी शत्रुओं से एक साथ निबटा जाएगा। चित्तौड़गढ़ में जो सेना है, उसे कुम्भलमेर की तरफ हमारे पास भेज दिया जाए!"

"जो आज्ञा, महाराणा!" कहकर दूत किशनसिंह तत्काल लौट गया।

महाराणा चलकर अपनी सैनिक छावनी में आ गये। सभी सैनिकों को एक स्थान पर इकट्ठा किया गया। महाराणा स्वयं एक ऊँचे पत्थर पर खड़े हो गये। कमर में लटक रही तलवार पर हाथ रख, अपने सैनिको को ललकारते हुए बोले :

"मेवाड़ के वीर सैनिको! हमारे दो भयानक शत्रु चारों ओर से हमें घेरने का प्रयत्न कर रहे है। वे दोनों विश्वासघाती तो हैं ही, पर बड़ भयानक भी हैं। उनकी नीयत हमें सदा के लिए गुलाम बना लेनें की है! वे हमारी हरी-भरी मातृभूमि को रौंद डालना चाहते हैं। उनमें से एक है, मालवा का सुलतान महमूद खिलजी,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिसने हमारे साथ मित्रता और भाईचारे का हाथ मिलाया था पिछले कई वर्षों से हम उसकी विश्वासघाती हरकतों को देख-सुन रहे थे। पर अपने वचन को निभाने के लिए हमने उस पर आक्रमण नहीं किया। लेकिन वह विश्वासघाती, मित्रता के नाम को कलंकित करने वाला महमूद खिलजी अपने अपवित्र इरादे लेकर हमारे देश पर चढ़ आया है। उसे वह पाठ पढ़ाना होगा कि उसकी पीढ़ियाँ याद रखें! बोलो, क्या आप लोग तैयार हैं?"

"हम सब तैयार हैं, महाराणा!" सैनिकों ने तलवारें और भाले तानते हुए जोश में भरकर कहा।

"हमारा दूसरा शत्रु है गुजरात का मुज्जफरशाह। कल तक वह दिल्ली राज्य के अधीन था। अपने-आपको स्वतन्त्र घोषित कर वह बादशाह बन बैठा है। उसने समझ लिया है कि शायद मेवाड़ राज्य भी दिल्ली के समान कमज़ोर होगा। इसी कारण हमारे विश्वास-घाती मित्र मालवा के सुलतान महमूद के साथ मिलकर, अपने लाव-लश्कर लेकर मेवाड़ पर चढ़ आया है। क्या आप ऐसे व्यक्तियों को सहन कर सकते हैं?"

"कभी नहीं, महाराणा! कभी भी नहीं!"

"हम दोनों शत्रुओं के दाँत तोड़कर रख देंगे।"

"अपनी मातृभूमि, अपनें स्वदेश की रक्षा के लिए हम प्राणों पर खेल जायेंगे, महाराणा!"

सैनिक और भी जोश-भरी बातें कहते रहे।

"लेकिन याद रखो, मेवाड़ के देशभक्तो!" महाराणा ने फिर ललकार-भरे स्वरों में कहा—"नारे लगाना और वास्तव में काम करना—दोनों में बड़ा अन्तर है। फिर शत्रुओं ने हमें बेखबर जान-कर बड़े योजनाबद्ध रूप से आक्रमण किया है। उतने ही ज़ोर से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमें भी उसका उत्तर देना होगा। आज हमारी शूरवीरता और देश-प्रेम की परीक्षा की घड़ी आ गई है। हमें सन्त कबीरदास जी का एक दोहा याद आ रहा है :

सूरा तबहिं परखियै, लड़ै धनी कै हेत।
पुरजा-पुरजा कटि पड़ै, तऊ न छाँड़ै खेत॥

हमारा देश, हमारी मातृभूमि ही हमारा धनी (स्वामी) है। उसकी रक्षा के लिए हमें प्राण-प्रण की बाज़ी लगा देनी है। जीत या मौत—बस, तीसरी बात नहीं।"

"हम अपनी परीक्षा में कभी असफल न होंगे, महाराणा !" सभी सैनिकों ने पूरे जोश के साथ कहा।

"याद रखो, देशभक्तो ! हमारा जीवन तलवारों की छाया में ही सुरक्षित रहा है और रह सकता है। जब भी ढील आई, शत्रुओं ने लाभ उठाने का प्रयत्न किया। तलवार से ही किसी देश और जाति की स्वतन्त्रता तथा सुरक्षा का इतिहास लिखा जा सकता है। पर बड़ा कठिन है यह तलवार का मार्ग ! महात्मा कबीर का वह दोहा आपने भी सुना होगा—

सूर कहावन कठिन है, ज्यों खंडे की धार।
डगमगाये तो गिर पड़े, निहचल उतरे पार॥

तो हमें खंडे (तलवार) की धार पर चलना है। तनिक भी डगमगाना नहीं। वीरता के कर्त्तव्य पर स्थिर रहकर इस संकट रूपी धारा के पार उतरना है। बोलो, मेवाड़ के देशभक्तो ! क्या आप लोग तैयार हैं ?"

"अब एक घड़ी की भी और देर नहीं होनी चाहिए महाराणा ! हम मर-मिटेंगे, पर एक कदम पीछे न रखेंगे। जीत या मृत्यु—यही हमारा एकमात्र नारा है।" सैनिकों ने कहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और फिर नगाड़े पर चोट पड़ी—ढम् !

ढम् ! ढम् ! ढम् !

बिगुल भी बजने लगा ।

सैनिक शिविर देखते ही देखते उखड़ गया ।

महाराणा ने सैनिकों को पाँच भागों में अपनी योजना के अनुसार बांट दिया । स्वयं घोड़े पर सवार महाराणा कुम्भा सबके आगे आ खड़े हुए । अपनी तलवार को हवा में लहराते हुए उन्होंने नारा लगाया :

"जय भगवान एकलिंग !"

"जय !" सभी ने उत्तर दिया ।

"जय स्वदेश !" सभी ने उत्तर दिया ।

"जय स्वदेश ! जय मेवाड़ !"

"जय !"

"आक्रमण !"

चिल्लाकर महाराणा ने अपने घोड़े को एड़ लगा दी । वह हवा से बातें करने लगा ।

बूंदी राज्य की सीमा से निकल पाँचों टुकड़ियाँ अलग-अलग दिशाओं में चलने लगीं ।

महाराणा ने अपनी सैनिक टुकड़ी ले कुम्भलमेर के इधर एक भयानक जंगल में जाकर डेरा डाल दिया । वे वहाँ एक क्षण भी चुप करके न बैठ सके । आज यदि आबू की पहाड़ियों में अपने सैनिकों को उत्साहित कर रहे हैं, तो कल मन्दसौर पर । अगले दिन वे यदि माण्डलगढ़ पर मोर्चा ले रहे होते, तो उसके अगले दिन कुम्भलगढ़ पर शत्रुओं के छक्के छुड़ा रहे होते । उनके लिए एक क्षण भी चैन नहीं था ।

आबू !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुम्भलगढ़ !

और उसके बाद मन्दसौर !

फिर कुम्भलमेर !

सभी जगह मेवाड़ राज्य का विजय-ध्वज एक बार फिर लहराने लगा। मालवा और गुजरात की सेनाएँ महाराणा के जोरदार आक्रमणों की ताव न ला सकीं ! बारी-बारी सभी मोर्चों से भाग खड़ी हुईं।

"मेवाड़ अमर रहे !"

महाराणा कुम्भा की जय !"

चारों ओर पहाड़ी घाटियाँ और जंगल गूंजने लगे।

गुजरात और मालवा की सेनाएँ माण्डू में वापिस आ गईं। उधर विजयी बनकर महाराणा कुम्भा ने चित्तौड़गढ़ में प्रवेश किया। सारे मेवाड़ में दीपमाला जलाई गई।

उधर गुजरात और मालवा में शोक छा गया।

कई दिन बीत गये।

गुजरात का सुलतान मुज्जफरशाह मालवा में ही डेरा डाले रहा। वह मालवा के सुलतान के साथ मिलकर मेवाड़ पर आक्रमण करने की कोई और योजना बनाना चाहता था।

"तो अब क्या विचार है, सुलतान ?"

एक दिन मुज्जफरशाह ने सुलतान महमूद से पूछा।

"अभी तो शान्त रहना ही अच्छा है, शाह साहब !" सुलतान महमूद ने कहा—"आजकल राणा कुम्भा भूखा शेर बना हुआ फिरता हैं। उससे नाहक छेड़खानी करने से अभी कोई लाभ नहीं।"

"पर इससे तो राणा के हौंसले बहुत बढ़ जायेंगे !" मुजफ्फरशाह नें कहा।

"पर चारा ही क्या है ?" सुलतान महमूद बोला।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"क्यों न आप अजमेर पर आक्रमण करें।" सुलतान मुजफ्फरशाह ने उकसाते हुए कहा—"वहाँ का सूबेदार काफी कमजोर है। फिर उधर राणा कुम्भा का ध्यान भी नहीं है। अगर अजमेर हाथ में आ गया, तो वहाँ से भविष्य में मेवाड़ पर घेराबन्दी करना काफी आसान हो जायेगा।"

"आपका विचार ठीक है।" सुलतान महमूद ने कहा—"योजना भी अच्छी है। परन्तु, फिलहाल कुछ दिनों तक इन्तजार करना ही ठीक रहेगा।"

"देख लीजिए!" मुजफ्फरशाह ने कहा—हमें तो अब जल्दी ही वापस गुजरात जाना पड़ेगा। सुना है, उधर कुछ इलाकेदारों ने बगावत करना शुरू कर दिया है। हाँ, आपको जब भी गुजरात की फौज की जरूरत होगी, भेज दी जायेगी। पर महाराणा कुम्भा को चैन से नहीं बैठे रहने देना चाहिए। इससे वह हम सबके लिए खतरा बन जायेगा।"

"ऐसा ही किया जायेगा, शाह साहब!"

उसके दो-तीन दिनों के बाद ही गुजरात का शाह मुजफ्फरशाह गुजरात की तरफ चल दिया।

मालवा का सुलतान अपनी इस हार से मन ही मन कुढकर रह गया था। वह किसी भी तरह अपनी हार को जीत में बदलना चाहता था। वह मौके की ताक में रहने लगा। नित नई-नई योजनाएँ बनाता पर उसे कोई भी पूरी होती हुई दिखाई न देती। अन्त में उसने मेवाड़ राज्य के माण्डलगढ़ पर आक्रमण करने की योजना बना डाली। एक दिन वह अपनी मजबूत सैनिक टुकड़ी लेकर माण्डलगढ़ की तरफ चल दिया।

उधर महाराणा भी अपने थोड़े-से साथियों को साथ लेकर शिकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

खेलने के लिए माण्डलगढ़ के जंगलों में ही आये हुए थे। पर सुलतान खिलजी को इस बात की खबर न थी। अतः अपने सैनिक बल पर भरोसा किये, वह अपनी छावनी में निश्चिन्त पड़ा था। अगले ही दिन आक्रमण करने की उसकी योजना थी।

अपने सैनिक-शिविर में बैठा सुलतान महमूद अपने सेनापति से आक्रमण की योजना पर बात कर रहा था कि तभी एक सैनिक ने भागते हुए समाचार दिया :

"गजब हो गया, सुलतान !"

"क्यों, क्या हुआ ?" सुलतान ने हड़बड़ाकर पूछा।

'आक्रमण !" सैनिक बोला।

"किसका आक्रमण ?" सुलतान ने घबराहट में पूछा।

"राणा कुम्भा…!"

सैनिक ने इतना ही कहा था कि चारों ओर शोर मच गया। मालवा के सैनिक इधर-उधर भागने लगे। शोर मच गया :

"कुम्भा आ गया…कुम्भा आ गया !"

"यहाँ भी कुम्भा—ओह !" सुलतान महमूद ने कुछ बड़बड़ाते हुए आदेश दिया—"घेर लो उसे ! जाने न पाये !"

घमासान युद्ध छिड़ गया।

कुम्भलगढ़ की सेना भी किले से निकलकर महाराणा के साथ आ मिली।

एक दिन—दो दिन, भयानक युद्ध हुआ।

तीसरे दिन मालवा के सुलतान की छावनी का कहीं पता न चल सका।

वह रात ही रात में मालवा की ओर खिसक गया था।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्यारह

"ठुमक-ठुमक बाजत पायल,
राधा नाच रही—सखि, साँवरियाँ संग,
राधा नाच रही!"

"वाह! वाह!" चारों ओर प्रशंसा-भरे स्वर गूँज उठे।

अनेक संगीतज्ञों की मंडली जुड़ी थी। महाराणा कुम्भा उनके सामने अपनी संगीत-कला का प्रदर्शन कर रहे थे। चित्तौड़गढ़ में उनका राज-भवन आजकल 'कला-भवन' के नाम से प्रसिद्ध हो रहा था।

महाराणा पिछले कई वर्ष से निरन्तर युद्धों में मग्न रहे थे। अब चारों ओर शान्ति का राज्य था। सारा देश स्वतन्त्र था। उन्होंने आस-पास के समस्त शत्रुओं को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया था। गुजरात और मालवा तो अब मेवाड़ की तरफ आँख उठा-कर भी नहीं देख सकते थे। बीच में मालवा के सुलतान ने अजमेर पर अधिकार जमा लिया था। पर एक ही दिन में महाराणा ने उसे वहाँ से निकाल भगाया था। इसलिए अब चारों ओर शान्ति छा रही थी। इस कारण अब राणा का अधिक से अधिक समय कलाओं की साधना में बीत रहा था।

पिछले कई दिनों के परिश्रम से उन्होंने संगीत से सम्बन्धित तीन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रन्थ तैयार किये। उनके नाम थे—संगीत राज, संगीत मीमांसा, संगीतामृत। इन्हीं रचनाओं को विद्वान् संगीतकारों को दिखाने के लिए उन्होंने देश के कोने-कोने से बड़े-बड़े संगीतकारों को बुलाया था। सभी विद्वानों ने उनकी रचनाओं की प्रशंसा की।

"राधा नाच रही···सखि साँवरिया संग।"

ठुमक-ठुमक बाजत पायल···पायल !···पायल !"

और महाराणा कुम्भा ने स्वर को मध्यम करके अन्त में अपना गीत समाप्त किया।

कई क्षणों तक अन्य संगीतकार उनकी प्रशंसा करते रहे।

उसके बाद अन्य विद्वान् संगीतकार भी अपने-अपने गीत और राग सुनाते रहे।

काफी समय तक गीत-संगीत की मधुर गंगा बहती रही।

रात आधी से अधिक बीत गई थी। उसके बाद सभी लोग उठकर विश्राम करने के लिए चले गये।

महाराणा उठे, उन्होंने अपने साज सँभाले। एक क्षण के लिए उन्होंने महल की खिड़की से बाहर दूर तक झाँका, फिर मुड़े। तभी उन्हें किसी का स्वर सुनाई दिया। कोई बड़े ही भद्दे और लड़खड़ाते स्वरों में गाता हुआ उधर आ रहा था। वह वही गीत गा रहा था, जो अभी-अभी महाराणा ने विद्वानों की सभा में गाया था। गाने वाला गा रहा था:

"ठु-ठु-ठु-मु-मु-क-टुमुक-क-क-अ-अ !"

"कौन है ?" महाराणा ने चिल्लाकर कहा।

"त-त-तुम-म-म कौन हो ?" उस आने वाले ने उसी प्रकार लड़खड़ाते हुए स्वरों में कहा।

"हम पूछते हैं, कौन हो तुम ?" महाराणा ने क्रोध से गरजते एहु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर प्रश्न किया।

"तुम कौन होंते हो हमें पूछने वाले?" उस व्यक्ति ने खड़े होकर ध्यान से देखने का प्रयत्न करते हुए कहा। पर वह सीधा खड़ा न रह सका। उसके पाँव नशे में लड़खड़ा रहे थे। ऐसा लगता था कि वह व्यक्ति अभी-अभी गिर पड़ेगा।

"अरे कोई पहरेदार है यहाँ?" महाराणा ने इधर-उधर देखते हुए कहा।

"महाराणा की जय!" एक पहरेदार ने भागते हुए आकर कहा—"आज्ञा महाराणा!"

"देखो, वह व्यक्ति कौन है और यहाँ क्या कर रहा है?" महाराणा ने सामने दीवार की परछाई में खड़े उस व्यक्ति की तरफ संकेत करते हुए कहा!

पहरेदार ने ध्यान से देखा। फिर वह तेजी से उस तरफ भागा। तब तक वह व्यक्ति झूमता हुआ नीचे बैठ गया था।

"कौन हो तुम?" पहरेदार ने समीप पहुंच, बाँह से पकड़कर उसे उठाने का प्रयत्न करते हुए पूछा।

"तुम···तुम! तुम्हारी इतनी हिम्मत त-तु-म-त-तु-ऊ-म-हम··· से प-पू-ऊ-छो···ठहरो।" और ताड़ से उस व्यक्ति ने पहरेदार के मुख पर एक चाँटा दे मारा।

"आह! इतनी बदतमीज़ी!" कहते हुए महाराणा भागकर वहाँ आ गये। उन्होंने इस व्यक्ति को चाँटा मारने के लिए हाथ ऊपर उठाया। उसे ध्यान से देखा। उनका हाथ रुक गया। वह चिल्ला कर बोले—"ओह! तुम···तुम ऊदा (कुंवर उदयकर्ण)!"

वह राजकुमार उदयकर्ण ही था। उसने बहुत अधिक शराब पी रखी थी। वह लड़खड़ाता हुआ टुकर-टुकर महाराणा की ओर देख

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रहा था।

"तुम इतना गिर चुके हो, ऊदा !" दुःख और क्षोभ से भरकर महाराणा बोले—"तुमने पहरेदार को चाँटा नहीं मारा, ऊदा ! बल्कि मेवाड़ की व्यवस्था के मुँह पर, बाप्पा रावल के पवित्र वंश के मुँह पर चाँटा मारा है···हमारे मुँह पर चाँटा मारा है।"

"ठुमक-ठुमक बाजत पायल···!" और राजकुमार ऊदाजी लड़खड़ाते स्वरों में गाने लगा। फिर नाचने की कोशिश करते हुए गाने लगा—"राधा नाच रही—सखि···!"

"जबान बन्द करो, ऊदा !" महाराणा कुम्भा चिल्लाये।

"ऊदा नहीं, महाराणा उदयकर्ण कहो—महाराणा !" ऊदा ने अकड़कर झूमते हुए कहा।

तड़ाक् ! तड़ाक् ! तड़ाक् !

और तीन-चार चांटे उसके मुख पर पड़े। महाराणा का शरीर गुस्से से काँपने लगा। बोले :

"नीच ! तुम अपने नशे की झोंक में पवित्र संगीत का स्वर बिगाड़कर कला की पवित्रता को कलंकित करना चाहते हो ! दूर हो जाओ, मेरी आँखों से !"

"आप ! आपने मुझे चाँटा मारा···चाँटा मारा !" गाल पर हाथ रखते हुए उदयकर्ण ने कहा—"एक पहरेदार के सामने आपने मेरा अपमान किया···मेरा अपमान किया···अपमान···अपमान !" और बार-बार 'अपमान' शब्द को दुहराते हुए वह वहाँ से चल दिया।

उसके शब्द कई क्षणों तक वहाँ गूँजते रहे।

महाराणा जड़ से बने कई क्षणों तक वहीं खड़े रहे ! फिर पहरेदार से बोले—"तुम जाओ !"

पहरेदार चला गया, पर राणा अभी भी वहीं खड़े रहे। उन्हें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाराणा बोले—"तुमने पहरेदार को चाँटा नहीं मारा, ऊदा ! बल्कि मेवाड़ की व्यवस्था के मुंह पर, बाप्पा रावल के पवित्र वंश के मुंह पर चाँटा मारा है।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लग रहा था, कि जीवन के अनेक मोर्चों पर जीतकर भी वे हार गये हैं।

एक दिन—दो दिन बीत गये।

महाराणा अपने महलों से बाहर नहीं निकले।

तीसरे दिन सारे मेवाड़ में समाचार फैल गया—महाराणा कुम्भा सख्त बीमार हैं।

चारों ओर उनके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएँ होने लगीं। राजवैद्य उनका उपचार करने लगे। लगातार इलाज द्वारा उनका स्वास्थ्य महीने-भर बाद कुछ अच्छा दिखाई देने लगा।

आज बहुत दिनों बाद उन्होंने पथ्य ग्रहण किया था। वे उठकर एक गाव-तकिये का सहारा लेकर बैठे हुए थे। मेवाड़ के महामन्त्री, सेनापति, अनेक सामन्त और सरदार उनके आसपास बैठे हुए थे। राणा के चेहरे पर काफी कमजोरी और चिन्ता के लक्षण थे।

"आप कुछ चिन्तित लग रहे हैं, महाराणा!" महामन्त्री ने पूछा।

"मुझे देश की चिन्ता खाये जा रही है, महामन्त्री!" राणा ने एक तरफ स्थिर नज़रों से देखते हुए कहा—"मेवाड़ का भविष्य जाने क्या होगा!" कुछ रुककर वे फिर बोले—"पचास वर्ष हो गये हैं हमें लगातार लड़ते हुए, संघर्ष करते हुए। हमने कभी निराशा को अपने पास फटकने नहीं दिया। प्रत्येक दिन हमारे लिए एक नया सन्देश लेकर आता रहा। हमने हर कठिनाई में भी जीवन के मधुर संगीत को सुनने का प्रयत्न किया। मगर इन बेटों की करतूतों ने हमारा मन तोड़ दिया है। इस मोर्चे पर हम हमेशा के लिए पराजित हो गये हैं। काश! आज कुँवर रायमल यहाँ होता।" कहते-कहने महाराणा जाने किस विचारों में खो गये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"कुंवर उदयकण के व्यवहार ने तो हमें एकदम निराश कर दिया है···कैसे होगी देश के भविष्य की रक्षा !" राणा फिर बोले।

"आज्ञा हो तो कुँवर रायमल जी को यहाँ लाने का प्रयत्न किया जाए, महाराणा !" रेनापति ने कहा।

"वह कभी नही आयेगा, सेनापति !" राणा ने निराशा से कहा। फिर बोले—"वह कहता है, मैं अपने पाप का प्रायश्चित कर रहा हूँ। मैंने देश की मातृ-शक्ति के प्रति बुरी नीयत रखने का जो कुकर्म किया है, उसका प्रायश्चित्त इस जीवन में नहीं हो सकता। इसी कारण ईडर राज्य में वह संन्यासियों जैसा जीवन व्यतीत कर रहा है। काश ! ऊदा (उदयकर्ण) भी उसी के समान प्रायश्चित्त कर सकता।"

"महाराणा !" एक सामन्त ने कहा—"सिर पर कर्त्तव्य का बोझ आ पड़ने से राजकुमार उदयकर्ण स्वयमेव राह पर आ जायेंगे। आप जल्दी से अच्छे हो जायें, फिर उन्हें सब प्रकार से समझाने का प्रयत्न किया जाएगा।"

"आपका विचार ही ठीक निकले !" महाराणा ने एक लम्बी आह भरते हुए कहा।

"पिताश्री !" तभी कुँवर उदयकर्ण ने प्रवेश करते हुए कहा—"मुझे क्षमा कर दें, पिताश्री !" वह उनके चरणों पर लोट-पोट होने लगा—"ओह ! मेरे ही कारण आपकी यह दशा हो गई है। मैं कितना नाच हूँ ! पापी हूँ ! मुझे क्षमा कर दीजिये, पिताश्री !"

"ऊदा ! ऊदा, मेरे बेटे ! मेरे बेटे !" राणा की आँखें भर आईं, "यदि सचमुच तुम सच्चे मन से यह सब कह रहे हो, तो मैं एक ही दिन में अच्छा हो जाऊँगा। मेरे सारे रोग कट जायेंगे। आओ ! आओ, मेरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बेटे !" एकाएक महाराणा उठ खड़ हुए और उन्होंने राजकुमार उदय-कर्ण को सीने से लगा लिया।

"ओह पिताश्री ! आप बैठे रहिये। आराम से लेटे रहिये ! अब आपको मैं कभी भी शिकायत का अवसर नहीं दूँगा।" और उदयकर्ण ने उन्हें आराम से लिटा दिया। फिर वह वहाँ उपस्थित सामन्तों और सरदारों की तरफ देखते हुए बोला—"आप सब लोग भी मुझे क्षमा कर दें। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में आप लोगों को किसी भी प्रकार की शिकायत का अवसर न मिलेगा !"

"इससे, बड़ा देश का सौभाग्य क्या हो सकता है; कुँवर जी !" महामन्त्री ने प्रसन्न होते हुए कहा।

"हमें कुँवर जी से ऐसी ही आशा थी !" सेनापति ने कहा।

"आज तो गाने को जी चाहता है, मेरा ! ओह ! मेरा बेटा ऊदा आज लौट आया है।" महाराणा ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा—"महामन्त्री, मेरी वीणा तो लाना जरा !"

महामन्त्री से पहले ऊदा उठा, वीणा ले आया, उसे महाराणा के हाथों में थमाता हुआ बोला :

"पिताश्री ! कोई ऐसा राग छेड़िये, जिससे मन के सारे मैल धुल जायें !"

राणा गाव-तकिये का सहारा लेकर बैठ गये। उनके चेहरे पर मुस्कान थी। उन्होंने वीणा के तार साधे और रागिनी के स्वरों का सन्धान करते हुए बोले :

"यह रागिनी संगीत विद्या का एक अमर वरदान है ! इसके स्वरों में इतनी शक्ति है कि पापी से पापी का हृदय भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। मन का सारा मैल आँसू बनकर बह जाता है !"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घ्राँ-घ्राँ-घ्राँङ्ग !

दो-तीन बार तारों में गूंज उठी और फिर कुम्भाजी रागिनी के स्वरों में खो गये। सभी उपस्थित जन झूम उठे। राणा की आँखें छलक आई थीं। कुँवर उदयकर्ण भी झूमने का अभिनय करने लगा।

वीणा-वादन समाप्त करने के बाद महाराणा का चेहरा बिल्कुल शान्त और स्वाभाविक था।

उस स्निग्ध शान्ति में कई क्षण बीत गये।

"आप लोग अगर चाहें, तो जाकर विश्राम करें !" कुँवर उदयकर्ण ने कहा—"मैं तब तक पिताश्री की सेवा में रहूँगा, जब तक वे पूर्ण स्वस्थ नहीं हो जाते।"

सभी ने एक-दूसरे के मुख की तरफ देखा। फिर उठते हुए महामन्त्री ने कहा—

"औषधि आदि समय पर देते रहियेगा, कुँवर !"

"आप चिन्ता न करें।" कुँवर ने कहा।

महाराणा को नमस्कार कर सभी चले गये।

महाराणा काफी देर तक कुँवर उदयकर्ण से स्नेह-भरी बातें करते रहे। उसे राजनीति की ऊँच-नीच समझाते रहे। फिर उन्होंने एक खुराक औषधि भी पी और करवट बदलकर सो गये।

तीन-चार दिन बीत गये।

लगता था कि राणा अच्छे हो रहे हैं।

रात गहरी होती जा रही थी।

राणा आराम कर रहे थे। उन्होंने धीरे से पुकारा :

"ऊदा बेटे !"

"पिताश्री !" ऊदा ने झुकते हुए कहा।

"पता नहीं क्यों आज कुछ घबराहट-सी हो रही है। तुम कहीं जाना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं, बेटे !" राणा ने कहा।

"मैं यहीं हूँ, पिताश्री !" यह पास बैठकर उनके केशों में हाथ फरने लगा। फिर बोला—"आप आराम से सो जाइये।"

"हाँ बेटे !" राणा ने आँखें मूँदते हुए कहा—"अब तो आराम से सोना ही है। तुम लौट आये हो। अब मुझे किसी भी बात की चिन्ता नहीं, बेटे ! देश को सबसे अधिक—सबसे ऊपर मानना, बेटे···बेटे !" और उनकी आँख झपक गई।

ऊदा ने उठकर चारों ओर देखा।

रात और भी गहरी हो गई थी।

"शी ! श-श-श-इ-शी !" किसी का अस्पष्ट-सा स्वर सुनाई दिया।

ऊदा ने बड़ी सावधानी से उस आवाज़ की तरफ देखा। एक व्यक्ति उसे इशारे से अपनी तरफ बुला रहा था। ऊदा ने चारों ओर देखा, फिर उठकर दबे पाँव उस व्यक्ति के पास पहुँचा। उस व्यक्ति ने अपने हाथ-मुँह ढाँप रखे थे। उस व्यक्ति ने एक पुड़िया ऊदा की ओर बढ़ाते हुए कहा—

"बस, इतना ही काफी है। काम भी हो जायेगा और किसी को पता भी न लग सकेगा।"

"अब इसकी आवश्यकता नहीं रही !" ऊदा ने धीरे से, फुसफुसाते हुए कहा—"पिताश्री पर मैंने पक्का विश्वास जमा लिया है। राणा मैं ही बनूंगा।"

"फिर बहक गए, कुंवर !" वह व्यक्ति फसफुसाते हुए कहने लगा—"ईडर में राजकुमार रायमल मौजूद है। उसे राणा की बीमारी का समाचार मिल चुका है। अगर वह आ गया तो···! उसके पहले ही तुम्हें राजसिंहासन पर अधिकार जमा लेना है। लो ! देरी मत करो। आज ही दवाई में मिलाकर···!" और उस व्यक्ति ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ज़बरदस्ती वह पुड़िया ऊदा के हाथ में थमा दी। फिर जाते-जाते बोला—"याद रहे, कुँवर ! राणा बनने पर राजपुरोहित का पद…!"

यह व्यक्ति वही ब्राह्मण भाट था, जिसने भादेरिया में बच्चा और मैना को शरण दी थी। बाद में इसी के कारण महाराणा ने भाटों और चारणों को मेवाड़ से निर्वासित कर दिया था।

वह दबे पाँव चला चया।

कुँवर उदयकर्ण बुत-सा बना अपने पिता के समीप खड़ा रहा।

कहीं दूर से रात्रि के बारह बजने का गज़र बजा। राणा को दवाई देने का समय हो गया था।

ऊदा ने काँपते हाथों से दवाई घोली। एक बार अपने पिता की तरफ देखा। फिर कमर में से पुड़िया निकाली, खोली और दवाई में मिला दी।

वह पिता की ओर बढ़ा।

ऊदा ने राणा को जगाने के लिए हाथ बढ़ाया, उसका हाथ काँप गया। पर जल्दी ही उसने मन कड़ा करके राणा को हिलाते हुए कहा :

"पिताश्री ! दवाई पी लीजिए, पिताश्री !"

राणा ने करवट बदली ! स्नेह और विश्वास-भरी दृष्टि से ऊदा की तरफ देखा। थोड़ा उठते हुए दवाई की कटोरी थामी और एक ही साँस में पी गये।

फिर करवट बदलकर सो गये।

अगली सुबह फिर सारे चित्तौड़गढ़ में समाचार फैल गया, महाराणा की तबीयत फिर खराब हो गई है। सबके चेहरे पर चिन्ता की लहरें दौड़ गईं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नगर के सभी वैद्य रात-दिन राणा की परीक्षा करने लगे। पर वे समझ ही न पा रहे थे, कि आखिर रोग क्या है। फिर भी उपचार चलने लगा। पर निराशा ही हाथ आ रही थी।

एक सप्ताह और बीत गया।

महाराणा कुम्भा मौत से जूझ रहे थे। बड़ी ताकत के सामने कभी न झुकने वाला महान् योद्धा और कलाकार अपने ही बेटे की करतूत के कारण झुक रहा था, टूट रहा था!

उस दिन महाराणा कुछ होश में थे। महामन्त्री ने बड़ी नम्रता से निवेदन किया:

"एक विदेशी चिकित्सक आजकल राजधानी में आया हुआ है, महाराणा! वह सारे देश की यात्रा कर रहा है, वह इतिहास का बड़ा विद्वान् है। इस देश का इतिहास भी लिख रहा है। उसने आपकी बीमारी का समाचार सुनकर निवेदन किया है, कि वह भी एक बार आपके स्वास्थ्य की परीक्षा कर देखे। यदि आज्ञा हो, तो उसे बुला लिया जाए!"

"अब दिखाने से क्या होगा, महामन्त्री! लगता है, जैसे कलेजे में कोई नासूर हो गया है। कुछ हर समय चुभता रहता है। जैसे भीतर का समस्त भाग टुकड़े-टुकड़े होकर गिर जाना चाहता है।" महाराणा ने निराशा से कहा।

"सुना है, इन विदेशियों की चिकित्सा-पद्धति काफी उन्नत हो चुकी है, महाराणा!" महामन्त्री ने कहा—"दिखा लेने में क्या दोष है? होना तो वही है, जो मालिक की इच्छा है!"

"हूँ!" सूनी आँखों से पास खड़े ऊदा की तरफ देखते हुए महाराणा ने पूछा—"क्या नाम है उसका?"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

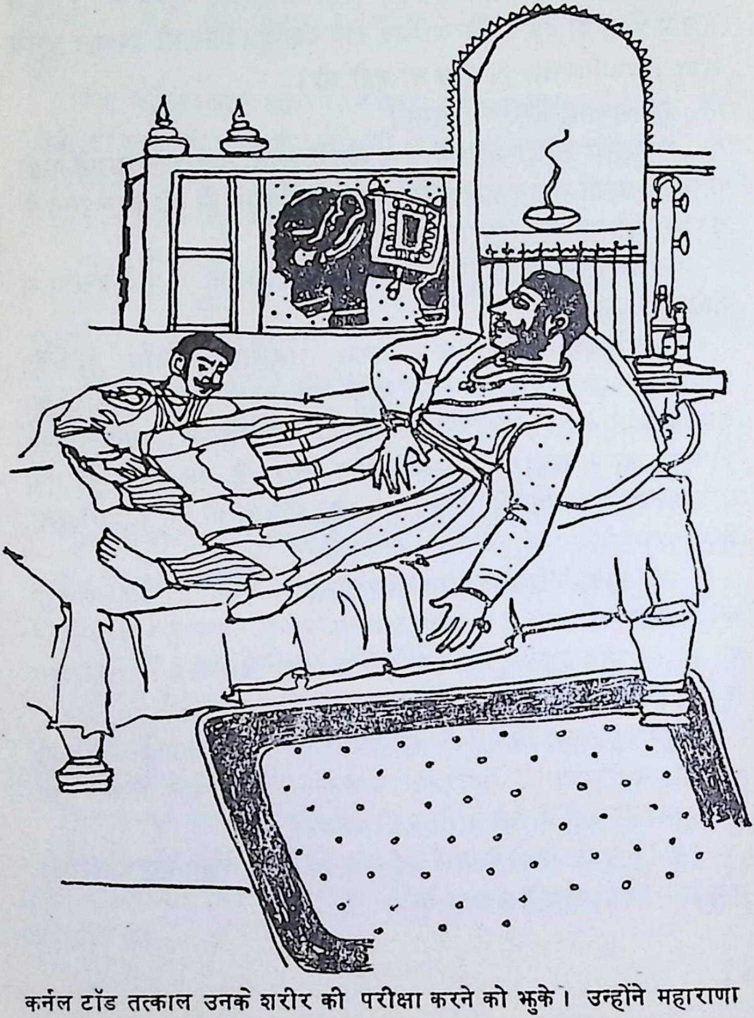

कर्नल टॉड तत्काल उनके शरीर की परीक्षा करने को झुके। उन्होंने महाराणा से कई बातें पूछी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"कनल जेम्स टॉड, महाराणा !" महामन्त्री ने कहा।

"बुला लें ! आप अपनी इच्छा पूरी कर लें।" महाराणा ने बुझते हुए स्वरों में कहा—"बाकी अब मन पूरी तरह से बुझ चुका है। आशा की अन्तिम किरण भी बुझ रही है।"

महामन्त्री तत्काल चले गये।

महाराणा निर्जीव-से पड़े छत की तरफ देखते रहे।

कोई एक घण्टे के बाद महामन्त्री ने कर्नल जेम्स टॉड के साथ प्रवेश किया।

"आइये !"

महाराणा ने अपना निर्जीव-सा हाथ उठाते हुए कहा।

कर्नल टॉड तत्काल उनके शरीर की परीक्षा करने को झुके। उन्होंने महाराणा से कई बात पूछीं। महामन्त्री और राजकुमार ऊदा से भी कुछ पूछता रहा।

"हम समझ नहीं पा रहा कि महाराणा को कौन बीमारी हो गया।" जेम्सटॉड ने कहा—"हम इनका थूक टेस्ट करेगा; तभी कुछ बता सकेगा, महामन्त्री !"

तत्काल महाराणा का थूक ले लिया गया। उसे अपने साथ लेकर जेम्स टॉड चला गया।

अगले दिन उसने महामन्त्री के पास पहुंचकर बताया :

हमें अफसोस है, महामन्त्री ! हम राणा जी को बचा न पायेगा। उन्हें धीमा विष दिया गया है।"

"क्या ?" महामन्त्री ने चौंककर कहा।

"हम ठीक कहता है, महामन्त्री जी ! कर्नल टॉड ने फिर दृढ़ता से कहा—"महाराणा को विष दिया गया है। अब वे अधिक दिन नहीं जी सकेगा !"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ओह!" महामन्त्री ने माथा थाम लिया।

कर्नल टॉड को विदा कर वे तत्काल महाराणा के पास पहुंचे। देखा, महाराणा के मुंह से झाग निकल रही थी। ऊदा वहाँ पर नहीं था।

"महाराणा!" व्याकुल महामन्त्री ने उन्हें ठीक से लिटाते हुए कहा—"कितना बड़ा विश्वासघात हुआ, महाराणा! कुंवर उदयकर्ण···!"

"हम सब समझ चुके हैं, महामन्त्री!" राणा ने हाथ के इशारे से महामन्त्री को रोकते हुए कहा—"हम सब समझ चुके हैं महामन्त्री!" उनका स्वर डूबने लगा—"ऊदा···वह राज्य का भूखा है··· उसे क्षमा······!"

और महाराणा का सिर एक तरफ लुढ़क गया।

"महाराणा!" महामन्त्री की चीख निकल गई।

मेवाड़ का वह महान् दीपक बुझ गया। वीणा और तलवार की साथ-साथ गूंजने वाली झंकार सदा के लिए सो गई।

सारे देश में शोक छा गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महान भारतीय ऐतिहासिक चरित्रों
पर आधारित

किशोर उपन्यास

आदिगुरु शंकराचार्य	श्री व्यथित हृदय
ललितादित्य	शंकर बाम
सम्राट हर्ष	शंकर बाम
सम्राट विक्रमादित्य	सुशील कुमार
दानवीर कर्ण	सुशील कुमार
पितामह भीष्म	सुशील कुमार
स्वामी विवेकानन्द	सुशील कुमार
लोकमान्य तिलक	सुशील कुमार
महावीर हनुमान	शत्रुघ्नलाल शुक्ल
बाप्पा रावल	राजेश शर्मा
महाराणा कुम्भा	राजेश शर्मा
महाराणा सांगा	राजेश शर्मा
महाराणा हमीर	राजेश शर्मा
महाराणा प्रताप	राजेश शर्मा
महारानी पद्मिनी	राजेश शर्मा
राखी की चुनौती	राजेश शर्मा
सोरों का सन्त	रामकृष्ण शर्मा

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection